राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 हरियाणा के ओलिंपियन बॉक्सर छोड़ेंगे पॉजिटिक्स...

हम रिश्ते बेहतर बनाना चाहते लेकिन... 12

वर्ष : 11 | अंक : 219 | पटना, शुक्रवार, 22 दिसंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

संक्षिप्त खबरें

सूबे में विभिन्न सड़क हादसे में 5 की मौत, दो घायल

नवादा। बिहार के नवादा जिले के रजौली थाना क्षेत्र में गुरुवार को तड़के एक अनियंत्रित स्कॉर्पियो ने सड़क किनारे एक पेड़ में टक्कर मार दी। इस घटना में बर्थडे पार्टी से लौट रहे तीन दोस्तों की मौत हो गई जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस के मुताबिक घटना सिरदला-रजौली पथ के धर्मपुर मोड़ की है। बताया जाता है कि बुधवार को कुछ दोस्त देर रात अपने एक अन्य दोस्त की बर्थडे पार्टी में रजौली गए थे। सभी स्कॉर्पियो से बर्थडे पार्टी से लौट रहे थे। इसी दौरान धर्मपुर मोड़ के पास चालक का वाहन पर से नियंत्रण हट गया और वाहन सड़क के किनारे एक पेड़ से जा टकराई। रजौली के थाना प्रभारी पवन कुमार ने बताया कि इस घटना में तीन लोगों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई जबकि दो अन्य लोग घायल हो गए। मृतकों की पहचान नरहट थाना क्षेत्र के खनवां गांव निवासी विवेक कुमार, रोशन कुमार और नरौली गांव के चंदन कुमार के रूप में की गई है। उन्होंने बताया कि घायलों को स्थानीय एक अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है। शवों को पुलिस ने अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दी है तथा मामले की छानबीन कर रही है। सारण में सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत : बिहार में सारण जिले के मांझी थाना क्षेत्र में सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गयी। पुलिस सूत्रों ने गुरूवार को यहां बताया कि ताजपुर-फुलवरिया मार्ग से मोटरसाइकिल सवार वीरेंद्र यादव और और उसका दोस्त दीपक यादव मोटरसाइकिल पर सवार होकर अपने गांव जा रहे थे।इसी दौरान अज्ञात वाहन ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी।इस घटना में दीपक यादव की मौके पर ही मौत हो गयी जबकि दुर्घटना में घायल वीरेंद्र यादव की मौत इलाज के दौरान सदर अस्पताल छपरा में हो गयी। सूत्रों ने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया है। पुलिस इस मामले में अज्ञात वाहन चालक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कर जांच कर रही है।

इंडिया गठबंधन का निलंबन के खिलाफ जंतर मंतर पर प्रदर्शन

नई दिल्ली। इंडिया गठबंधन के नेता सांसद से सांसदों की निलंबन के खिलाफ शुक्रवार को यहां जंतर मंतर पर प्रदर्शन करेंगे। कांग्रेस अध्यक्ष तथा राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खडगे ने गुरुवार को यहां विजय चौक पर विपक्षी नेताओं के साथ आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा कि धरना प्रदर्शन जंतर मंतर के साथ ही देश की विभिन्न हिस्सों में भी किया जाएगा। उन्होंने मोदी सरकार पर लोकतंत्र को ढस्थ करने का आरोप लगाया और कहा कि भाजपा नहीं चाहती है कि देश में बहुदलीय लोकतंत्र हो। विपक्ष की सदस्यों को सही मांग को लेकर आवाज उठाने के आरोप में संसद संसद से निलंबित किया जा रहा है। उन्होंने कहा मोदी सरकार ये नहीं चाहती कि सदन चले। लोकतंत्र में सवाल करना हमारा हक है। हम सवाल उठा रहे हैं कि संसद सुरक्षा में जो चूक हुई, उस पर प्रधानमंत्री और गृह मंत्री बयान दें।

लोकसभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित, सत्र में 18 विधेयक पारित

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा के शीतकालीन सत्र की कार्यवाही गुरुवार को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सत्र का समापन करते हुए कहा कि चार दिसंबर को शुरू हुए सत्र के दौरान उत्पादकता 74 प्रतिशत रही। इस दौरान 14 बैठकें हुईं जो लगभग 61 घंटे 50 मिनट तक चली। इस सत्र में 12 सरकारी विधेयक पुरस्थापित हुए और 18 विधेयक पारित किये गये। उन्होंने कहा कि इस दौरान भारतीय न्याय (द्वितीय) संहिता, 2023, भारतीय नागरिक सुरक्षा (द्वितीय) संहिता, 2023, भारतीय साक्ष्य (द्वितीय) विधेयक, 2023, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023, और दूरसंचार विधेयक, 2023 जैसे महत्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए। श्री बिरला ने कहा कि वर्ष 2023-24 के लिए अनुदानों की पूरक मांगों को तथा वर्ष 2020-21 के लिए अतिरिक्त अनुदानों की मांगों को मतदान के उपरांत पारित किया गया। श्री बिरला ने बताया कि सत्र के दौरान 55 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए और नियम 377 के अधीन कुल 265 मामले उठाए गए। सत्र के दौरान अविलंबनीय लोक महत्व के 182 मामले उठाए गए। अध्यक्ष ने बताया कि लोकसभा की विभागों से संबंधित स्थायी समितियों ने 35 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। निर्देश 73क के अधीन 33 वक्तव्य दिए गए और संसदीय कार्य के संबंध में संसदीय कार्य मंत्री द्वारा दिए गए तीन वक्तव्यों सहित कुल 34 वक्तव्य दिए गए। श्री बिरला ने यह भी बताया कि सत्र के दौरान कुल 1930 दस्तावेज सभा के पटल पर रखे गए।

प्रेस और पत्रिका रजिस्ट्रीकरण विधेयक लोकसभा में पारित

नई दिल्ली। लोकसभा ने अखबार, पत्रिका आदि निकालने वाले लोगों के लिए पंजीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाने वाले प्रेस और नियतकालिक पत्रिका रजिस्ट्रीकरण विधेयक 2023 को गुरुवार को ध्वनिमत से पारित कर दिया। इस विधेयक को राज्यसभा मानसून सत्र में ही पारित कर चुकी है। सूचना और प्रसारण मंत्री अनुराग सिंह ने प्रेस और नियतकालिक पत्रिका रजिस्ट्रीकरण विधेयक 2023 पर चर्चा का जवाब देते हुए कहा कि पंजीकरण के लिए लोगों को बार-बार चक्कर लगाने पड़ते थे और जिला अधिकारी की अनुमति का इंतजार करना पड़ता था लेकिन अब इसे आसान बना दिया गया है और जो बेवजह की बाधाएं इसमें थीं उन सभी कानूनों को हटा दिया गया है। अब ऑनलाइन घोषणा पत्र के माध्यम से अखबार निकालने के इच्छुक लोग आरएनआई का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद् मोदी के नेतृत्व में पिछले 10 वर्षों में पुराने संसद भवन हो या नया संसद भवन हो इनमें गुलामी की मानसिकता से बाहर निकल कर नए भारत के लिए नए कानून बनाने का जो शानदार काम हुआ है, इसके लिए वह प्रधानमंत्री को धन्यवाद देना चाहते हैं। अगर किसी पत्रिका या पत्र को दो साल तक नहीं चलाया जाता है तो उसे इसे कैंसिल किया जा सकता है। इसी तरह से यदि एक ही नाम से दो राज्यों में समाचार पत्र चल रहे हैं तो उनको एक ही जगह चलाने का आनएनआई आदेश दे सकता है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि राज्य सरकारों को भी पत्रकारों की मदद करनी चाहिए। कोविड के समय पीड़ित परिजनों को पांच लाख रुपए की मदद दी गई थी। सरकार ने नई व्यवस्था में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन को सालाना विवरण अपने घर से ही ऑन लाइन कराने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

मुख्यमंत्री ने तीन दिवसीय बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो 2023 का किया उद्घाटन

किसानों को उन्नत नस्ल के पशुधन के बारे में जागरूकता व प्रोत्साहन मिलेगा

- एक्सपो में कई राज्यों के किसान उन्नत नस्ल के दुधारू मवेशियों के साथ ले रहे भाग
- सर्वाधिक दूध देने वाले गायों को किया जाएगा पुरस्कृत
- उन्नत पशुधन के बारे में किसानों को दी जाएगी जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार को तीन दिवसीय बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो-2023 का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत उद्घाटन किया। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय पटना के खेल मैदान में तीन दिनों तक चलने वाले बिहार डेयरी एंड कैटल एक्स्पो 2023 का आयोजन पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, कॉम्फेड तथा बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। इस एक्सपो में बिहार के विभिन्न जिलों से प्रगतिशील किसान अपने उन्नत नस्ल के पशुओं के साथ इसमें भाग ले रहे हैं जिससे अन्य किसानों को उन्नत नस्ल के पशुधन के बारे में जागरूकता व प्रोत्साहन मिलेगा। देशी एवं विदेशी, संकर नस्ल की गायों के लिए दुधारू गायों की प्रतियोगिता आयोजित की गई है जिसमें सर्वाधिक दूध देने वाले गायों को पुरस्कृत किया जाएगा। इस एक्सपो में किसानों को गुणवत्तापूर्ण पशु आहार बनाने के विषय में जानकारी दी जाएगी। इसके अलावा देश में पशुधन की उचित देखभाल, फार्म प्रबंधन, उत्पाद निर्माण, पशु स्वास्थ्य एवं प्रजनन इत्यादि से संबंधित उपकरणों, दवाओं तथा अन्य सेवाओं की प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया है। इसमें लगभग 50 कंपनियों भाग ले रहीहै। किसान संगोष्ठी के माध्यम से प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, सरकारी उपक्रमों तथा इंडियन कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च एवं कॉम्फेड के विशेषज्ञों द्वारा पशुपालन में नई तकनीकों, संसाधनों व योजनाओं के बारे में वैज्ञानिक या अधिकरियों द्वारा किसानों को जानकारी दी जायेगी। बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के चिकित्सक एक्स्पो में पशुओं के स्वास्थ्य की जांच का कार्य करेंगे जिसमें पशुपालक अपने पशुओं के रक्त या पेशाब व मल के नमूनों की जांच कराकर उचित उपचार व सलाह प्राप्त कर सकेंगे। इस एक्सपो में पानीपत, हरियाणा से जाने माने मुर्रा नस्ल के भैंसा गोलू-2 को लाया गया है जो सभी के लिए आकर्षण का केंद्र है। इस भैंसे का सीमन (फॉर आर्टिफीसियल इन्सेमीनेशन) हर साल 15 लाख में बिकता है। पानीपत के पशु मेले में इसकी कीमत 10 करोड. रुपये लगाई गई थी। इस भैंसे के मालिक किसान पद्मश्री नरेंद्र सिंह हैं। ये किसान इस मेले में उन्नत पशुधन के बारे में जानकारी देकर बिहार के किसानों को प्रेरित करेंगे।

ये रहें मौजूद : इस अवसर पर पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के मंत्री मो आफाक आलम, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्य सचिव आमिर सुबहानी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ एस सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ रामेश्वर सिंह, कॉम्फेड बिहार के प्रबंध निदेशक प्रभाकर, जिलाधिकारी चंद्रशेखर सिंह, वरीय पुलिस अधीक्षक राजीव मिश्रा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति, वरीय अधिकारी, पशु विशेषज्ञ एवं बड़ी संख्या में किसान-पशुपालक उपस्थित थे।

कार्यक्रम की खास बातें : मुख्यमंत्री ने बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो-2023 का भ्रमण किया। तीन दिनों तक चलने वाले बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो-2023 में कई राज्यों एवं बिहार के विभिन्न जिलों से लाये गये उन्नत नस्ल के दुधारू मवेशियों, सांढ़ों के विषय में मुख्यमंत्री को जानकारी दी गयी। इस दौरान बिहार डेयरी एंड कैटल एक्सपो के प्रांगण में लगाई गयी प्रदर्शनी का फीता काटकर मुख्यमंत्री ने शुभारंभ कर मुआयना किया। साथ ही मुख्यमंत्री ने बिहार एनिमल साइंसेज यूनिवर्सिटी, पटना कैम्पस के प्रस्तावित प्रारूप का अवलोकन किया। कार्यक्रम में पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के प्रधान सचिव डॉ एन विजय लक्ष्मी ने मुख्यमंत्री को पुष्प गुच्छ एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री ने कॉम्फेड पटना के पांच डेयरी संयंत्रों का किया शुभारंभ

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने रिमोट के माध्यम से शिलापट्ट का अनावरण कर 239.96 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित कॉम्फेड पटना के पांच डेयरी संयंत्रों, 172.76 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित कॉम्फेड पटना के अन्य उपस्करों का उद्घाटन तथा पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, किशनगंज का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने कॉम्फेड पटना के पांच नए उत्पादों मिठाईयां, नमकीन, कुकीज, ब्रेड एवं पेयजल (सुधा सलिल) का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार एवं दुग्ध संघों को 10.50 करोड रुपये के लाभांश वितरण से संबंधित चेक प्रदान किया जिसमें राज्य सरकार को 5.76 करोड़ रुपये एवं दुग्ध संघ को 4.74 करोड़ रुपये वितरित किये जायेगे। बिहार वेटनरी कॉलेज, पटना के निकट स्थित परिसर में 14.31 करोड़ रुपये की लागत से कॉम्फेड के कार्यालय परिसर में निर्मित होने वाले नए कार्यालय भवन एवं मत्स्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र, मीठापुर, पटना में 54.35 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले मत्स्य विकास भवन का शिलान्यास किया। कॉम्फेड के कार्यालय परिसर में 3.57 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित होनेवाली सुधा के कैफेटेरिया का शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना का पशु पोषण ऐप लॉच किया।

सेना के वाहन पर आतंकी हमला, तीन जवान शहीद

जम्मू। जम्मू संभाग के जिला पुंछ में गुरुवार दोपहर आतंकियों द्वारा घात लगाकर सैन्य वाहन पर हमला करने की खबर है। बताया जा रहा है कि जिले के दोनाड़ क्षेत्र में थानामंडी-बफलियाल सड़क पर अपने गंतव्य की ओर जा रहे सैन्य वाहन पर आतंकियों अचानक हमला बोल दिया। सूत्रों के अनुसार, इस हमले में तीन जवानों का बलिदान हो गया है और तीन अन्य घायल हैं। जवानों ने तुरंत स्थिति को भांपते हुए मोर्चा संभाल लिया। हमले की सूचना पुलिस और सेना के अधिकारियों को भी दी गई। घटनास्थल पर अतिरिक्त बल पहुंच गया है। आसपास के इलाके को घेर लिया गया है। सूत्रों की मानें तो आतंकियों ने पहले ग्रेनेड फेंका और फिर गोलीबारी शुरू कर दी। जवानों ने भी आतंकियों को उनके हमले का जवाब दिया। एक महीने से भी कम समय में इस क्षेत्र में सेना पर यह दूसरा आतंकी हमला है। इससे पहले 22 नवंबर को राजौरी में हुए एनकाउंटर में 5 जवान शहीद हुए थे। सूत्रों के मुताबिक, यह हमला थानामंडी-सुरनकोट रोड पर डेरा की गली (डीकेजी) नाम के इलाके में हुआ है। यह वाहन जवानों को लेकर सुरनकोट और बफलियाज जा रहे थे, जहां बुधवार रात सुरक्षाबलों ने आतंकियों के खिलाफ घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया था। अभियान में शामिल सुरक्षाबलों से सेना का कॉन्टैक्ट आज हो पाया, जिसके बाद यहां अतिरिक्त सुरक्षाबल भेजा जा रहा था।

सीएम ने बोधगया में बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा से की मुलाकात

सीएम ने महाबोधि मंदिर में की पूजा अर्चना

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरुवार को बोधगया के तिब्बतियन मोनेस्ट्री पहुंच कर बौद्ध धर्म गुरू परम पावन दलाई लामा से मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने परम पावन दलाई लामा को पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर उनका स्वागत किया और उन्हें नमन कर उनका आशीर्वाद लिया। परम पावन दलाई लामा ने मुख्यमंत्री को दीघार्यु एवं स्वस्थ रहने का आशीर्वाद दिया और मुख्यमंत्री ने भी परम पावन दलाई लामा के स्वस्थ और सुदीर्घ जीवन की कामना की। परम पावन दलाई लामा से बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि आप जब भी यहां आते हैं तो हम आपसे मिलने आते हैं और आपका आशीर्वाद लेते हैं। सभी धर्मों के प्रति हमलोगों का सम्मान है। बौद्ध धर्म के प्रति भी हमलोगों का सम्मान है। मुख्यमंत्री ने परम पावन दलाई लामा को वैशाली में बनने वाले बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया। मुख्यमंत्री के आग्रह को परम पावन दलाई लामा ने स्वीकार किया। इसके पश्चात तिब्बतियन मोनेस्ट्री में ही मुख्यमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय संघ मंच के प्रतिनिधियों से मुलाकात की और उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया। इसके पश्चात महाबोधि मंदिर परिसर में मुख्यमंत्री ने महाबोधि महाविहार एवं बोधगया टेंपल मैनेजमेंट कमिटी कार्यालय में 180 केडब्ल्यूपी सोलर पावर प्लांट का शिलापट्ट अनावरण कर शिलान्यास किया। साथ ही महाबोधि मंदिर के उत्तर दिशा में पीतल से निर्मित भव्य द्वार का उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने महाबोधि मंदिर के आउटर बाउंड्री रेलिंग का भी शिलान्यास किया। इसके पश्चात महाबोधि मंदिर में मुख्यमंत्री ने भगवान बुद्ध की पूजा-अर्चना की और राज्य की सुख-शांति एवं समृद्धि की कामना की। मुख्यमंत्री ने बोधि वृक्ष की भी पूजा-अर्चना की।

आरएसएस प्रमुख भागवत तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचे बिहार

प्रात : किरण संवाददाता

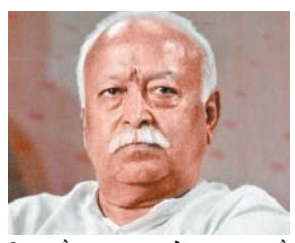

पटना। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत बिहार के तीन दिवसीय दौरे पर बृहस्पतिवार को पटना पहुंचे। पटना स्थित जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पहुंचे सर संघचालक भागलपुर के लिए रवाना हो गए। वह 22 दिसंबर को भागलपुर के कुप्पा घाट स्थित महर्षि मेही आश्रम में संतों से संवाद करेंगे। बाद में भागवत संत समागम को भी संबोधित करेंगे। वह 23 दिसंबर को पटना से प्रस्थान करेंगे। महर्षि मेंही आश्रम भागलपुर के बरारी इलाके में कुप्पा घाट नामक प्राचीन गुफा क्षेत्र के पास स्थित है। कुप्पाघाट में एक गुफा है जहां संतमत महर्षि मेही ने कई महीनों तक योग और ध्यान किया था। भागवत ने महर्षि मेही आश्रम का दौरा आखिरी बार इस साल फरवरी में किया था। उस समय उन्होंने वहां सद्गुरु निवास के उद्घाटन समारोह में भाग लिया था। यहां प्रत्येक वर्ष देश-विदेश से बड़ी संख्या में अनुयायी आया करते हैं। भागवत के दौरे को देखते हुए भागलपुर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किये गये हैं। भागलपुर अनुमंडल अधिकारी (सदर) धनंजय कुमार और पुलिस उपाधीक्षक अजय चौधरी ने स्थिति का जायजा लेने के लिए बुधवार को महर्षि मेही आश्रम का दौरा किया था। भागलपुर में पत्रकारों से बात करते हुए धनंजय कुमार ने कहा, ह्यह्लआरएसएस प्रमुख भागवत की भागलपुर यात्रा के दौरान सभी सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किया जाएगा। वे जिन जगहों पर जाएंगे, वहां अतिरिक्त सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए हैं। उनकी यात्रा के मद्देनजर पहले से ही कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

सम्मान केंद्रीय कृषि मंत्री अर्जुन मुंडा ने कृषि विभाग के सचिव संजय अग्रवाल को दिया पुरस्कार

बिहार फसल उत्पादन में सर्वश्रेष्ठ राज्य के पुरस्कार से सम्मानित

पुरस्कार राज्य के किसानों के अटूट समर्पण और कड़ी मेहनत का परिणाम : कृषि सचिव

- 14वीं एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड्स, 2023 के दौरान मिला पुरस्कार

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। नई दिल्ली में आयोजित प्रतिष्ठित एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड्स 2023 के अवसर पर गुरूवार को बिहार को फसल उत्पादन में सर्वश्रेष्ठ राज्य के रूप में मान्यता एवं पुरस्कार प्रदान किया गया। 14वीं एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड्स, 2023 के अवसर पर भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश और केरल के राज्यपाल न्यायमूर्ति पी सदाशिवम की अध्यक्षता में प्रतिष्ठित जूरी पैनल ने फसल उत्पादन में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए बिहार को यह पुरस्कार दिया। नई दिल्ली में समारोह के दौरान बिहार के कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री अर्जुन मुंडा से पुरस्कार प्राप्त किया। श्री अग्रवाल ने पुरस्कार के लिए जूरी तथा आयोजकों का आभार व्यक्त किया और पुरस्कार का श्रेय राज्य के किसानों को उनके अटूट समर्पण और कड़ी मेहनत के लिए दिया और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में किसानों को समृद्ध बनाने के लिए सरकार के निरंतर प्रयासों पर जोर दिया। श्री अग्रवाल ने कहा कि फसल उत्पादन में बिहार की सफलता का श्रेय एक व्यापक दृष्टिकोण को दिया जाता है जो प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और सामुदायिक सहभागिता को एकीकृत करता है। राज्य की कृषि नीतियों ने संधारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देने, बढ़ी हुई पैदावार सुनिश्चित करने और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उन्होंने राज्य सरकार के द्वारा किसानों को उन्नत कृषि तकनीक, गुणवत्तापूर्ण बीज और कुशल सिंचाई प्रणाली सहित आवश्यक सहायता प्रदान किये जाने की दिशा में उठाये गए कदमों पर जोर दिया। कृषि में उच्च और सतत विकास हासिल करने के उद्देश्य से बिहार ने इंद्रधनुष क्रांति की अवधारणा पेश की है। राज्य ने कृषि रोडमैप के माध्यम से वर्ष 2008 से बहुक्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाया है जिससे कृषि तथा संबद्ध क्षेत्र पर विविध सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं।

ज्ञातव्य हो कि 1.62 लाख करोड़ रुपये के चौथे कृषि रोड मैप (2023-28) का शुभारंभ भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा हाल में ही किया गया, जो कृषि क्षेत्र के समग्र, व्यापक और बहुक्षेत्रीय विकास के लिए बिहार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड्स, एग्रीकल्चर टुडे ग्रुप द्वारा स्थापित एक प्रतिष्ठित मंच, कृषि क्षेत्र में उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में कार्य करता है, जो देश भर के प्रमुख हितधारकों, नीति निमाताओं और उद्योग के नेताओं को एक साथ लाता है।

कांग्रेस कार्य समिति की बैठक : खरगे ने भारत जोड़ो यात्रा के दूसरे चरण का रखा प्रस्ताव

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पार्टी की शीर्ष नीति निर्धारण इकाई कार्य समिति की बैठक में बृहस्पतिवार को अगले लोकसभा चुनाव के लिए ठोस रणनीति बनाने पर जोर दिया और यह प्रस्ताव रखा कि राहुल गांधी पूर्व से पश्चिम की ओर दूसरे चरण की भारत जोड़ो यात्रा निकालें, क्योंकि पार्टी के नेता एवं कार्यकर्ता लंबे समय से यह मांग कर रहे हैं।

खरगे की अध्यक्षता में हुई बैठक में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और कार्य समिति के विभिन्न सदस्यों ने शिरकत की। बैठक में दिए गए अपने संबोधन में कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, पिछले कई महीनों से पार्टी के सभी नेता और कार्यकर्ता एक स्वर में लगातार एक मांग मेरे सामने रखते रहे हैं कि राहुल गांधी जी पूर्व से पश्चिम की ओर भारत जोड़ो यात्रा निकालें। मैं कार्यसमिति में राहुल जी के समक्ष यह बात रखता हूं और निर्णय आप सभी पर छोड़ता हूं। खरगे ने कार्य समिति की बैठक में कहा, उन सवालों को हमें नहीं भूलना है, जिन पर आगे की राजनीति प्रभावित होगी। जातिगत जनगणना और महिला आरक्षण अहम मुद्दा रहेगा। हम चाहते हैं कि महिला आरक्षण तत्काल लागू हो और महिलाओं को आरक्षण के दायरे में लाया जाए। उन्होंने कहा, हमें आगामी लोकसभा चुनाव के लिए कुछ ठोस रणनीति बनानी होगी। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर ठोस रणनीति बनानी होगी तथा समान विचारधारा वाले दलों के साथ मिलकर ज्यादा से ज्यादा सीटें जीतनी होंगी। खरगे ने राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ की नकल उतारे जाने के विवाद तथा विपक्षी सांसदों के निलंबन का हवाला देते हुए बृहस्पतिवार को आरोप लगाया।

संक्षिप्त खबरें

एक साल में बन जाएगा ब्लड बैंक का भवन : नंदकिशोर

पटना सिटी (प्राकि)। मंगल तालाब स्थित मातृ शिशु कल्याण केन्द्र में खुलने वाले ब्लड बैंक के निर्माण कार्य को लेकर भवन का निर्माण होना है। इसके लेआउट को पूर्व मंत्री सह विधायक नंदकिशोर यादव ने देखा। इस दौरान योजना एवं विकास विभाग पटना-1 के सहायक अभियंता अर्पिता कुमारी और कनीय अभियंता पप्पू कुमार को आवश्यक दिशा-निदेश दिया। एक साल में यह भवन बन कर तैयार हो जाएगा। इस अवसर पर रेडक्रॉस सोसायटी पटना सिटी शाखा के चेयरमैन गोविन्द कानोडिया, वाइस चेयरमैन रमेश कुमार अंबष्ठ, नरेश सुल्तानिया, प्रभात कुमार वर्मा, अमित कानोडिया, जावेद अख्तर आदि उपस्थित थे।

आज राज्यपाल करेंगे सिलाई मशीन का वितरण

पटना सिटी (प्राकि)। मालसलामी स्थित श्री बिहारी जी मिल्स प्रालि परिसर में स्वचालित सिलाई मशीन का शुक्रवार को वितरित किया जाएगा। यह वितरण स्वरोजगार प्रोत्साहन योजना के तहत किया जाएगा। इस दौरान राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर मुख्य रूप से भाग लेंगे। उनके अलावा विशिष्ट अतिथि के तौर पर उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ एवं पूर्व मंत्री सह विधायक नंदकिशोर यादव की भी उपस्थिति होगी।

अगमकुआं पुल के नीचे अज्ञात युवक का शव बरामद

पटना सिटी (प्राकि)। अगमकुआं आरओबी के पश्चिमी फ्लैंक के दक्षिण रेल ट्रैक के पास युवक का शव पाया गया। सूचना मिलने के बाद पहले गुलजारबाग स्टेशन के जीआरपी प्रभारी के साथ रेल डीएसपी सुशांत कुमार चंचल पहुंचे और मामले की छानबीन की। मामला अगमकुआं थाना क्षेत्र का होने के कारण उस थाना के थानाध्यक्ष को सूचित किया गया। इसके बाद दारोगा रामायण पासवान पहुंचे और शव को देखा। शव को पोस्टमार्टम के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज भेजा गया। थानाध्यक्ष सुधीर कुमार ने बताया कि ट्रेन से गिरने या फिर ट्रेन की चपेट में आने से मौत हुई होगी। हालांकि इसकी संभावना रेल डीएसपी ने नहीं जताई। चेहरे पर खून का निशान और खरोच भी देखा गया।

चित्रगुप्त मंदिर परिसर में भागवत कथा

पटना सिटी (प्राकि)। श्रीमद् भागवत भक्ति कथा ज्ञान यज्ञ का अनुष्ठान वैदिक पूजन के साथ शुरू हुआ। दीवान मुहल्ला नौजर घाट स्थित आदि श्री चित्रगुप्त मंदिर परिसर में गंगोत्री धाम से आए कथावाचक ओम प्रकाश शास्त्री ने कथा कही। संयोजक प्रवीण प्रीतम और नवीन निश्चल ने बताया कि 27 दिसंबर तक कथा का दौर चलेगा। इस दौरान भजन संध्या का आयोजन भी किया गया है। कथा की पूणार्हुति पर हवन और भंडारा होगा। आयोजन को ले श्याम बाबू, शांति देवी, चंद्रावती देवी, गणेश कुमार आदि सक्रिय हैं।

टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता में श्रुति ने जीता स्वर्ण

दानापुर खगौल। नगर के गुरूवार को टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को सम्मानित किया गया। इन छात्रों को प्राचार्य ज्ञानेश्वर ने मेडल एवं प्रसस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस मौके पर प्राचार्य ने बताया कि विगत 18 अगस्त को टाटा समूह के द्वारा टाटा बिल्डिंग इंडिया स्कूल निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें रेलवे स्कूल के 50 छात्रों ने अपनी भागीदारी निभाते हुए सिनियर ग्रुप में श्रुति कुमारी ने स्वर्ण, दीपा कुमारी ने रजत व समृद्धी कुमारी कांस्य पदक अपने नाम किया वहीं जुनियर ग्रुप में दिपान्शु ने स्वर्ण, मनीष ने रजत व आयुषी चौहान ने कांस्य पदक अपने नाम किया। उन्होने बताया कि ऐसे निबंध प्रतियोगिता के आयोजन से छात्रों को लिखित रूप में अपनी अभिव्यक्ति दिखाने व प्रोत्साहित करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करती है।

फलदान में शरीक होने आया व्यक्ति का ऑटो हुआ चोरी

फतुहा। गुरुवार को फतुहा थाना क्षेत्र के रानीपुर गांव से एक ऑटो चोरी हो जाने का मामला प्रकाश में आया है। इस सन्दर्भ में नगरनौसा के कुरवा पर गांव निवासी चंदु पासवान चालक सह मालिक ने थाने में लिखित शिकायत दर्ज करायी है। बताया जाता है कि तीन दिन पहले वह अपने रिश्तेदार के घर एक फलदान प्रकिया में शरीक होने आया था। अपनी टेम्पो रानीपुर मंदिर के प्रांगण में खड़ी कर दी थी। अगले सुबह जब वह मंदिर प्रांगण में पहुंचा तो उसकी ऑटो वहां से गायब थी। काफी खोजबीन करने के बाद गुरुवार को पीड़ित ने थाने में लिखित शिकायत दर्ज करायी है।

महिला स्वास्थ्य पर 23 और 24 को होगा 'पाटलिपुत्र एंडोगिन सम्मेलन' में स्त्री रोग विशेषज्ञों की महाजुटान

देशभर से आये पटना में डॉक्टर करेंगे चिकित्सा पद्धति के नवीन तकनीक पर चर्चा: डॉ. अनिता सिंह

● एंडोस्कोपिक सर्जरी की जटिलताओं के बारे में जानने का मिलेगा एक अनूठा अवसर: डॉ. मुक्ता अग्रवाल

पटना। इंडियन एसोसिएशन ऑफ गायनोकोलॉजिकल एंडोस्कोपी का बिहार चैप्टर के तहत आगामी 23-24 दिसंबर, को "पाटलिपुत्र एंडोगिन सम्मेलन" का आयोजन पटना में किया जा रहा है, जिसमें नवीन चिकित्सा पद्धतियों के माध्यम से भारत में महिलाओं की स्वास्थ्य देखभाल और स्त्री रोग संबंधी एंडोस्कोपी विषय पर देश भर से आये स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सक चर्चा करेंगे. उक्त जानकारी आज एक संवाददाता सम्मेलन में कार्यक्रम के ऑर्गनाइजिंग कमेटी की अध्यक्ष डॉ अनिता सिंह और सचिव डॉ मुक्ता अग्रवाल ने संयुक्त रूप से दी।

उन्होंने बताया कि "पाटलिपुत्र एंडोगिन सम्मेलन" की शुरूआत 23 दिसंबर को IAGE के बिहार चैप्टर द्वारा, पटना ऑब्स एंड गायनी, सोसाइटी के साथ साझेदारी में पटना एम्स में शिक्षा, सहयोग और नवाचार को लेकर एक कार्यशाला के साथ होगी।

इसके आगे का कार्यक्रम पटना के होटल मौर्या में आयोजित होगा. उन्होंने कहा कि 24 दिसंबर को इस कार्यक्रम में तीन मुख्य भाषण और एक उद्घाटन भाषण होगा, जो कार्यक्रम को विविध दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि से अतिमहत्वपूर्ण है. उन्होंने बताया कि इस सम्मेलन में पूरे बिहार और झारखंड से 250 से अधिक स्त्री रोग विशेषज्ञ ले रहे हैं, जिसमें सर्जिकल कौशल के लिए प्रसिद्ध राष्ट्रीय संकायों से एंडोस्कोपिक सर्जरी की जटिलताओं के बारे में जानने का एक अनूठा अवसर मिलेगा।

स्त्री रोग संबंधी एंडोस्कोपी : महिलाओं के स्वास्थ्य में एक क्रांति - स्त्री रोग संबंधी एंडोस्कोपी, जिसे आमतौर पर कीहोल सर्जरी के रूप में जाना जाता है, चिकित्सा प्रौद्योगिकी में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करती है. लैप्रोस्कोपिक हिस्टेरेक्टॉमी और मायोमेक्टॉमी जैसी प्रक्रियाओं में केवल न्यूनतम चीरे की आवश्यकता होती है, जो उन्हें पारंपरिक सर्जिकल तरीकों की तुलना में कम आक्रामक बनाती है. यह दृष्टिकोण न केवल विभिन्न स्त्रीरोग संबंधी मुद्दों का समाधान करता है बल्कि बांझपन के प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. इन प्रक्रियाओं के लाभों में तेजी से ठीक होने का समय, दर्द कम होना और जटिलताओं का जोखिम कम होना शामिल है, जिससे रोगी के समग्र अनुभव में उल्लेखनीय सुधार होता है।

डॉ. अनिता सिंह आयोजन अध्यक्ष के रूप में सम्मेलन का नेतृत्व करेंगी, डॉ. मुक्ता अग्रवाल आयोजन सचिव और डॉ. विनीता सिंह कार्यक्रम की साईनटिफिक वैज्ञानिक अध्यक्ष हैं. संवाददाता सम्मलेन में डॉ. अनिता सिंह (आयोजन अध्यक्ष), डॉ. मीना सामंत (आयोजन अध्यक्ष), डॉ. मुक्ता अग्रवाल (आयोजन सचिव), डॉ. अमिता सिन्हा (सचिव, पीओजीएस), डॉ. सुप्रिया जयसवाल (संयुक्त आयोजन सचिव), डॉ. विनीता सिंह (वैज्ञानिक अध्यक्ष), डॉ. हेमाली एच. सिन्हा, डॉ. पूनम लाल, डॉ. अमिता सिन्हा, डॉ. पुनम दीक्षित, डॉ. प्रज्ञा मिश्रा चौधरी, डॉ. मिनी आनंद, डॉ. ज्योति दास, डॉ. पल्लवी रॉय रहीं।

रंगदारी नहीं देने पर बालू-गिट्टी कारोबारी की गोली मार हत्या

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। आलमगंज थाना क्षेत्र के कत्थक तल मुहल्ला में गुरुवार की सुबह भतीजा को स्कूल पहुंचा बाइक से लौट रहे युवक भक्त प्रह्लाद को अपराधियों ने गोली मार मौत कई नींद सुला दिया। घटना को उस समय अंजाम दिया गया, जब वो बच्चों को स्कूल पहुंचा कर घर वापस लौट रहा था। इसी दौरान कत्थकतल के पास चाय दुकान के समीप वह रुका। इस दौरान मोटरसाइकिल पर सवार होकर आए दो अपराधियों नजदीक से सिर में सटा कर गोली मार दिया। इससे खून से लथपथ होकर प्रह्लाद सड़क पर गिर गया। अपराधी हथियार लहराते भाग निकला। स्थानीय लोग और भाई सूरज कुमार उर्फ रोहित पीछे से आ रहा था। सभी मिल कर उसे इलाज के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल के इमरजेंसी में ले गए। यहां चिकित्सकों ने जांचोपरांत मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलते मौके पर एएसपी सरथ आरएस और थानाध्यक्ष अभिजीत कुमार समेत अन्य पुलिस पदाधिकारी एनएमसीएच पहुंचे। एएसपी ने बताया कि मामले में छानबीन की जा रही है। हत्या का कारण स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। थानाध्यक्ष ने बताया कि पुरानी अदावत में हत्या की घटना को अंजाम दिया गया है। परिजनों की ओर से अभी लिखित नहीं दिया गया है। वहीं भक्त प्रह्लाद के भाई सूरज उर्फ रोहित राज ने एनएमसीएच के टीओपी प्रभारी आरके सिंह को दिए बयान में रंगदारी मांगने जाने और नहीं देने पर घटना को अंजाम दिए जाने की बात कही जा रही है। गोली मारने वालों में रामू और त्रिलोकी का नाम बताया जा रहा है। इन दोनों के अलावा अन्य करीब आधा दर्जन लोगों को भी घटना में नामजद कराया गया है। घटनास्थल के आसपास में सीसीटीवी को खंगाला जा रहा है। चिकित्सकों की ओर से मृत घोषित किए जाने के बाद पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिए नालंदा मेडिकल कॉलेज भेजा। पोस्टमार्टम के बाद शव के घर आने के बाद आक्रोशित परिजनों ने त्रिपोलिया मोड़ के पास अशोक राजपथ को जाम कर दिया। सड़क पर आगजनी किया गया। उन सबों की मांग थी कि परिवार को इंसाफ दिलाया जाए और हत्यारों को गिरफ्तार कर स्पीडी ट्रायल चला दोषियों को सजा दिलाई जाए। पुलिस पदाधिकारियों ने लोगों को समझा-बुझा कर सड़क जाम हटवाने का काम किया। मृतक के भाई अजय कुमार चौहान और छोटा भाई सूरज कुमार उर्फ रोहित ने कहा कि भाई से रंगदारी मांगता था। नहीं देने और विरोध करने पर मारपीट करता था। इसी विवाद में घटना को अंजाम दिया गया है। पिता बैजनाथ प्रसाद ने बताया कि तीन भाई में बड़ा बेटा अजय के बाद मंझला प्रह्लाद था। इसके बाद छोटा सूरज उर्फ रोहित है। तीन बहन है। मां शकुंतला देवी और पत्नी बबीता देवी के साथ प्रह्लाद के दो छोटे बच्चे हैं। सूरज उर्फ रोहित का कहना था कि उन सबों के घर के पास ही एक पार्क है। पार्क के पास ही अवैध रूप से झोपड़ी बना हुआ है। उसी में असामाजिक तत्वों का जमावड़ा लगता है। वहीं इस घटना को अंजाम दिए जाने की साजिश रची गई।

अस्पतालों में बुखार एवं खासी से ग्रसित मरीजों की होगी माइक्रो फाइलेरिया की जांच

राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में होगा समुचित उपचार

प्रात : किरण संवाददाता

पटना- सरकार ने वर्ष 2027 तक फाइलेरिया बीमारी के उन्मूलन का लक्ष्य निर्धारित किया है। जिसको लेकर राज्य में सर्वजन दवा सेवन कार्यक्रम का संचालन आगामी 10 फरवरी से किया जायेगा। ताकि, समय पर इस गंभीर बीमारी से बिहार को मुक्त किया जा सके। स्वास्थ्य विभाग अब फाइलेरिया अभियान को और गति देने के उद्देश्य से नई रणनीति तय की है। जिसके तहत माइक्रो फाइलेरिया की जांच को और व्यापक स्तर पर किया जाना है। अब सरकारी और प्राइवेट अस्पताल में आने वाले बुखार और खांसी से ग्रसित मरीजों की भी जांच की जायेगी। साथ ही, उन्हें स्थानीय स्तर पर समुचित इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। इस बाबत सचिव स्वास्थ्य सह कार्यपालक निदेशक, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार, संजय कुमार सिंह ने राज्य के सभी सिविल सर्जन को पत्र जारी कर आवश्यक निर्देश दिए हैं।

मरीजों के खून का लिया जायेगा नमूना :

जारी पत्र में बताया गया है कि यह व्यवस्था उन सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में होगी जहां पर अंतरवासीय चिकित्सा उपलब्ध है। इन अस्पतालों में बुखार एवं खासी के कारण भर्ती होने वाले मरीजों को चिह्नित करते हुए रात 8:30 से 12 के बीच में रक्त का नमूना लिया जायेगा। जिसके बाद उसकी फाइलेरिया की जांच की जायेगी और जांच में घनात्मक पाये जाने वाले व्यक्तियों को 12 दिवसीय डीईसी दवा का सम्पूर्ण कोर्स (6 एमजी/ केजी वजन/दिन में तीन विभाजित खुराकों में) तत्काल प्रदान किया जाएगा।

संबंधित आंकड़े जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी को ससमय कराया जाये उपलब्ध: जारी पत्र में निर्देशित है कि जांच में घनात्मक पाये जाने वाले रोगियों की संख्या से संबंधित आंकड़े को जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी को ससमय उपलब्ध कराया जाए। इससे समाज में फाइलेरिया का संक्रमण एवं संचार में कमी आयेगी और भविष्य में लिम्फेडिमा और हाइड्रोसील के नए रोगी भी उत्पन्न नहीं होंगे।

भाकपा का पटना सदर प्रखंड पर प्रदर्शन व सभा

बिहार को विशेष राज्य का दर्जा, बेघरों को घर सहित 15 सूत्री मांग

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्यव्यापी आह्वान पर बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने, बेघरों को घर सहित आमजनों के हित की 15 सूत्री मांगों के साथ शुक्रवार को कुम्हरार स्थित पटना सदर प्रखंड पर पार्टी के नेतृत्व में धरना और प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन को लेकर भाकपा कार्यकर्ता विभिन्न इलाकों से झंडा-बैनर से लैस हो पटना सदर प्रखंड पर प्रदर्शन करते हुए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देना होगा, सौंदर्यीकरण के नाम पर झोपड़ी उजाडना बंद करो, बेघरों को घर देना होगा, वृद्ध, विकलांग एवं विधवा पेंशन को पांच हजार करना होगा, महंगाई पर रोक लगाओ, प्रीपेड मीटर वापस लो, बिजली दर एवं निगम टैक्स में बढ़ोतरी नहीं सहेंगे, शिक्षकों के लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमला नहीं सहेंगे आदि नारा लगाता प्रखंड कार्यालय पहुंचा।प्रदर्शनकारियों ने प्रखंड कार्यालय के मुख्य द्वार पर पहुंच बीडीओ बाहर आओ, जनता की मांगों को पूर्ण करो जैसे नारे लगाने लगे। बीडीओ की अनुपस्थिति में प्रखंड कृषि पदाधिकारी प्रदर्शनकारियों को शांत करा प्रतिनिधिमंडल मिलने को आमंत्रित किया। सभा की अध्यक्षता जिला कार्यकारिणी सदस्य देवरत्न प्रसाद ने की।। राज्य सचिव मंडल के सदस्य रामलला सिंह ने कहा कि बिहार के विकास के लिए विशेष राज्य का दर्जा आवश्यक है, जो पिछले दशकों से लंबित है। जिला सचिव विश्वजीत कुमार ने कहा कि राज्य को विशेष राज्य के दर्जे की जरूरत है और बेघरों को घर की, बेकारों को काम की जरूरत है। उन्होंने शिक्षकों पर दमन व लोकतांत्रिक अधिकारों पर हमले की निंदा की। पूर्व पार्षद व वरिष्ठ नेता मोहन प्रसाद ने प्रखंड व आंचल में हो रहे भ्रष्टाचार पर रोक लगाने व राजस्व कर्मचारी को प्रतिदिन प्रखंड कार्यालय से काम करना सुनिश्चित कराने की मांग की। पटना साहिब अंचल के सचिव शंभूशरण प्रसाद ने कहा कि मांगें पूरी नहीं हुईं, तो हम घेरा डालो डेरा डालो कार्यक्रम आयोजित करेंगे। कुम्हरार अंचल सचिव हरेंद्र पासवान ने मलाही पकड़ी में उजाड़े गए गरीबों को अब तक आवास नहीं देने की निंदा की। बांकीपुर अंचल सचिव जितेंद्र कुमार ने बेघर को घर एवं सभी को पर्याप्त राशन देने की मांग की। दीघा अंचल के हरदेव ठाकुर ने फुटपाथ दुकानदारों की बदहाली पर सवाल उठाया। सभा को कर्मचारी नेता मोहम्मद कैसर, ए मन्नान, गुलाम सरवर आजाद, एटक नेता आनंद शर्मा, नगर निगम नेता मंगल पासवान, महिला नेत्री राधा देवी एवं शांति देवी ने संबोधित किया। सभा के बाद मोहन प्रसाद, शंभूशरण प्रसाद, जितेंद्र कुमार, हरेंद्र पासवान, राधा देवी, सरस्वती देवी, गुलाम सरवर आजाद का सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल प्रखंड कृषि पदाधिकारी से मिल मांगों का ज्ञापन दिया और प्रखंड विकास पदाधिकारी से वार्ता का समय निर्धारित किया।

धनखड़ के अपमान पर लालू-तेजस्वी चुप क्यों : संजीव यादव

उपराष्ट्रपति के अपमान के विरुद्ध भाजपा ने फूंका सोनिया व ममता का पुतला

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा किसान मोर्चा के पूर्व उपाध्यक्ष संजीव कुमार यादव ने कहा कि पिछड़ों के मसीहा लालू प्रसाद पिछड़े समाज से आने वाले उपराष्ट्रपति धनखड़ के अपमान पर चुप क्यों हैं? नीतीश-लालू-तेजस्वी को केवल पिछड़ों का वोट चाहिए, लेकिन इन्हें पिछड़े समाज के सम्मान की कोई चिंता नहीं। श्री यादव ने उप राष्ट्रपति सह राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ का अपमान करने की शर्मनाक घटना के विरुद्ध भारतीय जनता पार्टी के विरोध मार्च में लालू प्रसाद पर भी निशाना साधा। भाजपा की ओर से स्थानीय त्रिमूर्ति चौक पर सोनिया गांधी, राहुल गांधी, ममता बनर्जी एवं कल्याण बनर्जी का पुतला दहन किया गया। पार्टी कार्यकताओं ने पुतला दहन से पहले विरोध मार्च निकाल नारे लगाए। उप राष्ट्रपति का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान, पिछड़े, किसान का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान, संसद की मयार्दा तोड़ने वाले होश में आओ होश में आओ आदि। विरोध मार्च के दौरान संजीव कुमार यादव ने कहा कि कांग्रेस, राजद, टीएमएसी जैसे दलों का गठबंधन संविधान और लोकतंत्र बचाने की बड़ी-बड़ी बातें करता है, लेकिन ये लोग खुद संसद को ठप कर और सभापति का अपमान कर संविधान की धज्जी उड़ा रहे हैं। देश के दूसरे बड़े संवैधानिक पद पर आसीन उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का अपमान क्या केवल इसलिए किया गया कि वे किसान के पुत्र हैं और पिछड़े वर्ग से आते हैं? विरोध प्रदर्शन में क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक सतीश श्रीवास्तव राजू, सह संयोजक जेपी मेहता, चौक मंडल के महामंत्री मनोज यादव, विजय कुमार, दयानंद यादव, बलराम माथुरी, रविशंकर मेहता, जयकृष्ण चंद्रवंशी, महेंद्र अरोड़ा, अंजय शाह, नैयर इकबाल, कुंदन कुमार, विकास सिंह, आनन्द सिन्हा आदि शामिल थे।

भाजपा लखन श्याम विद्रोही मंडल के द्वारा भी आक्रोश मार्च निकाल नून की चौराहा में विवादित सांसद कल्याण बनर्जी का पुतला दहन किया एवं उक्त सांसद एवं कांग्रेस विरोधी नारा लगा कर विरोध जताया। इसका नेतृत्व मंडल अध्यक्ष संतोष विद्रोही, नित्यानंद चंद्रवंशी, सुरेश सिंह पटेल एवं संजीव मेहता ने किया। अन्य लोगों में पूर्व पार्षद धर्मेंद्र प्रसाद मुन्ना, बलराम माथुरी,आजाद मेहता, ओंकार आनंद, कमलकांत शर्मा, मनोहर जी, नैयर इकबाल, जवाहर जी, संजय चंद्रवंशी, अजय दास, शंभू दास, गोविंद रजक, अनुज सिंहा, हरिकांत झा, प्रमोद मिश्रा, अनिल सिंह, संतोष साह, दीपक कुमार, सुनील सिंह, भुट्टो यादव आदि शामिल थे।

बिहार सरस मेला के छठे दिन लगभग 96 लाख के उत्पादों एवं व्यंजनों की हुई खरीद-बिक्री

पटना।आत्मनिर्भरता के विविध रंग और स्वयं सहायता समूह से जुडी ग्रामीण महिलाओं की स्वावलंबन की झलक बिहार सरस मेला में प्रदर्शित है ' विभिन्न स्टॉल पर देश भर से आई स्वयं सहायता समूह से जुडी ग्रामीण शिल्पकार और स्वरोजगारी अपने हुनर को स्वावलंबन से जोड़कर महिला सशक्तिकरण की बानगी पेश कर रही हैं ' सरस मेला एक ऐसा मंच है जो स्वदेशी उत्पादों एवं इससे जुड़े लोगों को बाजार उपलब्ध कराने हेतु प्रोत्साहन देता है ' सरस मेला में बिहार समेत देश के विभिन्न राज्यों के स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी सदस्यों एवं स्वरोजगारियों द्वारा निर्मित उत्पाद, हस्त शिल्प एवं लोक कलाकृतियों का प्रदर्शन 'एवं बिक्री की जा रही है ' पूर्व की तरह इस बार भी सरस मेला हस्त शिल्प , लोक कलाकृति एवं संस्कृति के अनूठे संगम को प्रदर्शित कर रहा है जहाँ देश के विभिन्न राज्यों के कई रंग एक ही कैनवास पर दिख रहा है। बिहार समेत 22 राज्यों की ग्रामीण महिला उद्धमी शिरकत कर रही हैं। बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति , जीविका के तत्वाधान में बिहार सरस मेला 15 से 29 दिसंबर 2023 तक गाँधी मैदान, पटना में सुबह 10 बजे से सायं 8 बजे तक आयोजित है ' सरस मेला के माध्यम से ग्रामीण शिल्प को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। बिहार सरस मेला के छठे दिन बुधवार 20 दिसंबर को लगभग 96 लाख 5 हजार रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई है ' खरीद झबिक्री का आंकड़ा स्टॉल धारकों से लिए गए आंकड़ो पर आधारित होता है। सरस मेला में बने दो जर्मन एवं दो देशी हैंगर में हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों से आई ग्रामीण उद्यमियों के द्वारा हाथ से निर्मित उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद झबिक्री हो रही है ' विभिन्न स्टॉल पर सिल्क एवं कड़ी की साड़ियाँ, सूट, लहठी, चूड़ियां, खादी के परिधान , सीप,कास्यं, पीतल, पत्थर,घास एवं जुट आदि से बनी कलाकृतियाँ एवं उत्पाद बच्चों के पुराने खिलौने आगंतुकों को सहज ही आकर्षित कर रही हैं ' वही व्यंजनों में अचार-पापड़, अदौरी-दनौरी, सत्तू-बेसन, चुडा झचावल, गुड , तीसी के लड्डू, आवला का लड्डू , बालूशाही, खोवा की गुझिया, बार मिठाई, खाझा , टिकरी का लोग स्वाद ले रहे हैं। वही ओपन एरिया में फर्नीचर, झूले , कालीन, रग्स, सजावटी लैम्प्स, सेरामिक एवं चीनी मिटटी के कप-प्लेट, प्लांटर्स, ट्रे, ग्लास समेत किचेन से सम्बंधित उत्पाद , टेराकोटा के उत्पाद, कृत्रिम फूल समेत घर-दुकान सजावट के सामान आगंतुकों को आकर्षित कर रहे हैं। ओपन एरिया में गर्म कपड़ों के निर्माण एवं चूड़ी-लहठी के निर्माण एवं खरीद-बिक्री जारी है। जीविका दीदियों द्वारा संचालित मधुग्राम से मध एवं शिल्पग्राम उत्पादक कम्पनी के स्टॉल से बड़े पैमाने परिधानों एवं हस्तशिल्प की प्रदर्शनी एवं बिक्री हो रही है। सतत जीविकोपार्जन योजना से लाभान्वित हुई जीविका दीदियों के स्टॉल से फूल एवं सजावट के पौधे , सिक्की एवं बांस से बने उत्पाद एवं बेंत से बने फर्नीचर की भी खूब बिक्री हो रही है। 360 फोटो बूथ पर आगंतुक फिल्मी गाना पर आधारित अपने बच्चे-बच्चियों का रील भी शूट करा रहे ह। बाइस्कोप, पालना घर एवं फन जोन भी बच्चों के लिए आकर्षण के खास केंद्र बने हुए हैं । इसके साथ ही सेमिनार , सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। सेमीनार हॉल में जीविका के सामाजिक विकास विधा द्वारा गाँव-गाँव में चल रही विभिन्न योजनाओं के सफल क्रियान्वयन एवं लक्षित लोगों तक पहुँचाने हेतु कार्य योजना बने गई ' इस कार्यक्रम में सभी जिलों से आये सामाजिक विकास प्रबंधकों ने शिरकत की ' श्री नीरज कुमार सिंह, परियोजना प्रबंधक, सामाजिक विकास ने प्रबंधकों को योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर उत्प्रेरित किया ' इस अवसर पर श्री जीतेन्द्र तिवारी , युवा पेशेवर, सामाजिक विकास ने प्रबंधकों को विभिन्न योजनाओं से अवगत कराया। सामाजिक विकास विधा , जीविका द्वारा महिलाओं के प्रति लिंग हिंसा और भेद के खिलाफ लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से सरस मेला परिसर में कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किये गए ' इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रीमती स्मृति शरण, संयुक्त सचिव, ग्रामीण विकास विभाग , भारत सरकार ने दीदी की अधिकार केंद्र का शुभारंभ राज्य के कई जिलों में रिमोट के माध्यम से किया 'मुख्य मंच पर आधारित कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने जीविका दीदियों के द्वारा राज्य में किये जा रहे कार्यों की तारीफ की ' इस अवसर पर श्री प्रदीप पांडे झ अतिरिक्त मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, राज्य आजीविका मिशन,उत्तराखंड भी मंचासीन रहे।

बिहार ईस्ट ने रेड को 5 विकेट व ग्रीन ने येलो को 23 रन से हराया

अटल जयंती पर महिला क्रिकेट चैंपियनशिप का सम्राट व नंदकिशोर ने किया आगाज

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मनोज कमलिया स्टेडियम में भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ द्वारा भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जयंती पर महिला क्रिकेट चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी एवं विशिष्ट अतिथि पूर्व मंत्री एवं विधायक नंदकिशोर यादव, प्रदेश मंत्री रत्नेश कुशवाहा एवं क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक सतीश कुमार राजू ने संयुक्त रूप से स्व अटल बिहारी वाजपेयी के तैलचित्र पर माल्यार्पण कर एवं दीप प्रज्जवलित कर किया। इसके बाद खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर एवं गुब्बारा उड़ा कर किया गया। प्रदेश अध्यक्ष श्री चौधरी जी ने कहा कि विगत चार वर्षो से अटल जी की जयंती पर भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ महिला क्रिकेट चैंपियनशिप का आयोजन कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है। वे सदैव समाज के सभी वर्ग के उत्थान के लिए प्रयासरत रहते थे और अटल जी के जयंती पर इस प्रकार के आयोजन से बिहार के महिला खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ेगा और वह बिहार का नाम रौशन करेंगी। प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष सह विधायक नंदकिशोर यादव ने कहा कि अटल जी महिलाओं को समाज की मुख्य धारा में लाने एवं उन्हें उनका अधिकार दिलाने के लिए हमेशा कार्य करते थे। उनकी जयंती पर महिला क्रिकेट चैंपियनशिप के आयोजन से बिहार की महिला खिलाड़ियों को बेहतरीन प्लेटफार्म प्राप्त होगा। इससे वह अपने खेल का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पाएंगी। भाजपा क्रीड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक सतीश राजू ने कहा की प्रकोष्ठ सदैव बिहार के खिलाड़ियों के हित में कार्य करता है एवं बिहार के खिलाड़ियों के मनोबल को बढ़ाने को महापुरुषों की जयंती एवं पुण्यतिथि पर विभिन्न खेलों का आयोजन करता रहता है। उद्घाटन मैच में बिहार ईस्ट की टीम ने बिहार रेड को पांच विकेट से पराजित किया। एक अन्य मैच में बिहार ग्रीन ने बिहार येलो को 23 रनों से हराया। विजेता टीम बिहार ईस्ट के नंदिनी पंडित एवं बिहार ग्रीन के जूली को प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार दिया गया। संक्षिप्त स्कोर इस प्रकार रहा।बिहार रेड (टॉस जीतकर बल्लेबाजी का निर्णय) 20 ओवर में 123/8 सना अली 59, साना यादव 13, अतिरिक्त 38 रन, हर्षिता भारद्वाज 16/2, हर्षिता मिश्रा 27/2, सिमरन 20/1 एवं अंचल 20/1 विकेट।

बिहार ईस्ट 17.2 ओवर में 126/5, नंदिनी पंडित 45, सिमरन 20, अंचल 17 एवं सागरिका 10, काजल 16/3 एवं अंचल 20/2 विकेट।दूसरा मैच में बिहार ग्रीन ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का निर्णय लिया। बिहार ग्रीन 18 ओवर में 112/6 विकेट, ममता कुमारी 25, अनन्या 16, साक्षी 10, अतिरिक्त 33 रन। नैंसी राय 14/2, काजल 18/1, नूतन 24/1, मिताली राज 14/1 एवं आर्या सेठ 23/1 विकेट। बिहार येलो 18 ओवर में सभी विकेट खोकर 89 रन। खुशबू कुमारी 27, अनन्या रानी 16, काजल कुमारी 13 एवं अंदरी रानी 12, पूजा कुमारी 6/3,

प्रदूषण को नियंत्रित करने पर सरकार का विशेष जोर : शीला

कहा-सीएनजी एवं इलेक्ट्रिक वाहनों का किया जा रहा परिचालन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

परिवहन मंत्री शीला मंडल ने कहा कि प्रदूषण को नियंत्रित करने को लेकर राज्य सरकार लगातार प्रयासरत है। इस दिशा में कई स्तर पर काम किये जा रहे हैं। मंत्री ने कहा कि प्रदूषण के स्तर को नियंत्रित करने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जल जीवन हरियाली मिशन की शुरूआत किए। मुख्यमंत्री के इस कदम का दूसरे देशों में भी खूब सराहना हुई। इसी के तहत राज्य सरकार इलेक्ट्रिक एवं सीएनजी वाहनों के परिचालन पर जोर दे रही है। इससे पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने में व्यापक मदद मिलेगी। मंत्री गुरुवार को जनता दल यू प्रदेश कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में पत्रकारों से बातचीत करते हुए उक्त बातें कही। श्रीमती शीला मंडल ने बताया कि तय प्रक्रिया के तहत पेट्रोल पंप के अलावे निजी तौर पर भी लोग चार्जिंग पॉइंट खोल सकते हैं। बिहार कैबिनेट ने इसकी मंजूरी दी है। बिहार की कानून-व्यवस्था पर पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल पर उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार के शासनकाल में पहले मुकाबले बिहार की कानून व्यवस्था बेहतर हुई है। इससे पहले बिहार सरकार की परिवहन मंत्री ने प्रदेशभर के विभिन्न जिलों से पहुंचे आम जनों की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित निष्पादन हेतु संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए।

महिलाएं एकजुट हो जायेगी तो भाजपा का नहीं खुलेगा खाता : उमेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार प्रदेश जनता दल यू महिला प्रकोष्ठ की ओर से परिचयात्मक बैठक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि महिलाओं का अथाह आशीर्वाद और समर्थन पार्टी को हासिल है, इसलिएं विश्वास है कि कोई ताकत चाहकर भी जदयू का नुकसान नहीं कर सकता है। हमें यह बात कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि महिलाएं ही हमारी पार्टी की आधारभूत शक्ति है और इसका एकमात्र कारण है महिलाओं को सशक्त और सबल बनाने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अभूतपूर्व योगदान। नगर निकाय, पंचायती राज एवं राज्य सरकार की सरकारी नौकरियों में हमारे नेता ने प्रदेश की महिलाओं को आरक्षण दिया। श्री नीतीश कुमार के कार्यों का अनुकरण आज दूसरे प्रदेशों की सरकारें भी कर रही है। मुख्यमंत्री ने हर घर में शौचालय निर्माण कराया, हर घर तक बिजली पहुंचाया और नली गली योजनाओं के तहत हर घर को पक्की सड़क से जोड़ा। उन्होंने कहा कि भाजपा देश को पुनः गुलामी की ओर धकेलना चाहती है। अपने देश के लोकतंत्र और संविधान को बचाने के लिए देश की आधी आबादी को अग्रणी भूमिका निभाना होगा। महिलाएं एकजुट हो जायेगी तो भाजपा का खाता खुलना भी मुश्किल है। पार्टी के कोषाध्यक्ष सह विधानपार्षद ललन कुमार सर्राफ ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की यह सोच है कि एक तिहाई महिलाओं की संसदीय भागीदारी सुनिश्चित हो। श्री सर्राफ ने कहा कि मोदी सरकार के शासनकाल में महिलाओं के साथ अत्याचार हो रहा है। प्रदेश अध्यक्ष डॉ भारती मेहता ने आह्वान किया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के ड्रीम प्रोजेक्ट जल जीवन हरियाली मिशन को गति देने के लिए अपने आवासीय परिसर में वृक्ष को लगाकर नए साल की शुरूआत करें। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कार्य अतुलनीय है। अब बिहार की महिलाएं एकजुट होकर नीतीश कुमार के हाथो को मजबूत करेगी।

ये रहें मौजूद :

कार्यक्रम में मुख्य रूप से मौजूद बिहार सरकार की पूर्व मंत्री रंजू गीता, प्रदेश प्रवक्ता अंजुम आरा, महिला प्रकोष्ठ की पूर्व प्रदेश अध्यक्ष स्वेता विश्वास, पूर्व विधानपार्षद मोहतरमा रोजिना नाजिश, पूर्व विधायक रेणु पासवान, मंजू देवी, मालती सिंह, किरण रंजन, प्रदेश प्रवक्ता अनुप्रिया, संगीता यादव, ममता शर्मा, यास्मिन खान सहित प्रदेशभर की महिला पदाधिकारी मौजूद रही।

कार्यक्रम में 200 से अधिक पौधों का वितरण : बैठक में जननायक कपूर्री ठाकुर की 100 वीं जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर वृहद चर्चा हुई। साथ ही मुख्यमंत्री के जल जीवन हरियाली मिशन को गति देने के लिए महिला प्रकोष्ठ द्वारा 200 से अधिक पौधों का वितरण किया गया। 1 जनवरी को नए साल की अवसर पर महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश पदाधिकारियों एवं जिला अध्यक्षों द्वारा अपने आवासीय परिसर में पौधारोपण किया जाएगा। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में जातीय गणना एवं आरक्षण के दायरे को बढ़ाने का जो ऐतिहासिक कदम उठाया गया है उसे महिला प्रकोष्ठ के द्वारा विशेष अभियान चलाकर जन-जन तक पहुंचाया जाएगा।

विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर भाकपा ने प्रखंड मुख्यालयों पर दिया धरना

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने गुरुवार को बिहार के करीब तीन सौ प्रखण्ड मुख्यालयों पर धरना दिया। बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने, सभी भूमिहीनों को पांच डिसमिल जमीन देने, बाढ़ से निजात के लिए कोशी, कमला व बागमती पर हाईडैम निर्माण तथा केंद्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ सहित स्थानीय ज्वलंत सवालों को लेकर धरना प्रदर्शन आयोजित किया गया। धरना के माध्यम से बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने के संबंध में स्मार पत्र राष्ट्रपति को भेजा गया। पार्टी के सभी बड़े नेताओं ने राज्य के विभिन्न प्रखंड मुख्यालय पर आयोजित धरना में शामिल हुए। राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय मधुबनी जिले के माधवापुर व हरलाखी प्रखण्ड मुख्यालय पर आयोजित धरना को संबोधित किया। भाकपा राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने बयान जारी कर कहा कि धरना, प्रदर्शन में बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकताओं ने भाग लिया। उन्होंने धरना,प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए बिहार की जनता को बधाई दी है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि देश की जनता केंद्र सरकार की विनाशकारी आर्थिक नीतियों के कारण तबाह है। महंगाई आसमान छू रही है। केंद्र सरकार बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं दे रही है जबकि विशेष राज्य का दर्जा बिहार का हक है। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने ही 2020 ई में बिहार का विभाजन किया था, लेकिन तत्कालीन केंद्र सरकार ने न बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिया और न हीं विशेष पैकेज। जिस कारण विकास में बिहार लगातार पिछड़ते चला गया है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी केंद्र सरकार से बिहार को तत्काल विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग करती है।

एनआई कार्य के कारण 25 ट्रेनों का परिचालन रद्द

पटना। दक्षिण मध्य रेलवे के सिकंदराबाद मंडल में हसनपर्ती रोड एवं उप्पल स्टेशनों के बीच तीसरी लाईन के कमिशनिंग के मद्देनजर दोनों स्टेशन पर एनआई कार्य किया जाना है। इस कारण पूर्व मध्य रेल क्षेत्राधिकार से खुलने व समाप्त होने वाली 25 ट्रेनों का परिचालन रद्द किया जा रहा है। गाड़ी सं. 12521 बरौनी-एरणाकुलम एक्सप्रेस 01 एवं 08 जनवरी को, गाड़ी सं. 12522 एरणाकुलम-बरौनी एक्सप्रेस 05 एवं 12 जनवरी को, गाड़ी सं. 22353 पटना-एसएमभीवी एक्सप्रेस 04 एवं 11 जनवरी को, गाड़ी सं. 22354 एसएमभीवी-पटना एक्सप्रेस 07 एवं 14 जनवरी को, गाड़ी सं. 06509 बेंगलूरू-दानापुर स्पेशल 01 एवं 08 जनवरी को, गाड़ी सं. 06510 दानापुर-बेंगलूरू स्पेशल 03 एवं 10 जनवरी को, गाड़ी सं. 07419 सिकंदराबाद-दानापुर स्पेशल 30 दिसंबर 06 एवं 13 जनवरी को, गाड़ी सं. 07420 दानापुर-सिकंदराबाद स्पेशल 0६1, 08 एवं 15 जनवरी को, गाड़ी सं. 07007 सिकंदराबाद-रक्सौल स्पेशल 03 एवं 10 जनवरी को, गाड़ी सं. 07008 रक्सौल-सिकंदराबाद स्पेशल 05 एवं 12 जनवरी को, गाड़ी सं. 07051 हैदराबाद-रक्सौल स्पेशल 30 दिसंबर एवं 13 जनवरी को, गाड़ी सं. 07052 रक्सौल-सिकंदराबाद स्पेशल 02, 09 एवं 16 को, गाड़ी सं. 03225 दानापुर-सिकंदराबाद स्पेशल 04 एवं 11को, गाड़ी सं. 03226 सिकंदराबाद-दानापुर स्पेशल 07 एवं 14 जनवरी को, गाड़ी सं. 03241 दानापुर-एसएमभीवी एक्सप्रेस 05 एवं 12 जनवरी को, गाड़ी सं. 03242 एसएमभीवी-दानापुर एक्सप्रेस 07 एवं 14 जनवरी को, गाड़ी सं. 03245 दानापुर-एसएमभीवी एक्सप्रेस 03 एवं 10 को, गाड़ी सं. 03246 एसएमभीवी-दानापुर एक्सप्रेस 05 एवं 12 को, गाड़ी सं. 03247 दानापुर-एसएमभीवी एक्सप्रेस 04 एवं 11 को, गाड़ी सं. 03248 एसएमभीवी-दानापुर एक्सप्रेस 06 एवं 13 जनवरी को, गाड़ी सं. 03251 दानापुर-एसएमभीवी एक्सप्रेस 31 दिसंबर, 01, 07 एवं 08 जनवरी को, गाड़ी सं. 03252 एसएमभीवी-दानापुर एक्सप्रेस 02, 03, 09 एवं 10 जनवरी को, गाड़ी सं. 03253 पटना-सिकंदराबाद स्पेशल 01, 03, 08 एवं 10 जनवरी को, गाड़ी सं. 07255 हैदराबाद-पटना स्पेशल 03 एवं 10 जनवरी को, गाड़ी सं. 07256 सिकंदराबाद-पटना स्पेशल 05 एवं 12 जनवरी को, इसके साथ ही 02, 04, 06, 08, 10 एवं 13 जनवरी को गाड़ी सं. 12791 सिकंदराबाद-दानापुर एक्सप्रेस सिकंदराबाद से 150 मिनट पुनर्निधारित समय से खुलेगी। उक्त जानकारी पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी वीरेन्द्र कुमार ने दी है।

घमंडिया गठबंधन के सांसदों ने तार-तार की मयार्दा : सम्राट

भाजपा ने फूंका सांसद कल्याण बनर्जी का पुतला

पटना। बिहार भाजपा किसान मोर्चा के तत्वाधान में गुरूवार को किसान परिवार से आने वाले उपराष्ट्रपति का विपक्षी दलों द्वारा अपमान किए जाने के विरोध मे भाजपा के कार्यकर्ता सड़क पर उतरे और जमकर प्रदर्शन किया तथा सांसद कल्याण बनर्जी का पुतला फूंका। इस मौके पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने कहा कि घमंडिया गठबंधन के सांसदों ने सभी परम्पराओं को तोड़कर सारी मयादाओं को तार-तार किया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि विपक्षी दल के सांसदों ने सदन के बाहर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की मिमिक्री करके मजाक उड़ाया। उन्होंने कहा कि भाजपा हमेशा ऐसी घटनाओं का विरोध किया है और आगे भी हमलोग इसका विरोध करेंगे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि राहुल गांधी और विपक्षी दलों के सांसद ने मयार्दा को तार-तार किया है। उन्होंने कहा कि ये लोग संवैधानिक पद पर बैठे लोगों का भी सम्मान नहीं करते हैं। राहुल गांधी रोकने के बजाय वह वीडियो बना रहे थे, यह दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसे लोगों को जनता आगे भी सबक सिखाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में भाजपा के कार्यकर्ता आज सड़क पर उतरे हैं और पुतला दहन किया है। इधर, भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने कहा कि संसदीय मयादाओं को तार- तार करते हुए टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी द्वारा किसान पुत्र जगदीप धनखड़ का जिस तरह अपमान किया गया, उसको देश का किसान कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। इस प्रदर्शन में प्रदेश महामंत्री राजेश वर्मा, जगन्नाथ ठाकुर, ललन मंडल, उपाध्यक्ष संजय खंडेलिया, किसान मोर्चा के उपाध्यक्ष अमरेश कुमार, अशोक वर्मा, मनोज शर्मा,राकेश सिंह, कुंतल कृष्ण, प्रदेश महिला मोर्चा की अध्यक्ष धर्मशिला गुप्ता और पटना महानगर के अध्यक्ष अभिषेक कुमार सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष के प्रपौत्र के निधन पर कांग्रेस में शोक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

महान स्वतंत्रता सेनानी एवं बिहार मजहरूल हक के दूसरे प्रपौत्र वारिस को पटना में हो गया। 64 वर्षीय फारुकी के निवासी थे और बिहार कांग्रेस में उनके निधन पर बिहार कांग्रेस के सिंह ने गहरी शोक-सम्वेदना प्रकट की। के देहांत की खबर सुनकर मैं दुखी हू। है। और बिहार में कांग्रेस की जड़ मजबूत ईश्वर उनके आत्मा को शांति दें एवं परिवार को फारुकी का अंतिम संस्कार यानी जनाजे की नमाज कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष मौलाना फारूकी का देहांत बुधवार रात सिवान जिले के फरीदपुर गाँव सचिव पद पर रह चुके थे। अध्यक्ष डॉ. अखिलेश प्रसाद डॉ. सिंह ने कहा कि फारुकी उनका पूरा परिवार कांग्रेसी रहा करने में अहम्योगदान देता रहा है। दुःख सहने की ताकत। मालुम हो कि उनके पैत्रिक गाँव असर हुसैनगंज थाना क्षेत्र के फरीदपुर रमना मैदान में अदा किया गया। वे लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। शोक व्यक्त करने वाले नेताओं में कृपानाथ पाठक, प्रमोद कुमार सिंह, ब्रजेश पाण्डेय, ब्रजेश प्रसाद मुनन, राजकिशोर सिंह, लालबाबू लाल, निधि पाण्डेय, मृणाल अनामय, रमा शंकर पाण्डेय आदि शामिल हैं।

विपक्षी एकजुटता से भाजपा की बढ़ी बेचैनी : राजीव रंजन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा पर हमला बोलते हुए जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि भाजपा नेताओं की पूरी राजनीति आज नीतीश नाम के भरोसे चल रही है। जनसरोकार के कामों से पूरी तरह कट चुके इनके नेता सिर्फ बड़े नेताओं की चापलूसी में जुटे रहते हैं। यह जानते हैं कि आज देश में तानाशाही फैलाने के इनके आकाओं द्वारा देखे जा रहे सपनों की राह में नीतीश कुमार ही सबसे बड़ी बाधा है। उनकी पहल पर ही आज इंडिया अलायन्स के सभी दल भाजपा के खिलाफ एकजुट हो गये हैं। इसीलिए भाजपा के बड़े नेताओं की आंख में नीतीश खटकते हैं और इसी वजह से इनके स्थानीय नेता दिन रात नीतीश कुमार के खिलाफ दुष्प्रचार कर अपने आकाओं को खुश करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि दरअसल बिहार में सत्ता से बेदखल किये जाने के बाद से ही भाजपाइयों का मानसिक संतुलन हिल गया है। इनके पास न तो तथ्यों का ज्ञान रहता है और न ही कोई मुद्दा। दूसरी तरफ यह लोग अपने बड़े नेताओं का विश्वास तक खो चुके हैं। इसीलिए इन्हें लगता है कि नीतीश कुमार के खिलाफ बोलने और बिहार के विकास में रोड़े अटकाने से इनके बड़े नेता इनसे खुश हो जायेंगे। जदयू महासचिव ने कहा कि नीतीश कुमार की चिंता में दुबले हुए जा रहे भाजपा नेताओं को अपनी फिक्र करनी चाहिए। न तो इनके पास कोई चेहरा है और न ही कोई लीडर। सिर्फ एक व्यक्ति के भरोसे इनकी पूरी पार्टी चल रही है। इसके अतिरिक्त इनकी पार्टी में गुट ही गुट बने हुए हैं। हर गुट अपने नेता को सबसे बड़ा दिखाने और दूसरे गुट की टंग खिंचाई को ही राजनीति मानता है। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता यह जान ले कि वह चाहे कितना भी दुष्प्रचार कर लें नीतीश कुमार का मुकाबला नहीं कर सकते। नीतीश कुमार देश के उन गिने चुने नेताओं में से हैं जिनका दामन इतने लंबे राजनीतिक सफर के बाद भी आज तक बेदाग है।

पारस ने श्रीमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त की

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार विधान पार्षद, राष्ट्रीय हाउसिंग कॉरपोरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा बिहार हाउसिंग फेडरेशन के अध्यक्ष विजय सिंह के पिता श्रीमोहन सिंह के निधन पर राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पाटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति कुमार पारस ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि स्व श्रीमोहन सिंह भूमि विकास बैंक में प्रशासक से सेवा निवृत हो चुके थे, वे एक ईमानदार प्रशासक के साथ-साथ सरल स्वभाव एवं मिलनसार व्यक्ति थे। स्व सिंह के आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं तथा दुख की इस घड़ी में परिजनों को सहन शक्ति प्रदान करें। प्रदेश प्रवक्ता ललन कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि श्री सिंह के पिता के निधन पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सासंद प्रिंस राज ने भी गहरा शोक व्यक्त की तथा दिवगंत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

सांसदों के निलम्बन के खिलाफ इंडिया गठबंधन का प्रदर्शन आज

पटना। राजद के प्रदेश कार्यालय में गुरूवार को इंडिया गठबंधन के घटक दलों की महत्वपूर्ण बैठक राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह की अध्यक्षता में हुई। जिसमें संसद से सांसदों के अकारण निलम्बन किए जाने की घोर शब्दों में निन्दा की गई और इसे देश के संवैधानिक प्रावधानों और लोकतांत्रिक मयार्दा के खिलाफ तानाशाही कदम बताया गया। बैठक में 19 दिसम्बर को दिल्ली में हुए इंडिया गठबंधन के शीर्ष नेताओं की बैठक में लिए गए निर्णय के आलोक में सांसदों के अकारण निलम्बन के खिलाफ कल 22 दिसम्बर को राज्य के सभी जिला मुख्यालयों पर रोषपूर्ण प्रदर्शन का निर्णय लिया गया। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने बताया कि बैठक में जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा, सीपीआई (माले) के धीरेन्द्र झा, सीपीआई एम के अरुण कुमार, सीपीआई के रामबाबू कुमार एवं कांग्रेस के शकील अहमद खां के साथ हीं राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी , राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक एवं राजद के प्रदेश प्रधान महासचिव रणविजय साहू उपस्थित थे। राजद प्रवक्ता ने बताया कि इंडिया गठबंधन के सभी घटक दल संयुक्त रुप से राज्य के सभी जिला मुख्यालयों पर रोषपूर्ण प्रदर्शन करेंगे और सरकार के लोकतंत्र बिरोधी मानसिकता और तानाशाही रवैए का पदार्फाश करेंगे।

बिहार के किसान के साथ केन्द्र की दोहरी नीति दुर्भाग्यपूर्ण : राजद

राजद किसान प्रकोष्ठ सभी जिला मुख्यालयों पर देगा धरना

पटना। राष्ट्रीय जनता दल किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ गोपाल कृष्ण कुमार चंदन ने कहा कि हाल ही में संपन्न हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के ठीक पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा किया है कि छत्तीसगढ़ में धान खरीद का न्यूनतम समर्थन मूल्य 3100 रू प्रति क्विंटल होगा और प्रत्येक एकड़ पर 21 क्विंटल धान की खरीददारी होगी। इसके उलट बिहार जैसे कृषि प्रधान राज्य में न्यूनतम समर्थन मूल्य का दर 2130 रू है और केंद्रीय योजना के बावजूद केंद्र के द्वारा राज्य सरकार को व्यापक पैमाने पर किसानों से धान खरीद के लिए कोई विशेष सहायता नहीं दी गई है जिसका खामियाजा बिहार के किसानों को उठाना पड़ रहा है। बिहार के किसान अपना धान न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम दर पर बेचने को मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा शासित केंद्र सरकार के इस दोहरे नीति के खिलाफ और प्रत्येक राज्य में एक समान न्यूनतम समर्थन मूल्य को लागू करने को लेकर राष्ट्रीय जनता दल अपने किसान प्रकोष्ठ के माध्यम से पुरे बिहार के हर एक जिले में धरना आयोजित करेगा। साथ ही प्रखंड स्तर पर केंद्र सरकार के बिहार के किसानों के साथ हो रहे अन्याय पूर्ण रवैया के खिलाफ किसानों के साथ मिलकर किसान संगोष्ठी आयोजित करेगा। उन्होंने आगे कहा कि 23 दिसंबर को स्व. चैधरी चरण सिंह के जन्मतिथि पर पार्टी मुख्यालय 2, वीरचंद पटेल मार्ग के कपूर्री सभागार से किसानों की मांग को लेकर राजद अपनी मुहिम की शुरूआत करेगा जिसके तहत यह मांग होगी कि प्रत्येक राज्य में एक सामान न्यूनतम समर्थन मूल्य की नीति लागू हो और छत्तीसगढ़ की तरह बिहार में धान की खरीद का दर 3100 रु प्रति क्विंटल निर्धारित हो। इस कार्यक्रम में राज्य के हर एक जिले से बड़े पैमाने पर किसान भाग लेने पहुचेंगे।

लोकतांत्रिक मूल्यों को कलंकित कर रही केन्द्र सरकार : शशि रंजन

पटना महानगर जिला कांग्रेस कमिटी की हुई बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना महानगर जिला कांग्रेस कमिटी की बैठक गुरूवार को जिला कांग्रेस कार्यालय नेशनल हाल कांग्रेस मैदान कदमकुंआ में सम्पन्न हुआ। बैठक की अध्यक्षता करते हुए महानगर जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष शशि रंजन ने कहा कि मोदी सरकार देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को कलंकित कर रही है। इसी का नतीजा है कि संवेदनशील मुद्दे पर अपनी बात रखने की कोशिश कर रहे विपक्ष के 141 सांसदों को सरकार ने पूरे सत्र के लिए निलंबित कर दिया है। इस तानाशाही को पूरा देश देख रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार को बुनियादी और जरूरी मुद्दों पर मसखरी करने के अलावा कुछ नहीं आता। इस सरकार ने बीते नौ-दस सालों में एक ऐसी परंपरा डाल दी है, जिससे भारत के गौरवशाली लोकतंत्र को अपूरणीय क्षति पहुंच रही है। कहा कि क्या विपक्ष द्वारा सवाल पूछना और सरकार की नाकामियों का पदार्फाश करना गुनाह है? अपनी नाकामियों पर पर्दा डालने के लिए सरकार ने विपक्ष के ऊपर झूठ, पाखंड, क्षुद्रता, संकीर्णता और मलीनता की हर सीमा पार कर दी। उन्होंने आगे कहा कि इसी संसद में सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने के लिए राहुल गांधी को संसद से बाहर कर दिया गया था। ये सब तानाशाही नहीं तो फिर क्या है? इसलिए अब ये लड़ाई लोकतंत्र और हिंदुस्तान के 140 करोड़ लोगों के बुनियादी अधिकारों को बचाने की है। एक तरफ भारतीय लोकतंत्र की आत्मा कांग्रेस है, दूसरी तरफ लोकतंत्र का गला घोंटने वाली भाजपा। भाजपा और संघ की लोकतंत्र के साथ अदावतें रही हैं, इनका याराना तो फासीवाद के साथ है। ऐसे में देशवासियों को आगे आना होगा, लोकतंत्र बचाने के लिए फासीवादी ताकतों को मुंहतोड़ जवाब देना होगा। बैठक में कुमारी अनिता, सरदार जगजीत सिंह, राजीव कुमार मेहता, निशांत करपटने, कमलेश पाण्डेय, विकास वर्मा, सुदय शर्मा, राजेश कुमार, गोपाल कृष्ण, चंदन कुमार, जयकिशन, डा परवेज हसन,अभय कुमार जायसवाल, मनोज मंडल, मो वकील, बंटी यादव,अताउर रहमान, सौरभ सिन्हा, विद्याभूषण, पवन केसरी आदि उपस्थित थे।

विवि के उद्देश्यों को पूरा करने में सब लोग करें सहयोग : राज्यपाल

मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी विवि के सीनेट की बैठक में हुए शमिल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय के सीनेट की बैठक में भाग लिया। यह बैठक विश्वविद्यालय के शैक्षिक विषयों पर विचार करने के लिए आयोजित किया गया था। बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि इस विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को पूरा करने में सब लोग सहयोग करें। इसे ऊँचाई पर ले जाने की जिम्मेदारी हम सब की है। उन्होंने कहा कि सभी विश्वविद्यालयों में बजट और अकादमिक विषयों पर विचार-विमर्श के लिए सीनेट की अलग-अलग बैठकें होनी चाहिए। बैठक में पटना विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो रास बिहारी प्रसाद सिंह ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पर व्याख्यान दिया। विश्वविद्यालय के विभिन्न अकादमिक विषयों पर सीनेट के सदस्यों ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव रॉबर्ट एल चोंग्थू, मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव एवं सीनेट के सदस्यगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

भवन निर्माण विभाग
विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना।

बिहार सरकार

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–25 वर्ष 2023–24

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या–2 भवन निर्माण विभाग, पटना।
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की अंतिम तिथि : 03.01.2024 1:00 बजे अप0 तक ।
3. निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय : 04.01.2024 2:00 बजे अप0 तक ।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : 04.01.2024 (2:00 बजे अप0)
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या–2, पटना। विद्युत कार्य अवर प्रमंडल, दानापुर एवं विद्युत अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य अंचल, दक्षिण बिहार, पटना
6. निविदा प्राप्ति का स्थान क्रमांक 5 के अनुरूप।

क्रम सं0	कार्यकानाम	परिमाण विपत्र की राशि	अग्रधन की राशि	परिणाम विपत्र कामुल्य	कार्य समाप्ति की अवधि
1	S/R of E/W with Addition and alteration to E.I in Supertendent residence at Masaurhi Jail at Masaurhi Distt Patna.	349576.00	7000.00	750.00	10 Days
2	Repair with Addition and alteration to E.I in executive chamber and Patch repair in other room at Patnacity Division BCD Patna.	210254.00	4500.00	500.00	10 Days
3	Repair with Addition & alteration to E.I n Mahila remand home police barrack at Gaighat, Gulzarbagh, Patna.	171354.00	3600.00	500.00	10 Days
4	Repair with Addition & alteration to E.I in admin building of SDO at Patnacity	348254.00	7000.00	750.00	10 Days
5	S/R with addition & alteration of road light in the Campus of SDO office Masaurhi Distt Patna.	650132.00	13500.00	1250.00	10 Days
6	Patch work to E.I in Ground Floor Bhojpur Hostel at Patnacity, Patna.	275321.00	5700.00	750.00	10 Days
7	S/R with E/W & E/I in SDO office (2nd Floor) at Paliganj Distt Patna.	506335.000	11000.00	1250.00	10 Days
8	Replacement of Main cable and Patch work in electronic building at Polytechnic Patna-7 at Gulzarbagh	156225.00	3200.00	500.00	10 Days
9	S/R with Addition and alteration to E/W & E/I in Conference Hall of Polytechnic Patnacity.	349236.00	7000.00	750.00	10 Days
10	S/R with addition & alteration to E.I in Garden Light Gate light in SDM residence Campus and around swinning Pool area Barh.	730456.00	15000.00	1250.00	10 Days
11	S/R with addition & alteration to E/W & E/I in staff Qtr No-3 & 5 at Gulzarbagh Press Patnacity Distt Patna.	335252.00	7000.00	750.00	10 Days
12	S/R with addition & alteration to E.I in staff Qtr No 1 & 4 at Gulzarbagh Press Patnacity Distt Patna.	325656.00	7000.00	750.00	10 Days
13	S/R with addition & alteration to E/I in staff Qtr No 10 at Gulzarbagh Press Patnacity Distt Patna.	223222.00	5000.00	500.00	10 Days
14	Patch repair & replacement work to E.I in Judicial Qtr No C-9, C-10, C-11 & C-12 at Civil Court Patnacity Distt Patna.	345161	7000.00	750.00	10 Days
15	Patch repair & replacement work to E.I in Judicial Qtr No Masaurhi Distt Patna.	249523.00	5000.00	500.00	10 Days
16	Patch repair & replacement work to EI in main building and Campus light in the Campus of Civil Court at Masaurhi Distt Patna.	349493.00	7000.00	750.00	10 Days
17	Patch work to E.I in First Floor Bhojpur Hostel at Patnacity, Patna.	251265.00	5500.00	750.00	10 Days
18	S/R of A.C wiring to E.I in Civil Court building Masaurhi Distt Patna.	339399.00	7000.00	750.00	10 Days
19	S/R to E.I in Qtr No 334/800, 402/800 & 292/800 at L.B.S & R.B Nagar, Patna.	287115.00	6000.00	750.00	10 Days
20	S/R to E.I in Qtr No 545/800 & 228400 at L.B.S & R.B Nagar, Patna.	191410.00	4000.00	500.00	10 Days
21	Repair of Burnt 500 KVA Compact sub Substation Transformer & replacement of 800 Amp Change over in the Panel room of BJA Gaighat, Patna.	508837.00	11000.00	1250.00	10 Days
22	S/R with E/W & E/I in Sub Jail Danapur (Outside Jail Campus) at Distt Patna.	135114.00	3000.00	500.00	10 Days
23	S/R to E/W & E/I in Shastri Park at L.B.S Nagar Patna.	349135.00	7000.00	750.00	10 Days
24	Repair & replacement work to E/W & E/I in inspection bunglow at Rajbanshi Nagar, Patna.	349200.00	7000.00	750.00	10 Days
25	Repair with Addition & alteration to E.I in Mausam Sava Kandra at Sardar Patel Bhawan Bailey Road Patna.	329410.00	7000.00	750.00	10 Days

इस निविदा को विज्ञापन वेबसाईट **state.bihar.gov.in/prdbihar** पद पर देखा जा सकता है।

PR- 13809 (B C D) 2023-24

नशे से बनानी दूरी है,

संक्षिप्त खबरें

डीएम ने जिला निर्वाचन अधिकारी के साथ की बैठक

सहरसा । जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह- जिलाधिकारी, सहरसा, श्री वैभव चैधरी, आईएएस की अध्यक्षता में उनके कार्यालय वेश्म में बैठक आहुत की गई। सर्वप्रथम जिलाधिकारी द्वारा बैठक की कारवाई प्रारंभ करते हुए उप निर्वाचन पदाधिकारी, इस संबंध में पृच्छा करने पर उप निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि गत विधानसभा आम निर्वाचन 2020 के दौरान व्यय संवेदनशील निर्वाचन क्षेत्र एवं व्यय संवेदनशील पॉकेट की संख्या का प्रतिवेदन शून्य था। संयुक्त आयकर निदेशक (अन्वे॰),पटना के द्वारा लोकसभा आम निर्वाचन 2019 के दौरान 75-सहरसा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र अंतर्गत नकद मो॰ 1230000.00 रू॰ आयकर विभाग द्वारा जब्त किया गया था। साथ ही लोक सभा चुनाव 2019 के दौरान पुलिस विभाग द्वारा 74-सोनवर्षा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र अंतर्गत नकद 70000.00 तथा विधान सभा चुनाव 2020 के दौरान 4070000.00 रू॰ जब्त किया गया था। बैठक में उपस्थित सभी म्दवितबमउमदज ।हमदबपमे के समक्ष उक्त जब्ती से संबंधित तथ्य रखे गये। आयकर अधिकारी,सहरसा उत्पाद अधीक्षक,सहरसा पुलिस विशेष शाखा,सहरसा,अनुमंडल पदाधिकारी,सदर सहरसा/सिमरी बख्तियारपुर द्वारा उक्त जब्त की गई राशि को जाँच के फलस्वरूप कदाशयी नहीं पाये जाने की बात रखी गई।

नेपाल के पूर्व राजदूत पहुंचे मुजफ्फरपुर ,बापू और जेपी से जुड़े स्थलों का किया अध्ययन

मुजफ्फरपुर ।नेपाल के पूर्व राजदूत सामाजिक, राजनीतिक विश्लेषक प्रोफेसर लोकराज बराल और नेपाल के स्तंभकार वरिष्ठ पत्रकार चंदकिशोर झा बिहार दौरे के क्रम में आज मुजफ्फरपुर पहुंचे। मुजफ्फरपुर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और लोकनायक जयप्रकाश नारायण से जुड़े स्थलों का देखा। खासकर लोकनायक जयप्रकाशनारायण के आंदोलन के सहयोगी रहे महान समाजवादी राजनीतिक, विचारक सच्चिदानंद सिन्हा से मुशहरी मनिका में मिलकर जेपी आंदोलन के बारे में जानकारी ली। इसके साथ बिहार के ऐतिहासिक शिक्षास्थली लंगट सिंह कॉलेज परिसर का भ्रमण किया। कालेज के प्राचार्य डा ओपी राय ने उन्हें कॉलेज के इतिहास और वर्तमान स्थितियों के बारे में बताया। नेपाल के त्रिभुवन यूनिवर्सिटी में पॉलिटिकल साइंस के प्रोफेसर रहे बराल ने उनके साथ कई यादों को साझा की। कॉलेज परिसर स्थित गांधी कूप, गांधी पार्क डॉ राजेंद्र पार्क, महान साहित्यकार रामधारी सिंह दिनकर पार्क का भ्रमण किया । नेपाल से आई टोली ने कहा कि भारत नेपाल मैत्री को लेकर पत्रकारों के संगठन मीडिया फार बार्डर हामोर्नी बेहतर पहल कर रहा है ।इसके कारण दोनों देशों बीच बदलते इस आधुनिक युग में भारत नेपाल के रिश्ते को मजबूत करने में काफी सहयोग मिल रहा है। बराल ने कहा कि वह भारत में नेपाल के राजदूत रहे हैं नेपाल के विकास में भारत का बहुत योगदान है। मीडिया फार बॉर्डर हार्मनी के वैशाली जिलाध्यक्ष पत्रकार प्रभात कुमार, वरीय पत्रकार अमरेंद्र तिवारी के नेतृत्व में पत्रकारों की टोली ने माला पहनकर और अंग वस्त्र देकर दोनों अतिथियों का स्वागत किया।

एआइडीएसओ ने 9 सूत्री मांगों को लेकर विश्वविद्यालय के समक्ष किया प्रदर्शन

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। फीस वृद्धि, शैक्षिक अराजकता, भ्रष्टाचार, शिक्षा का निजीकरण, व्यापारीकरण व सांप्रदायीकरण को बढ़ावा देने वाली नई शिक्षा नीति 2020 के खिलाफ सहित 9 सूत्री मांगों को लेकर एआईडीएसओ ने बीआरए बिहार विश्वविद्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। इसके पहले एलएस कॉलेज परिसर से गगनभेदी नारों के साथ सुसज्जित जुलूस निकाला गया। जो विश्वविद्यालय प्रशासनिक भवन पहुंचकर सभा में तब्दील हो गया। सभा में छात्रों को संबोधित करते हुए एआईडीएसओ के बिहार राज्य सचिव विजय कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालय की व्यवस्था पुरी तरह से अराजक बनी हुई है। रिजल्ट में गड़बड़ी हर परीक्षा परिणाम की स्वाभाविक घटना बन चुकी है। रिजल्ट में सुधार करवाना हो या किसी तरह का सर्टिफिकेट निकलवाना हो, कन्या उत्थान योजना का लाभ लेना हो या अन्य कोई काम हो। छात्र आवेदन करने के बाद विश्वविद्यालय का चक्कर लगाने को मजबूर है। समस्याओं के समाधान की न तो कोई समय सीमा है और न ही सुनने वाले कोई अधिकारी। छात्र, बिचौलियों एवं भ्रष्टाचारियों के हाथों आर्थिक दोहन का शिकार बनने को विवश है। वहीं नई शिक्षा नीति- 2020 के लागू होने के बाद कई दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। नतीजतन स्नातक एवं स्नातकोत्तर में बेतहाशा फीस वृद्धि हुई है जिससे छात्र आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं और काफी छात्र पढ़ाई भी छोड़ दे रहे हैं। एआईडीएसओ मुजफ्फरपुर जिला अध्यक्ष शिव कुमार ने कहा कि शैक्षणिक अराजकता एवं भ्रष्टाचार दूर करने सहित 9 सूत्री मांगों पर कार्रवाई नहीं होने पर संगठन की चरणबद्ध आंदोलन तेज करने की चेतावनी दी।सभा की अध्यक्षता वैशाली जिला संयोजक नितेश कुमार ने किया। इस अवसर पर कुलपति के नाम मांगों का ज्ञापन दिया गया एवं उसकी प्रतिलिपि माननीय कुलाधिपति सह राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय शिक्षा मंत्री को ईमेल के जरिए भेजा गया।

जुलूस प्रदर्शन का नेतृत्व एएआईडीएसओ के बिहार राज्य कमिटी सदस्य ललित कुमार झा, वैशाली जिला संयोजक नितेश कुमार, मुजफ्फरपुर जिला कमिटी सदस्य संतोष कुमार, राजन कुमार, आरफा जिया, अर्पणा प्रीतम, चंदन कुमार, प्रभंस कुमार, सौरभ कुमार, सुभाष कुमार आदि कर रहे थे।

गणित का सीधा संबंध मानवीय जीवन से : गौतम

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा गणित का सीधा संबंध मानवीय जीवन से है।इसलिए शिक्षण व्यवस्था में भी इसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। विज्ञान का उदय तो गणित से ही हुआ है। वस्तुओं के मूल्य निर्धारण से लेकर लाभ-हानि तक का रेखांकन गणित के जरिए ही होता है।ये बातें राष्ट्रीय गणित दिवस की पूर्व संध्या पर डॉ प्रभात दास फाउण्डेशन के द्वारा आयोजित संगोष्ठी सह भाषण प्रतियोगिता में राजकीय बंशीदास कन्या मध्य विद्यालय के प्रधानाचार्य गौतम कुमार चौधरी ने कही। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय गणित दिवस का आयोजन भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवासन रामानुजन के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 22 दिसंबर को मनाया जाता है।गणितज्ञ रामानुजन ने अपने फमूर्लों आधुनिक गणित को समृद्ध बनाया है।प्रधानाचार्य ने बताया कि मनुष्य के दैनिक जीवन का संचालन गणित के बिना संभव नहीं है।गणित जीवन का प्रबंधन करता है और व्यापार समेत अनेक गतिविधियों के संचालन का यह माध्यम है।

इससे पूर्व मानवीय जीवन में गणित का महत्व विषयक भाषण प्रतियोगिता में छठीं,सांतवीं एवं आठवीं कक्षा के 37 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। बच्चों ने गणित की महत्ता व्यक्त की और बताया जीवन एक गणित है इसे बनाना पड़ता है।गणित का ज्ञान नहीं होगा ज्ञान तो जीएसटी को भी नहीं पाएंगे जान।भाषण के जरिए विषय-वस्तु की बेहतर अभिव्यक्ति करने के सांतवीं कक्षा की जयंती कुमारी को प्रथम स्थान के लिए पुरस्कृत किया गया।जबकि आठवीं की ईशा कुमारी एवं अंशिका कश्यप को द्वितीय व तृतीय स्थान का पुरस्कार मिला। वहीं राधा कुमारी, मनीषा कुमारी, गंगा कुमारी, सना परवीन, सुफिया खातून,आदर्श कुमार, कंचन कुमारी एवं मरहवा कुमारी को चतुर्थ से ग्यारहवें स्थान के लिए पुरस्कृत किया गया।निर्णायक के तौर पर शिक्षक राघव कुमार लाल एवं संजीव ठाकुर ने सफल प्रतिभागियों का चयन किया।मौके पर शिक्षक रामकुमार झा,अर्चना कुमारी, नूतन कुमारी आदि मौजूद थे।कार्यक्रम का संचालन फाउण्डेशन के अनील सिंह ने किया।

अवैध हथियार के साथ युवक गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

सौरबाजार/ सहरसा- थाना क्षेत्र के चन्दौर गांव में बुधवार की देर संध्या को एक लोडेड देशी कट्टा दो मोबाइल एवं एक अपाचे मोटरसाइकिल के साथ एक युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। देर संध्या हुई गिरफ्तारी के दौरान तीन युवक अपाचे मोटरसाइकिल पर हथियार लेकर घूम रहा था तभी संदेह के आधार पर पुलिस ने एक युवक को दबोच लिया दो युवक भागने में कामयाब रहा जब तलाशी ली तब इसका खुलासा हुआ। पुलिस फिलहाल युवक के आपराधिक इतिहास के साथ ही हथियार लेकर घूमने के उद्देश्य को खंगालने में लगी है। इस संबंध में थाना अध्यक्ष अविनाश कुमार सिंह ने बताया कि बुधवार की देर संध्या को पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि एक अपाचे मोटरसाइकिल पर तीन युवक चन्दौर गांव की तरफ से लोडेड देशी कट्टा के साथ किसी अपराधिक वारदात को अंजाम देने की फिराक में घूम रहा है। इस दौरान पुलिस टीम की गाड़ी जब पहुंची वहां तो पुलिस को देखते ही तीनों युवक भागने का प्रयास किया जिसमें दो युवक भागने में कामयाब रहा और एक युवक को पुलिस ने खदेर कर पकड़ लिया। युवक की तलाशी लेने पर उसकी कमर से एक लोडेड देशी कट्टा दो मोबाइल बरामद किया गया। गिरफ्तार युवक की पहचान चन्दौर निवासी कमल किशोर यादव के पुत्र अमित कुमार के रूप में की गई है। जबकि इसके दो अन्य साथी अमरजीत कुमार एवं सौरव कुमार भागने में कामयाब रहा जिनकी गिरफ्तारी हेतू छापेमारी की जा रही है। जल्द सलाखें के पीछे भेज दिया जाएगा।

तारापट्टी गांव में शोक संवेदना व्यक्त करते पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक व अन्य कांग्रेसी नेतागण

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के तारापट्टी गांव निवासी व्यो वृद्ध कांग्रेसी नेता व समाजसेवी देवेंद्र प्रसाद सिंह उम्र - 85 वर्ष का मौत होने को लेकर गुरुवार को प्रखंड़ कांग्रेस अध्यक्ष उपेंद्र यादव के अद्यक्षता में एक शोक सभा का आयोजन किया गया.इस दौरान बिहार सरकार के पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक तारापट्टी गांव पहुँच कर स्व.कांग्रेसी नेता देवेंद्र प्रसाद सिंह के परिवार से मिलकर शोक संतावन व्यक्त की. इस दौरान बिहार सरकार के पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक, प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष उपेंद्र यादव, जयनगर प्रखंड़ कांग्रेस अध्यक्ष सुरेंद्र महतो, वरिष्ठ कांग्रेसी नेता विशेश्वर झा, शुशील झा, शिक्षा विभाग के जिला कांग्रेस अध्यक्ष बालेश्वर पासवान, प्रदेश कांग्रेस डेलीगेट सदस्य मीणा देवी कुशवाहा,नवेंदु झा, प्रदेश कांग्रेस कार्यकारणी अध्यक्ष नित्यानंद झा, झंझारपुर लोक सभा क्षेत्र के प्रभारी अनुरंजन सिंह,वीरेंद्र झा,सुनील राउत,मुकेश कुमार सिंह,अनिल झा,वैधनाथ यादव सहित कांग्रेसी कार्यकताओं ने दो मिनट का मौन धारण करके स्व.देवेंद्र प्रसाद सिंह की आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की. इस दौरान बिहार सरकार के पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक ने कहा कि कांग्रेस पार्टी में स्व देवेंद्र प्रसाद सिंह एक सच्चे सिपाही के रूप जीवन काल कार्य किया .उन्होंने कहा कि उनके मौत हो जाने से एक सच्चे कांग्रेसी सिपाही को खो दिया है।

वामपंथी दलों की बैठक हुई सम्पन्न

प्रात: किरण संवाददाता

दरभंगा गुदरी स्थित कामरेड विजयकांत ठाकुर स्मृति भवन सीपीएम जिला कार्यालय में इंडिया गठबंधन केआह्वान पर वामपंथी दलों की बैठक सीपीएम के वरिष्ठ नेता नरेंद्र मंडल, सीपीआई के सहायक जिला मंत्री राजीव कुमार चौधरी, भाकपा-माले जिला कमेटी सदस्य जमालुद्दीन, के अध्यक्षमंडली में संपन्न हुई। बैठक में 22 दिसंबर को पूरे देश में इंडिया गठबंधन के आवाहन पर संसद पर हुए हमले के खिलाफ प्रतिवाद मार्च को सफल बनाने का निर्णय लिया गया। बैठक को सीपीआई के जिला सचिव नारायण जी झा, भाकपा-माले के जिला सचिव बैद्यनाथ यादव, सीपीएम के जिला सचिव मंडल सदस्य दिलीप भगत ने संबोधित करते हुए कहा कि 13 दिसंबर को संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान संसद में सुरक्षा की चूक हुई जिस संबंध में विपक्षी दलों द्वारा केंद्रीय गृह मंत्री को सत्र में बयान देने की मांग कर रही है। सत्र के दौरान संसद के अंदर किसी मुद्दों पर मंत्री या सरकार को बयान देने का परंपरा रहा है। इसी परंपरा को ध्यान में रखते हुए विपक्षी सांसद गृह मंत्री से बयान देने की मांग कर रही है। इस सत्र के दौरान एक बहुत बड़ा नयाइतिहास भाजपा सरकार के द्वारा बनाया गया 13 दिसंबर को एक साथ 78 सांसद को निलंबित किया गया 34 साल बाद यह घटना घटी है। और एक साथ इतने सांसद का निलंबन हुआ है 1989 में एक साथ 63 संसद का निलंबन हुआ था कल अभी तक 147 संसद को निलंबित किया गया है । वक्ताओं ने कहा किभारत में संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में एक काल दिन है विधायिका के खिलाफ मोदी सरकार का हमला लोकतंत्र के सभी स्तंभों पर कब्जा करने और भारत के संविधान को ही निलंबित करने के लिए उसके एजेंड़ा का हिस्सा है। महत्वपूर्ण बिलों पर बिना चर्चा के पास करना ,सांसद दानिश अली को अभद्र गाली देना राहुल गांधी का सदस्यता रद्द करना और अब 147 सांसदों के निलंबन पर सरकार की चुप्पी साधना बहुत ही शर्मनाक है बैठक में 22 दिसंबर को इंडिया गठबंधन की ओर से राष्ट्रव्यापी आवाहन पर दरभंगा जिले में प्रतिवाद मार्च को सर्वसम्मति से सफल बनाने का निर्णय लिया गया। प्रतिवाद मार्च लहेरिया सराय पोलो मैदान से दरभंगा समाहरणलय के तरफ प्रस्थान करेगी

ट्रिपल मर्डर मामले में 2 सुपारी किलर समेत 9 गिरफ्तार

- कोसी रेंज डीआईजी शिवदीप लांडे ने किया मामले का बड़ा खुलासा
- 10 बिग्घा जमीन को लेकर हुई तीन लोगों की हत्या
- गिरफ्तार सूटर के पास से दो देशी कट्टा और 5 जिंदा कारतूस बरामद
- 24 लोगों को किया नामजद, मृतक के दामाद भी थे हत्या में शमिल
- स्पीडी ट्रायल के माध्यम से सभी आरोपी को दिलवाई जाएगी सजा :एसपी

प्रात: किरण संवाददाता

मधेपुरा । ट्रिपल मर्डर कांड में हुआ खुलासा, जमीन विवाद में बड़े भाई ने ही छोटे भाई को रास्ते से हटाने की रची थी साजिश, घटना में प्रयुक्त हथियार बरामद, दो सुटर एक महिला समेत 9 गिरफ्तार। दरअसल मधेपुरा सदर थाना क्षेत्र के सकरपुरा गांव में बीते 18 दिसंबर को हुए ट्रिपल मर्डर की गुत्थी पुलिस ने सुलझा ली है और इस चर्चित हत्याकांड में शामिल 2 सुटर व एक महिला समेत 9 लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।वही इस घटना में प्रयुक्त हथियार भी पुलिस ने बरामद कर लिया है। घटना के पीछे मृतक सूर्यनारायण साह का उनके बड़े भाई रामनारायण साह से जमीन विवाद चल रहा था। इस बाबत मधेपुरा एसपी कार्यालय में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कोसी प्रक्षेत्र के डीआईजी शिवदीप वामनराव लांडे के समक्ष एसपी राजेश कुमार ने बताया कि इस घटना को पुलिस ने चुनौती के रूप में लिया है। घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए मधेपुरा पुलिस के नेतृत्व में इस कांड के उद्भेदन एवं घटना में संलिप्त अपराधकर्मियो की गिरफ्तारी हेतु तीन टीमों का गठन किया गया। जिसमें प्रथम टीम में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, मधेपुरा के साथ थानाध्यक्ष, भरार्ही, पु०अ०नि० मुकेश कुमार, पु०नि०-सह थानाध्यक्ष, मधेपुरा, राजकिशार मंडल एवं थाना के सशस्त्र बल को रखा गया। इस टीम का काम घटना के संबंध में आसूचना संकलन कर घटना एवं इसमें संलिप्त अपराधकर्मियों का पता कर गिरफ्तार करना था। दूसरा टीम में तकनिकी सेल के पदाधिकारी पु०नि० सतेन्द्र मिश्रा एवं सिपाही धीरेन्द्र कुमार, प्रभात कुमार एवं अखिलेश कुमार को रखा गया, इसका कार्य तकनीकी आधार पर संलिप्त अपराधकर्मियों का ठिकानों का पता कर सहयोग करना था। तीसरे टीम में पुलिस उपाधीक्षक, परीक्ष्यमान आलोक कुमार के नेतृत्व में गठन किया गया। इनको एफएसएल टीम एवं डॉग स्क्वॉयड के साथ समन्वय बनाकर घटनास्थल पर वैज्ञानिक साक्ष्यों का संग्रहण करना था। तीनों टीमों ने संयुक्त रूप से 60 घंटो तक दिन-रात मेहनत कर घटना का सफलतापूर्वक उद्भेदन कर लिया तथा इस घटना में संलिप्त 9 अभियुक्तों की गिरफ्तारी की गयी। गिरफ्तार अपराधियों में अमरेंद्र साह, रामनारायण साह, निरंजन साह, अभिषेक कुमार, बबलू साह, अमरजीत कुमार, चंदन देवी, विनोद कुमार और नीरज कुमार शामिल हैं। पुलिस ने इनके पास से घटना में प्रयुक्त दो देसी कट्टा, पाँच जिंदा कारतूस और पाँच मोबाईल भी बरामद किये हैं। वहीं इस मामले को लेकर एसपी राजेश कुमार ने बताया कि इस घटना में संलिप्त अपराधकर्मी अमरेन्द्र साह (सुपारी किलर) तथा निरंजन साह पेशेवर अपराधकर्मी हैं इनके विरूद्ध पुर्व से ही अन्य थानों में कई जघन्य अपराधिक मामले दर्ज हैं। गिरफ्तार अन्य का भी आपराधिक इतिहास खंगाला जा रहा है।

विशेष लोक अभियोजक, अनु. जाति एवं अनु. जनजाति का आयोजन

प्रात: किरण संवाददाता

सहरसा। विशेष लोक अभियोजक, अनु॰ जाति एवं अनु॰ जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम सहरसा के द्वारा सूचित किया गया है कि सोनवर्षा राज थाना कांड सं॰ -44/2022 दिनांक -01.03.2022 में वादी गजेन्द्र सादा, पिता-राजेन्द्र सादा, साकिन-कुमरगंज, थाना-बसनही, जिला -सहरसा के सुलहनामा एवं अन्य साक्षियों के पक्षद्रोही होने के कारण माननीय न्यायालय के समक्ष अभियोजन अभियुक्तों के विरूद्ध लगाए गए आरोपों को युक्तियुक्त संदेह से परे साबित करने में पूर्णतः असफल रहा है। अतः माननीय न्यायालय के दिनांक- 31.08.2023 के न्यायादेश के द्वारा साक्ष्य के अभाव में सभी अभियुक्तों को दोषमुक्त किया गया है। 2. सोनवर्षा राज थाना कांड सं॰-95/2021(विशेष वाद संख्या-62/2021)दिनांक -22.09.2021 विशेष लोक अभियोजक,अनु॰ जाति एवं अनु॰ जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम सहरसा के द्वारा सूचित किया गया है कि सोनवर्षा राज थाना कांड सं॰ -95/2021 (विशेष वाद संख्या -62/2021) दिनांक-22.09.2021 में वादी सत्यनारायण राम,पिता-स्व॰शिवचरण राम,साकिन-काशनगर वार्डनं॰-03,थाना-सोनवर्षा ओ॰पी॰-काशनगर, जिला-सहरसा के सुलहनामा एवं अन्य साक्षियों के पक्षद्रोही होने के कारण माननीय न्यायालय के समक्ष अभियोजन अभियुक्तों के विरूद्ध लगाए गए आरोपों को युक्तियुक्त संदेह से परे साबित करने में पूर्णतः विफल रहा है। अतः माननीय न्यायालय के दिनांक-22.09.2023 के न्यायादेश के द्वारा साक्ष्य के अभाव में सभी अभियुक्तों को दोषमुक्त किया गया है।

प्रेस को संबोधित करते कांग्रेस के वरीय नेता व बिहार सरकार के पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली हमारी लड़ाई देश पर राज करने के लिए नही है केवल मोदी सरकार को सत्ता से हटाने के लिए इण्डिया गठबंधन बना है. जात धर्म व मजहब की लड़ाई नहीं यह देश की जमुरियत बचाने की लडाई है. मोदी सरकार देश की इतिहास व संविधान को बदलना चाहती है. देश की जमुरियत व भाईचारा को बचा कर रखने के लिए देश की जनता को जागरूक करने की जरूरत है ताकि देश को बचाया जा सके. उक्त बातें गुरूवार को खजौली स्थित कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष उपेंद्र यादव के आवास पर प्रेस को संबोधित करते हुए कॉग्रेस के वरीय नेता व बिहार सरकार के पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक ने कही.उन्होंने कहा कि आजादी के लड़ाई में यह दल का नामोनिशान तक नहीं था. आज देश की जनता को लॉलीपॉप दिखाकर दिगभ्रमित कर रही है. देश की जनता महंगाई बेरोजगारी गरीबी का दंश झेल रही है इसकी हालात सुधारने के प्रति सरकार सजग नहीं है. एक तरफ सरकार देश को बेचने का काम कर रही है, दूसरी तरफ संविधान व देश के ऐतिहासिक नामों को बदलने में जुटी है. जो काफी निंदनीय है. मोदी सरकार की इस हड़कत को देश की जनता बर्दास्त नहीं करेगी. इन तमाम बातों की चर्चा आम लोगों के साथ करने के लिए पार्टी के कार्यकताओं को जागरूक किया जा रहा है ताकि देश की जनता मोदी सरकार की असलियत से वाकिब हो सके. मौके पर कांग्रेस के प्रदेश डेलिगेट सदस्य नवेंद्र झा प्रदेश डेलिगेट सदस्य मीणा देवी कुशवाहा जयनगर कॉग्रेस के प्रखंड कार्यकारणी अध्यक्ष नित्यानंद झा झंझारपुर लोक सभा प्रभारी अनुरंजन सिंह प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष उपेंद्र यादव वरीय कांग्रेसी विशेश्वर झा सुशील झा नवल झा सुनील राउत अनील झा कांग्रेस पार्टी के शिक्षा विभाग के जिला अध्यक्ष बालेश्वर पासवान वीरेंद्र झा जयनगर प्रखंड अध्यक्ष सुरेंद्र महतो मुकेश कुमार सिंह सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे.

सहरसा में राजद ने भास्कर को दी बड़ी जिम्मेदारी आतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव के पद पर हुए मनोनित

प्रात: किरण संवाददाता

सहरसा आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर तमाम पार्टी के आलाकमान के निर्देश पर गांव गांव तक पार्टी मजबूत को लेकर कई निर्देश जारी किए जा रहे है और पार्टी के कार्यकर्ताओ को ग्रामीण स्तर तक संघठन मजबूत का काम जोर पकड़ लिया है । इसी करी में राजद नेता भास्कर कुमार ठाकुर को राजद के आतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश सचिव मनोनित किया गया और भास्कर को एक बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है । मीडिया से बात करते हुए भास्कर ठाकुर ने कहा कि हम राजद के साधारण कार्यकर्त्ता है पार्टी जो भी जिम्मेदारी देगी उसको निभाने के लिये तैयार है, उन्होने अपने मनोनयन पर राजद सुप्रीमों लालु प्रसाद यादव ,उपमुख्यमंत्री तेजश्वी यादव , राजद राष्ट्रीय महासचिव श्याम रजक , अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अरविंद सहनी जी का विशेष आभार व्यक्त किया । गौरतलब हो की इससे पूर्व भास्कर छात्र राजद , और विभिन्न प्रकोष्ठ मे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा चूके है । अतिपिछड़ा प्रदेश सचिव बनाए जाने पर राजद नेता एवं कार्यकर्ता ने कहा की भास्कर ठाकुर एक संघर्ष करने वाला राजद का सिपाही है, इनके मनोयन से पार्टी कोशी में और ज्यादा मजबूत होगी । राजद के राष्ट्रीय सचिव,संजय ठाकुर , विधायक चंद्रहास चौपाल, एमएलसी अजय सिंह, विधायक युसूफ सलाउद्दीन, राजद जिला अध्यक्ष प्रो ताहिर हुसैन, अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष राजद तंजीम अहमद, युवा राजद नेता संदीप यादव, राजद नेता सरोज यादव, संतोष कुमार चौधरी, दिवाकर कुमार ठाकुर, शंभू मुखिया, दिनेश यादव, अरशद अली, मनोज यादव,

बढ़ते ठंड को लेकर डीएम ने महादलित टोला में कंबल का किया वितरण

प्रात: किरण संवाददाता

सहरसा। बढ़ते ठंड को देखते है सहरसा जिलाधिकारी वैभव चैधरी के द्वारा महादलित टोला का दौरा किया जहा उन्होंने महादलित टोला के लोगो के बीच कंबल का वितरण किया, इस दौरान आई॰ए॰एस॰ के द्वारा जिला स्तरीय अन्य पदाधिकारी के साथ पटुआहा स्थित भिखारी टोला का दौरा किया गया। उन्होने जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग,सहरसा के वस्त्र वितरण कार्यक्रम के तहत भिखारी टोला के गरीब निवासियों को अपने हाथों से कम्बल का वितरण किया। ज्ञातव्य हो कि प्रत्येक वर्ष सामाज कल्याण विभाग,सहरसा के तरफ से गरीब, भिक्षुओं, निःसहाय ठंड से बचने हेतु वस्त्र वितरण किया जाता है। इसी आधार पर जिला पदाधिकारी के द्वारा भिखारी टोला में वस्त्र वितरण का कार्यक्रम किया गया। इस मौके पर जिलाधिकारी ने अपने सम्बोधन में भिखारी टोला के निवासियों को राज्य सरकार के द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होने जीविका के तहत चल रही कार्यो की भी जानकारी दी। उनके द्वारा बताया गया कि गरीब महिलाओं के उत्थान के लिए जीविका समूह की स्थापन की गई। बिहार जीविकोपार्जन योजना का लाभ लेकर आप अपने आर्थिक स्थिति को सुधार सकती है। जो भी महिलायें जीविका समूह से जुड़ी है उन्हें आर्थिक लाभ हो रहा है एवं उनके जीवन स्तर में वृद्धि हो रही है। आप सभी जीविका समूह से जुड़कर अपने जीवन स्तर में सुधार ला सकती है। आप अपने बच्चों को विद्यालय अवश्य भेजे, ताकि पढ़-लिख कर वो कामयाब बन सकें। साथ ही लोगों को किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहने की सलाह दी। इस मौके पर सदर अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा भी सम्बोधित किया गया एवं सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्ररित किया गया। इस मौके पर उपस्थित कुल 90 (नब्बे) भिक्षुकों एवं उनके परिवार के सदस्यों को कम्बल दी गई। जिनमें कुछ महिलायें सोनिया देवी, बिजली देवी, ननकी देवी, मुरमु देवी, चोला देवी शामिल है। इस मौके पर अपर समाहत्र्ता आपदा, जिला पंचायतीराज पदाधिकारी, जिला अल्प संख्यक कल्याण पदाधिकारी एवं सहायक निदेशक सामाजिक सुरक्षा उपस्थित थे।

न्यायालय के आदेश पर एक वारंटी बहरवान से गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

मधुबनी रहिका थाना पुलिस ने न्यायालय के आदेश पर गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के बहरवान गांव से एक वारंटी को गिरफ्तार कर लिया गया गिरफ्तार वारंटी की पहचान बहरवन गांव निवासी राम आशीष पासवान के पुत्र दिवाकर पासवान को गिरफ्तार कर लिया गया है।रहिका थाना अध्यक्ष राज किशोर कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि गिरफ्तार वारंटी न्यायालय से फरार चल रहा था न्यायालय के आदेश पर बहरवान गांव से गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार वारंटी को न्यायिक हिरासत में लेने हेतु व्यवहार न्यायालय मधुबनी भेज दिया गया।

संक्षिप्त खबरें

दो आरोपी को पुलिस ने न्यायिक हिरासत में भेजा

मधुबनी अलग-अलग गांवों से दो आरोपी को खजौली पुलिस ने बुधवार की रात पकड़ लिया। पकराये दोनों आरोपी को गुरूवार के दिन न्यायिक हिरासत में भेज दिया. जिसमें थानाक्षेत्र के दतुआर गांव निवासी रमण ठाकुर उर्फ रमण शर्मा तथा इनरवा गांव निवासी नितिश कुमार सहनी उर्फ सरोज सहनी शामिल है. थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने बताया कि इन दोनों पर पूर्व के गिरफ्तारी का वारंट निर्गत था. दोनों पुलिस गिरफ्त से फरार चल रहा था. उन्होने कहा कि दतुआर के आरोपी रमण ठाकुर को प्रशिक्षु दरोगा जीतेश कुमार मिश्र एवं इनरवा के आरोपी नीतीश कुमार सहनी को एसआई कविता माटे सहित अन्य पुलिस बल ने गिरफ्तार कर किया है

आंगनबाड़ी केंद्र पर हुआ सामाजिक अंकेक्षण

बोचहा।आंगनबाड़ी केन्द्रों बुधवार को सामाजिक अंकेक्षण कराया गया। इस दौरान पटियासा पंचायत के केंद्र संख्या 62 पर सीडीपीओ अनिता जायसवाल ने सामाजिक अंकेक्षण में आंगनबाड़ी में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों से केन्द्र से उन्हें लाभ मिल रहा है या नहीं। इसकी जानकारी ली और आंगनबाड़ी सेविका ने अंकेक्षण में उपस्थित लोगों को लोगों को केन्द्र पर मिलने वाली योजनाओं की जानकारी दी। सोशल आडिट में आंगनबाड़ी केन्द्र का संचालन, बच्चों की उपस्थिति, लाभार्थियों का पूरक पोषाहार, टीएचआर की आपूर्ति, बच्चों का टीकाकरण एवं पोषण की स्थिति, कुपोषित एवं अति कुपोषित बच्चे, स्कूल पूर्व शिक्षा की क्रियाशिलता, आधारभूत सुविधाएं खाना बनाने का बर्तन की उपलब्धता आदि की समीक्षा की गई। केंद्र के माध्यम से चलने वाली योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मातृ योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना, टेक होम राशन, अन्नप्राशन का लाभ लाभुकों को उनके घर पर जाकर देना है। इसमें गोद भराई की रस्म भी शामिल है। सीडीपीओ ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता में महिला व बच्चे शामिल हैं। अगर मां स्वस्थ नहीं होगी तो उससे उत्पन्न संतान पर भी असर पड़ेगा। इसके अलावा बच्चों का मानसिक व शारीरिक विकास भी प्रमुख है। मामूली अनदेखी से बच्चे का भविष्य दांव पर लग सकता है। इसके लिए जरुरी है कि जच्चा-बच्चा की योजनाओं को बेहतर तरीके से क्रियान्वित किया जाये।

बिहार को विशेष राज्य की दर्जा, आदि मांगों को ले भाकपा का प्रदर्शन

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने, विगत दिन लोकसभा एवं राज्यसभा में विपक्षी सांसदों को किए गए निलंबन वापस लेने एवं देश में ईवीएम के बदले वैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग को लेकर भाकपा कार्यकताओं ने अनुमंडल कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन किया। मौके पर भाकपा कार्यकताओं ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे भाकपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रमोद प्रभाकर ने कहा कि बिहार से झारखंड अलग होने के बाद बिहार लगभग उद्योग विहीन हो चुका है, बाढ़ और सुखार से पूरे बिहार तवाह और परेशान है। उन्होंने कहा कि हाल में बिहार सरकार द्वारा कराए गए जातीय एवं आर्थिक गणना से अत्यंत ही भयावह स्थिति सामने आई है। बिहार में 34.13 प्रतिशत लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं, 94 लाख परिवार को प्रतिदिन मात्र 2 सौ रुपये की आय में जीवन बसर करना पड़ता है, जबकि 39 लाख परिवार को आजादी के 76 बर्ष बाद भी झोपड़ी में ही रहना पड़ रहा है।भाकपा नेता प्रभाकर ने कहा कि इन भयावह स्थितियों से निजात दिलाने के लिए बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दे केंद्र सरकार, नहीं तो गंभीर परिणाम होगा। उन्होंने विगत दिन लोकसभा और राज्यसभा में बड़ी संख्या में विपक्षी सांसदों को निलंबन करने की कार्रवाई को संसदीय मयार्दा एवं मापदंड के विरुद्ध बताया। भाकपा नेता ने देश के अंदर लोकतंत्र को बचाने के लिए ईवीएम के बदले वैलेट पेपर से चुनाव कराने की मांग की। भाकपा के जिला मंत्री विद्याधर मुखिया ने कहा कि केंद्र सरकार बिहार के साथ सौतेलेपन की व्यवहार कर रही है। बिहार को विशेष राज्य के दर्जा के मामले में वे अपने वायदे से मुकर रही है। उन्होंने कहा कि विशेष राज्य के लिए बिहार सभी मापदंड पूरा कर रहा है। विद्याधर मुखिया ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार विपक्षी सांसदों को निलंबित कर लोकतंत्र पर प्रहार किया है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। पार्टी के सहायक जिला मंत्री मुकुंद प्रसाद यादव, वरिया नेता अनिल भारती, शंभू क्रांति, कुंदन यादव, दिलीप पटेल, कृष्णा मुखर्जी ने कहा कि बिहार के साथ नाइंसाफी बर्दाश्त नहीं करेंगे। प्रदर्शन में उमाशंकर मुन्ना, सौरभ कुमार, नागेश्वर यादव, अमरेंद्र कुमार, प्रिंस कुमार, आशीर्वाद कुमार, भूपेंद्र शर्मा, उमाकांत पासवान, हरीबल्लभ सादा आदि शामिल थे। उक्त मांगों के संबंध एक मांग पत्र भाकपा के द्वारा राष्ट्रपति को प्रेषित किया गया है।

हथियार के साथ 3 अभियुक्त पकड़े गए

प्रात: किरण, संवाददाता

मुजफ्फरपुर । साहेबगंज पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान हुस्सेपुर स्थित गंडक बाँध पर किसी बड़ी अपराधिक घटना को अंजाम देने से पूर्व ही त्वरित कार्रवाई करते हुए 2 मोटसाइकिल सवार अपराधकर्मी को गिरफ्तार कर लिया1. इनके पास से एक देशी कट्टा एवं 3जिंदा कारतूस ,एक मास्टर चाभी एवं चोरी की दो मोटरसाइकिल बरामद किया गया है। गिरफ्तार अभियुक्तों के नाम निरंजन कुमार पिता - दिलीप सहनी ग्राम माधोपुर धरफरी थाना - देवरिया, सुभाष कुमार - पिता बुन्नीलाल राम, एवं अमन कुमार पिता शत्रुधन राम दोनों ग्राम कमलपुरा मठिया थाना-पारू के निवासी बताया जा रहा है। इस संदर्भ में साहेबगंज थाना कांड सं0-559 / 23 दर्ज अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।पुलिस का कहना है कि इन गिरफ्तार अपराधकर्मियों द्वारा बीते 17दिसम्बर को बैद्यनाथपुर करनौल स्थित गोदाम पर फायरिंग की घटना एवं दिनांक 15 नवंबर को जैतपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत फाइनेंस कर्मी से हथियार का भय दिखाकर करीब 11हजार- रुपए और मोबाईल की लूट की गई थी। इनकी गिरफ्तारी से पूर्व में हुए दो कांडो का सफल उद्भेदन हुआ है।

खेल प्रतियोगिता के दौरान छात्रों के बीच हुई मारपीट

कई छात्र-छात्राएं हुए घायल, छात्रा के साथ छेड़खानी को लेकर हुआ विवाद

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । बीपी मंडल इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में देर रात छात्रों के बीच दो गुटों में जमकर मारपीट हुई। इस दौरान कई छात्र-छात्राएं गंभीर रूप से घायल हो गए। मामले को लेकर सिंहेश्वर थाना में मामला दर्ज किया गया है। मामले की अनुसंधान में पुलिस जुट गई है। दरअसल मधेपुरा के बी पी मंडल इंजीनियरिंग कॉलेज परिसर में प्रमंडलीय स्तर पर चल रहे अभ्युदय 2023 खेल प्रतियोगिता के दौरान छात्रों के बीच दो गुटों में जमकर मारपीट हुई इस दौरान कई छात्र-छात्राऐं गंभीर रूप से घायल हो गए हैं, बताया जा रहा है कि खेल के दौरान मधेपुरा टीम के कुछ छात्रों ने सहरसा टीम की छात्राओं पर फब्तियाँ कसनी शुरू कर दी, अपनी टीम की छात्राओं के साथ दुर्व्यवहार होता देखकर सहरसा के छात्रों ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो मधेपुरा के छात्रों ने उन पर हमला बोल दिया जहां मौजूद छात्र-छात्राओं को दौरा दौरा कर बुरी तरह पीटने लगे। मारपीट की इस घटना में सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के ईसीई सातवें सेमेस्टर के छात्र राजू कुमार और आशीष कुमार बुरी तरह जख्मी हो गए, छात्र नंदिनी, हर्षिता, संजना आदि ने बताया कि आज शिक्षकों के बीच बैडमिंटन प्रतियोगिता चल रही थी जिसमें मधेपुरा की टीम हार गई, मैच खत्म होते ही मधेपुरा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र उनके साथ छेड़खानी एवं दुर्व्यवहार करने लगे, जिसकी विरोध करने पर उन लोगों ने मारपीट पर उतारू हो गए। वहीं सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्राओं का आरोप है कि मारपीट की घटना के दौरान वहां मधेपुरा इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रधानाचार्य एवं शिक्षक गण भी मौजूद थे। लेकिन किन्हीं ने भी उन्हें बचाने की कोशिश नहीं की सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र-छात्राओं द्वारा इस घटना को लेकर सिंघेश्वर थाना में मधेपुरा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र सौरभ सिंह और विनीत सहित अन्य के खिलाफ मामला दर्ज करवाया गया है। वहीं इस मामले को लेकर सिंघेश्वर थाना अध्यक्ष अरुण कुमार ने बताया कि इस घटना को लेकर सहरसा इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र-छात्राओं द्वारा आवेदन प्राप्त हुआ है, जांच कर विधि सम्मत कार्यवाही की जाएगी।

अंकित हत्याकांड का हुआ खुलासा 5 युवकों ने मिलकर की थी हत्या, तीन गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बीते 4 दिसम्बर को साहेबगंज थाना अंतर्गत जिराती टोला के पास स्थित चौर में संदिग्ध स्थिति में एक अज्ञात युवक का शव होने की सूचना प्राप्त हुई थी ।सूचना प्राप्त होते साहेबगंज थाना की टीम द्वारा तत्काल मौके पर पहुँच कर शव को कब्जे में लेकरजरूरी प्रक्रिया कर अन्त्य परीक्षण हेतु एसकेएमसीएच भेजा गया था।स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से मृतक की पहचान अंकित कुमार पिता लालबाबू दास ग्राम प्रतापट्टी, जिराती टोला थाना-साहेबगंज जिला-मुजफ्फरपुर के रूप में किया गया।इस संबंध में मृतक की माँ द्वारा समर्पित आवेदन के आधार पर साहेबगंज थाना कांड सं0 524 / 23 दर्ज किया गया जिसमे 5 युवकों के आरोपी बनाया गया था।कांड के सफल उद्भेदन हेतु वरीय पुलिस अधीक्षक मुजफ्फरपुर के निर्देशन में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सरैया के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम द्वारा तकनीकी एवं मानवीय आसूचना संकलन के आधार पर त्वरित कार्रवाई करते हुए हत्या कांड में संलिप्त अप्राथमिकी अभियुक्त नीरज कुमार पिता मदन दास ,अमोद कुमार पिता सिकंदर राय एवं सचिन कुमार पिता तुलसी दास, तीनों ग्राम जिराती टोला थाना-साहेबगंज को गिरफ्तार किया गया। इनके पास से हत्या में प्रयुक्त चाकू एवं मृतक का मोबाईल और गमछा बरामद हुआ है।घटना में संलिप्त अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु छापामारी की जा रही है।

रिफ्रेशर ट्रेनिंग में शामिल हुए बीएनएमयू के तीन नोडल पदाधिकारी

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा । बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति, पटना एवं पीपुल्स फाउंडेशन आफ इंडिया के तत्वाधान में राज्य के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में संचालित सेहत केंद्र के नोडल पदाधिकारियों का दो दिवसीय रिफ्रेशर ट्रेनिंग एवं समीक्षा बैठक गुरुवार को संपन्न हुआ। इसमें भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा की ओर से तीन नोडल पदाधिकारियों ने भाग लिया। इनमें टी. पी. कॉलेज, मधेपुरा के डॉ. सुधांशु शेखर, आर. एम. कॉलेज, सहरसा के अमितेष कुमार और बी. एस. एस. कॉलेज, सुपौल के डॉ. आनंद ने भाग लिया। प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत कार्यक्रम के दौरान नोडल पदाधिकारियों ने अपने-अपने सेहत केंद्र का प्रगति- प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। तदनुसार यह बताया गया कि भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा अंतर्गत ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में सबसे पहले एक जुलाई, 2021 से सेहत केंद्र का शुभारंभ किया गया है। तदपरांत आर. एम. कॉलेज, सहरसा के अमितेष कुमार और बी. एस. एस. कॉलेज, सुपौल में भी केंद्र की शुरूआत कि गई। कार्यक्रम में बिहार राज्य एड्स नियंत्रण समिति के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी ने निर्धारित कैलेंडर के अनुरूप कार्यक्रम आयोजित करने और उसका ससमय उपयोगिता प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान सभी अतिथियों को पौधा एवं आर्ट-क्राफ्ट भेंट किया गया। उत्कृष्ट कार्य करने वाले पांच नोडल पदाधिकारियों को सम्मानित भी किया गया। इस अवसर पर समिति के सहायक निदेशक (युवा) सह सेहत केंद्र के राज्य नोडल पदाधिकारी आलोक कुमार, पीपुल्स फाऊँडेशन ऑफ इंडिया के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी नीलांशु, जीडी वीमेंस कॉलेज, पटना आदि उपस्थित थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में कलाकारों ने बांधा समा, कलाकारों की प्रस्तुति पर पूरी रात झुमते रहे दर्शक

प्रात: किरण, संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा) प्रखंड के झिटकिया पंचायत अंतर्गत लक्ष्मीनिया गांव में तीन दिवसीय विवाह पंचमी मेले के अंतिम दिन रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कलाकारों की प्रस्तुति ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन घैलाढ़ प्रखंड के जिला पार्षद प्रतिनिधि डॉ. विनीत कुमार आर्यन और श्री कृष्ण टीवीएस शोरूम के मालिक व मर्चेंट नेवी के इंजीनियर नरेंद्र चंद्र नवीन ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया। इस दौरान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉक्टर विनीत कुमार आर्यन ने कार्यक्रम देखने आए दर्शको को संबोधित किया और उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम मनोरंजन का साधन है। लक्ष्मीनिया मेला सभी जाति धर्म के लोगों का समागम स्थल है। जहां घैलाढ़ प्रखंड ही नहीं जिले से भारी संख्या में मेला देखने लोग पहुंचते हैं। यह मेला इस क्षेत्र के लोगों के लिए धरोहर मानी जाती है।उन्होंने दर्शकों से सौहार्द पूर्ण माहौल में कार्यक्रम का लुप्त उठाने की बात कही। वही मेला के मुख्य निर्देशक नरेंद्र चंद्र नवीन ने मेला और सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने आए लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने शांतिपूर्ण माहौल में कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि मेला आपसी भाईचारे व आपसी एकता का संगम स्थल है। वही सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रदीप यादव न्यू स्टार नाइट शो के कलाकारों की मनमोहक प्रस्तुति ने दर्शकों को पूरी रात बांधे रखा। भोजपुरी के सुपरस्टार लोक गायिका अदिति राज, गायक मनोज राजा, राहुल दीवाना और हिंदी सिंगर मनीष मलंकार ने अपने मधुर स्वर में दर्जनों हिन्दी व भोजपुरी गाने प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भोजपुरी के सुपरस्टार लोक गायिका अदिति राज ने अपनी प्रस्तुति से दर्शकों में जोस भर दिया। भक्ति व फिल्मी गीतों के बोछार से लोगों को झुमने पर मजबूर कर दिया। एक से बढ़कर एक गानों की प्रस्तुति ने पूरी रात समा बांधे रखा। बीच बीच में नृत्यांगनाओं के द्वारा भोजपुरी व हिन्दी गानों के प्रस्तुति पर रिकॉडिंग डांस पर दर्शकों काफी उत्साहित दिखे। कार्यक्रम देखने के लिए महिला व पुरुष का जनसैलाब उमड़ पड़ी थी। वही कॉमेडियन चिंटू चैलेंज ने अपने चुलबुले अंदाज से दर्शको का खुब मनोरंजन किया। वही माही म्यूजिकल ग्रुप कोलकाता की सभी नृत्यांगना ने एक से बढ़कर एक भोजपुरी व हिन्दी गानो पर जबरदस्त नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों का पूरी रात मनोरंजन किया। इस मौके पर मेला के व्यवस्थापक सिकंदर यादव फौजी, पूर्व वार्ड सदस्य राजेश कुमार, नारायण यादव, रविंद्र कुमार, पवन कुमार, मनोज शाह, विनोद कुमार, प्रखंड के सरपंच संघ के अध्यक्ष हीरा कामति, अंगद यादव, देव मोहन नेहरू, वार्ड सदस्य अजीत यादव एवं बड़ी संख्या में दर्शक मौजूद थे।

असहाय लोगों के बीच किया कम्बल एवं वस्त्र का वितरण

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी एसकेएमसीएच में कार्यरत ब्रदर अखलाकुर रहमान उर्फ निशु ने ठंड से कंपकपाते लोगों के बीच कंबल वितरित किया। गरीब और असहाय लोगों के बीच कंबल वितरण को लेकर वे विभिन्न चौक-चौराहे और रेलवे स्टेशन पर गए और 200 कंबल व गर्म कपड़े बांटे। उन्होंने बताया कि उनका मकसद सर्वप्रथम असहाय लोगों को ठंड से बचाने का है। इसके बाद लोगों को जागरूक करना है। प्रत्येक वर्ष अपने कई सहयोगियों के साथ असहाय एवं गरीबों के बीच ठंड के मौसम में कंबल एवं गर्म कपड़े का वितरण करते हैं। इसी कड़ी में विगत तीन दिनों से ठंड बढ़ने के साथ रात्रि में कंबल एवं गर्म कपड़े का वितरण शुरू किया। निशु के इस कार्य को लोगों ने काफी सराहा है। एसकेएमसीएच के कई नर्सिंग स्टाफ के साथ अन्नु प्रिया ने कहा कि भाग दौड़ की जिंदगी लोगों को औरों के लिए फुर्सत नहीं, वहीं निशु नौकरी करने के साथ-साथ हमेशा बड़े बुजुर्गों, गरीबों, असहायों, लाचारों और गरीब बच्चों की मदद करने के लिए आगे रहते हैं।वास्तव में यह कार्य प्रशंसनीय तो है ही, साथ ही हम सबके लिए प्रेरणादायी भी है। हम सब जहां भी हैं, जिस भी स्थिति में हैं, गरीब मानवता की सेवा के लिए थोड़ा वक्त जरूर निकालना चाहिए। गरीबों की मदद के लिए आगे आना चाहिए ।

जिला स्थापना दिवस पर क्विज प्रतियोगिता 30 को

प्रात: किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर । जिला स्थापना दिवस पर ओपन फार आल क्विज का आयोजन 30 दिसंबर को नगर भवन में होगा। स्थापना दिवस 1ली जनवरी को मनाया जाएगा। क्विज प्रतियोगिता मेंस्कूल कालेज व किसी अन्य संस्था के प्रतिभागी भाग ले सकते हैं। यह जानकारी एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है। तीनराउंड की प्रतियोगिता में विजेता को प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार दिया जाएगा। प्रथम पुरस्कार 10 रुपये का है। जिला जनसंपर्क कार्यालय में प्रतिभागी निबंधन करा सकते है। हालांकि आन स्पाट भी निबंधन कराया जा सकता है। डीपीआरओ दिनेश कुमार ने बताया कि पहला राउंड पीटी का होगा। इसमें टाप 12 प्रतिभागियों के बीच सेमीफाइनल कराया जाएगा। इसमें जीतनेवाली छह टीमें फाइनल में प्रवेश करेंगी। कार्यक्रम के आयोजन के लिए तीन अधिकारियों की टीम बनी है। इसमें जिला उपनिर्वाचन पदाधिकारी सत्यप्रिय कुमार, अवर निबंधन पदाधिकारी मनीष कुमार व डीपीआरओ दिनेश कुमार शामिल है।

देश में सशक्त शासन व्यवस्था सिस्टम पर अंगुली उठाने वाले को बख्शा नही जाएगा : भाजपा

प्रात: किरण, संवाददाता

मधुबनी में कल्याण बनर्जी का पुतला फूका गया राहुल गांधी भी रहे निशाने पर । आपको बतादे की विपक्षी नेता त्रिमूल कांग्रेस नेता के सांसद कल्याण बनर्जी के द्वारा देश के उपराष्ट्रपति की मिमिक्री किए जाने और राहुल गांधी के द्वारा वीडियो बनाए जाने को लेकर बी जे पी सहित एन डी ए गठबंधन के नेताओं में जबरदस्त गुस्सा और उबाल है । इसको लेकर थाना चौक पर आज इखढ के सैकड़ो कार्यकर्ता और नेताऑन ने कल्याण बनर्जी का पुतला फूका और राहुल गांधी को भी आरे हाथों लेते हुए जमकर आलोचना की वहीं सासाराम के विधायक सह बिहार प्रदेश भाजपा के महामंत्री शिवेश राम ने कहा कि इस देश में भारतीय जनता पार्टी एनडीए की सरकार है सरकार मजबूती से चल रही है इस देश की शासन को सशक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी । हमारे सिस्टम पर कोई भी उंगली उठाएगा तो वैसे व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं करेंगे वैसे व्यक्ति से शक्ति से निपटेंगे । हमारा देश का शासन ,प्रशासन सही से चल सके । देश के गरीब , गुरवा ,शोषित ,वंचित के लिए प्रधानमंत्री आगे रहते हैं और हमेशा आगे रहेंगे। पुतला दहन कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष शंकर झा ,हरी नारायण यादव ,जिला आईटी सेल के अध्यक्ष राजीव झा ,कुंदन सिंह ,उपाध्यक्ष संजय पांडे,प्रमोद सिंह ,किरण कुमारी झा ,देवेंद्र यादव ,राधा देवी ,कन्हैया कुमार साह ,संतोष कुमार ,सचिन कुमार ,शंकर प्रसाद ,अमित कुमार ठाकुर राम चंद्र यादव इतादी समय सैकड़ो नेता कार्यकर्ता मौजूद थें ।

पुर्व सैनिक सेवा परिषद को मिली सफलता अब पूर्व सैनिक को मिलेगा मूलभूत सुविधा

प्रात: किरण, संवाददाता

कोसी-सीमांचल का तीनों जिला सुपौल सहरसा एवं मधेपुरा सहित अन्य जिला के पूर्व सैनिक सेवानिवृत्ति पश्चात मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं से आजादी से अब तक वंचित रहे हैं। पुर्व सैनिक सेवा परिषद के बैनर तले कोसी सीमांचल के पूर्व सैनिक एकत्रित होकर लगातार कई वरिष्ठ पदाधिकारीगणों (केंद्र/राज्य) से अनेक बार मिलकर अपनी बातों को रखा । इस निरंतर प्रयास के फलस्वरूप पहली बार एक छोटी सी सफलता मिली। आजादी के बाद पहली बार स्टेशन हेड क्वार्टर पूर्व सैनिक विभाग, कटिहार से आज चार लोगों का दल कोसी प्रमंडल के सभी जिला के पूर्व सैनिकों, वीर नारीयों, शहीद की वीरांगनाएं एवं उनके परिवार से मिलने के लिऐ सहरसा की धरती पर पधारे । मीटिंग स्थल, राधा देवी विवाह भवन मत्स्यगंधा, सहरसा में आज उन्होंने सबों की समस्याओं को सुना एवम आश्वस्त किया कि वे लोग यहां के पुर्व सैनिकों की समस्याओं को ऊपर के अधिकारियों तक पहुंचाएंगे। उन्होंने कुछ महत्वपूर्ण सुविधाओं से सम्बंधित बातें बताई जैसे कि पुनः रोजगार, मेडिकल एवं अन्य सभी मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी दी, इसके अलावे कन्या विवाह मदद विकलांग बच्चे एवं अविवाहिता/ विधवा पुत्री को मिलने वाली सुविधाएं, बच्चों को ट्यूशन फीस, स्कॉलरशिप, अंतिम संस्कार अनुदान, आर्मी ग्रुप इंश्यारेंस, कैंटीन, पॉलीक्लिनिक एवं जिला सैनिक कल्याण कार्यालय सहित सभी मुद्दे पर जानकारी दी। जिससे बहुत ही पुर्व सैनिकों को बहुत ही लाभ होगा। ज्ञात हो कि यह सुविधा जिला ही नहीं प्रमंडल स्तर पर भी कोसी सीमांचल में नागण्य है ! इसका प्रमुख कारण इस क्षेत्र का बंगाल क्षेत्र के अंदर प्रशासनिक तौर पर जुड़ा रहना है। आज भी हम सेंट्रल कमांड बिहार में रहकर भी बंगाल क्षेत्र से जुड़े हुए हैं जो सेना के पूर्वी कमान के अंदर आता है ! इसी को सारी समस्याओं का जड़ माना जाता है कोसी सीमांचल के पूर्व सैनिकों की मांग है की कोसी सीमांचल के क्षेत्र को बिहार के साथ जोड़कर इसे मध्य कमान के अंदर लाया जाए।

इस अवसर पर मेजर अमित प्रियदर्शी ने एउल्र एवम बैंक से सम्बंधित पूर्व सैनिकों की जिज्ञासाओं को संबोधित किया। वहीं प्रवीण झा, अध्यक्ष, पुर्व सैनिक सेवा परिषद, सहरसा ने बताया कि आज हम सब जो इस मुकाम पर पहुंचे हैं वह हम सबों के एकता का ही परिणाम है, अतः सबों को हर समय एकजुट होकर रहना ही पड़ेगा। आज के कार्यक्रम में ढ3 ग्रुप के दो डायरेक्टर महोदय भी पटना से पधारे , यह ग्रुप के अभियन्ताओं के द्वारा संचालित किया जाता है, जो अध्यापन, स्वास्थ्य और अकार्बनिक खेती पर आधारित है। इनके एक डायरेक्टर श्री प्रतीक ने जहां पुर्व सैनिकों के 10 बच्चों को मुफ्त शिक्षा का ऐलान किया वहीं दूसरे डायरेक्टर ने पुर्व सैनिकों के बीपी और शुगर का मुफ्त जांच कर उन्हें एहतियात के सम्बन्ध में बताया।

सशस्त्र सीमा बल के अधिकारी ने 60वीं स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया

प्रात: किरण, संवाददाता

मधुबनी सशस्त्र सीमा बल48वीं वाहिनी जयनगर के प्रांगण में चन्द्र शेखर द्वितीय कमान अधिकारी कार्यवाहक कमांडेंट 48वीं वाहिनी के निर्देशन में वाहिनी मुख्यालय तथा अधीनस्थ सीमा चौकियों में सशस्त्र सीमा बल के 60वीं स्थापना दिवस को धूमधाम से मनाया गया तथा इस दौरान सलामी गारद द्वारा ड्रील की गई एवं एस एस बी जवानों के साथ बडे खाने का आयोजन किया।सायकाल मे कार्मिकों व ए पी एफ नेपाल के साथ बॉलीबॉल, किर्केट मैचो का आयोजन किया गया है।48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के कार्यवाहक कमांडेंट चन्द्र शेखर के पर्यवेक्षण में सशस्त्र सीमा बल के 60वीं वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर एस एस बी के इतिहास को बताया गया कि 1962 भारत- चीन युद्द के बाद 20 दिसंबर 1963 में विशेष सेवा ब्यूरो की नाम से रइ की स्थापना की गई । बल का प्राथमिक कार्य सीमावर्ती आबादी का भरोसा जीतकर उनमे राष्ट्रीय स्वाभिमान जगाकर राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल करना। 2001 में एस एस बी को भारत-नेपाल सीमा सुरक्षा के लिए नामित किया गया है और भारत नेपाल की कुल 1751 किमी की सीमा की सुरक्षा का काम सौंपा गया है । बाद में 2004 में एस एस बी के जवानों को अतिरिक्त 699 किलोमीटर भारत - भूटान सीमा की सुरक्षा का जिम्मा भी दिया गया । 2003 में सशस्त्र सीमा बल के रूप मे एक नए पहचान हुई और सीमा रक्षक के रूप में भूमिका निभाई । इस बल के आदर्श वाक्य सेवा सुरक्षा और भाईचारा को मध्य नजर रखते हुए सशस्त्र सीमा बल विभिन्न हिस्सों में अंतरिक सुरक्षा कर्तव्यों के साथ साथ चुनाव कर्तव्यो कानून और व्यवस्था कर्तव्यों का पालन भी कर रहा है।

इस उपलक्ष में संतोष कुमार निमोरिया उप कमांडेंट ने बताया कि सशस्त्र सीमा बल का मुख्य उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्र में रहने वाले लोगों के मध्य सुरक्षा की भावना,सीमा पार से होने वाले अपराधों को रोकना,तस्करी व अन्य गैर-कानूनी गतिविधियों को रोकना है सीमा सुरक्षा के साथ-साथ हम सीमा क्षेत्र के गावों में समय-समय पर सिविक एक्शन प्रोग्राम का आयोजन भी करते है जिसका मुख्य उद्देश्य सीमा क्षेत्र में रहने वाले युवाओं के जीवन में विकास एवं राष्ट्र के प्रति जागरूक करना है इस वक्तव्य के समापन में चन्द्र शेखर द्वितीय कमान अधिकारी संतोष कुमार निमोरिया उप कमांडेंट महोद मनीष देवा नन्द सहायक कमांडेंट अधीनस्थ अधिकारीगण एवं बल के अन्य जवानो ने हिस्सा लिया है ।

सम्पादकीय

जनता के बीच जाइए

विपक्ष के पास एक ही रास्ता है कि वह राजनीति का तरीका बदले। सर्वसत्तावादी सरकारों पर लगाम सिर्फ जनता के बीच रहते हुए और उसे संगठित करते हुए ही लगाई जा सकती है। मगर विपक्ष इसके लिए तैयार नहीं दिखता।अब यह लगभग दस साल का अनुभव है कि वर्तमान भाजपा सरकार संसदीय जवाबदेही को नहीं मानती। ना ही संसद की प्रक्रियाओं का आदर करती है। जिस थोक भाव में सांसदों का निलंबन अब हुआ है, उससे यह बात पुष्ट हुई है कि गुजरते वक्त के साथ सत्ता पक्ष का यह रुख और कठोर होता जा रहा है। सोमवार तक कुल 92 सांसदों को निलंबित किया जा चुका था। राज्यसभा के निलंबित हुए 46 सदस्यों में से 35 को पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित किया गया है। बाकी 11 सांसदों को उनके व्यवहार पर विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक निलंबित किया गया है। उधर लोकसभा में निलंबित 46 सांसदों में से तीन सांसदों को विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक निलंबित किया गया है। बाकी पूरे सत्र के लिए सस्पेंड किए गए हैं। आखिर इन सांसदों का दोष क्या था? वे 13 दिसंबर को संसद की सुरक्षा में हुई चूक के मसले पर गृह मंत्री से बयान की मांग कर रहे थे। क्या यह मांग इतनी बड़ी थी, जिसको लेकर इतना बड़ा विवाद खड़ा होता? मगर ऐसा हुआ है, तो उसके निष्कर्ष स्पष्ट हैं।सरकार ने बता दिया है कि वह विपक्ष और विरोध को स्वीकार नहीं करती। तो अब प्रश्न विपक्ष के सामने है कि वह क्या करेगा? लोकतंत्र की हत्या हुई, जैसे जैसे बयान अब कोई प्रभाव पैदा नहीं करते। गौरतलब है कि सांसदों के निलंबन के बाद कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा कि एक बार फिर मोदी सरकार ने संसद और लोकतंत्र पर हमला किया है। उन्होंने ये अंदेशा भी जताया कि विपक्ष की गैर-हाजिरी में सरकार कुछ महत्त्वपूर्ण बिल पास करा लेगी। ये बात भी बहुत दमदार नहीं है, क्योंकि सरकार विपक्ष की मौजूदगी में भी मनमाफिक ढंग से विधेयक पास कराती रही है। ऐसे में विपक्ष के पास एक ही रास्ता है कि वह राजनीति का तरीका बदले। सर्वसत्तावादी सरकारों पर लगाम सिर्फ जनता के बीच रहते हुए और उसे संगठित करते हुए ही लगाई जा सकती है। मगर विपक्ष इसके लिए तैयार नहीं दिखता। इसलिए वह अपनी जगह खोता चला गया है।

क्या सियासत के लिए मिमिक्री भी मुद्दा है?

राकेश अचल

देश के उप राष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति की मिमक्री को लेकर आधी संसद रो रही है, किसान रो रहे हैं, खांप रो रही है बल्कि उन्हें जबरन रुलाया जा रहा है, क्योंकि ये मिमिक्री भी अब एक सियासी औजार बन गयी है। गनीमत ये है कि विपक्ष विहीन आधी सांसद ने इसे अभी भारतीय दंड संहिता के किसी अनुच्छेद में स्पष्ट रूप से अपराध घोषित नहीं किया है। भारतीय अपराध संहिता के लिए भी मन देखे जा रहे है। कौन इटली वाला है और कौन नागपुर वाला?

ताजा मिमक्री विवाद पर मुझे अब हंसने के बजाय रोने का मन हो रहा है। मेरा मन न इटली का है न पाकिस्तान का, वो शुद्ध हिन्दुस्तान का है, जहां हास्य, व्यंग्य, विनोद के लिए हर जगह स्थान है। लेकिन अदावती की सियासत के युग में अब इस आवश्यक विधा पर भी हमला किया जा रहा है, वो भी रो-रोकर, सांसद में खड़े हो-होकर। जबकि इस देश ने संसद में अपने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा की गयी हर मिमिक्री को पूरी उदारता से न सिर्फ देखा बल्कि उसका आनंद लिया। उस पर कभी टसुए नहीं बहाये, उसे कभी जातीय या पेशेगत अपमान से नहीं जोड़ा। हम लोग बचपन से देखते-सुनते आ रहे हैं कि जब भी लोग फुरसत में होते हैं तो अंताक्षरी खेलते है। कहा जाता है - शुरू करो अंताक्षरी लेकर हरि का नाम, समय बिताने के लिए करना है कुछ काम। संसद के दोनों सदनों से निलंबित किये गए सदस्य संसद के बाहर समय बिताने के लिए अंताक्षरी के बजाय मिमक्री कर रहे थे। मिमक्री अपराध नहीं बल्कि एक कला है। मिमक्री के माध्यम से सन्नाटे में, नीरसता में विनोद पैदा किया जाता है और मिमक्री के लिए उस पात्र को चुना जाता है जो अपने समय में अपने हाव-भाव और अदाओं की वजह से सबसे ज्यादा लोकप्रिय हो। मिमक्री किसी अनाम आदमी की नहीं की जाती। निलबित सांसदों की जमात ने इस बार मिमिक्री के लिए माननीय उपराष्ट्रपति को चुना। लेकिन वे इस चुनाव से खुश होने के बजाय आहत हो गये। उन्होंने धन्यवाद देने के बजाय विपक्षी सांसदों पर अपमान करने का आरोप मढ़ दिया और मजा ये कि उनके टसुए पौंछने के लिए राष्ट्रपति, र्प्धानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, से लेकर सत्तारूढ़ दल की पूरी फौज रूमाल लेकर कतारबद्ध नजर आने लगी।

मिमक्री काण्ड को लेकर समूचा दृश्य हास्यास्पद बन गया है। जो सभापति सदन के भीतर सदस्यों को संरक्षण देने के बजाय सत्तारूढ़ दल की कठपुतली की तरह काम करता हो उसे अचानक अपने पद, जाति और पेशे के अपमान का बोध हो जाये तो आप क्या कहेंगे? निलंबित सदस्य सदन के बाहर हैं और सदन के बाहर की गयी कोई कार्रवाई सभापति के दायरे में नहीं आती। उनके दायरे में जो आता है वो उन्होंने अब तक किया नही। वे एक बेरहम संरक्षक के रूप में सामने आये है। सभापति के रूप में उन्होंने विपक्ष को कभी संरक्षण दिया हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा समाज होगा जिसमें हास्य-व्यंग्य और विनोद के लिए स्थान न हो, शायद ही ऐसा कोई समाज होगा जो इस विधा को अपराध मानता हो। हम तो उस समाज से आते हैं जहाँ हास्य-व्यंग्य सनातन संस्कृति का हिस्सा है। यहां हरि को भी व्यंग्य वचनों का इस्तेमाल करने की आजादी दी गयी है। आम आदमी का तो ये सबसे महत्वपूर्ण और लोकतांत्रिक औजार है। आज के सत्तारूढ़ दल ने देश के संसदीय इतिहास को न पढ़ा है न देखा है। भाजपा का तो जन्म ही 1980 में हुआ है और आज की भाजपा तो 2014 में जन्मी है। उसे संसदीय हास्य परम्पराओं का बोध कैसे हो सकता है?

आज की स्थिति में गनीमत है कि निलंबित संसद केवल गांधीवादी तरीके से संसद के बाहर धरना दे रहे हैं, कल वे सड़कों पर भी उत्तर रहे हैं, मै तो कहता हूँ कि उन्हें निलंबन के इस नए इतिहास के लेखकों से त्यागपत्र देने के लिए आंदोलन चलना चाहिए, क्योंकि सभी ने मिलकर संसदीय परम्पराओं का गला घोंटा है। अपने दल के परम्विनोदी नेता और देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की आत्मा को आहत किया है। संसद लठैती से नहीं चलती कायदे कानूनों से चलते है। सभापति के पास निलंबन का अधिकार है तो बहाली का भी अधिकार है। सभापति सदन के हर सदस्य के संरक्षक हैं न कि केवल सत्तारूढ़ दल के। और जो सभापति कठपुतली बनते हैं, वे न सिर्फ अपने पद की गरिमा को कलंकित करते हैं बल्कि हमेशा के लिए इतिहास में एक खलनायक की तरह दर्ज किये जाते हैं। दुर्भाग्य से आज के नायक अचानक खलनायक बन गए हैं।

आपको जानकार हैरानी होगी कि मिमक्री को लेकर असंवेदनशीलता पिछले एक दशक में ही बढ़ी है।अब ये केवल नेताओं का विशेषाधिकार हो गया है। खासतौर पर सत्तारूढ़ दल के नेताओं का विशेषाधिकार। और कोई मिमक्री करता है तो उसे अपराध माना जाता है। हमारे सूबे में आज की तारीख में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से सबसे कुशल मिमक्री कलाकार हैं। एक जमाने में लालू प्रसाद यादव के पास ये तमगा हुआ करता था। कभी सदन में पीलू मोदी होते थे इसी भूमिका में।। वे सोती और रोती संसद को भी अपने हास्यबोध से जागृत कर देते थे लेकिन उनके समय में कभी कोई सभापति आहत नहीं हुआ। आज के सभापति तो छुईमुई के पौधे हो गए हैं। यानि एक मिमक्री से उनकी जाति, वर्ग और पद का अपमान हो जाता है। ऐसे छुईमुई के पौधे जब संवैधानिक पद पर बैठकर किसी महिला मुख्यमंत्री का अपमान करते हैं तब अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं और इसी के आधार पर सियासत में पदोन्ति भी पाते है। लेकिन ये एक अलग मसला है। आज का मसला ये है कि क्या इस देश में कोई किसी की मिमक्री नहीं करेगा। और अगर करेगा तो उसे जेल में डाल दिया जायेगा। मुझे याद है कि मध्यप्रदेश के जबलपुर शहर में श्याम रंगीला नाम के एक मिमक्री कलाकर के साथ यही सब हुआ। उसे मोदी और शाह की मिमिक्री करने पर जेल जाना पड़ा और उसपर धाराएं लगीं दंगा करने और अश्लीलता फैलाने की। श्याम रंगीला अकेला नहीं है। फिल्म और टेलीविजन जगत के अनेक हास्य कलाकार इस तरह की असहिष्णुता के शिकार हो चुके है। दुर्भाग्य ये है कि देश के इस हास्य बोध को माननीय अदालतों का भी संरक्षण नहीं मिलता। आज मिमिक्री को लेकर उग्र लोग इटली के नहीं उस नागपुर के हैं जो हरिशंकर परसाई के व्यंग्य को नहीं पचा पाते थे और उनकी रीढ़ की हड्डी तोड़ने का दुस्साहस कर चुके हैं। लेकिन ऐसे लोग और ऐसी सत्ताएं ये भूल जाती है

स्वार्थी सांसदों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया

अब समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है। अन्यथा जनता ही उसका उपहास करने लगेगी। हमारे सांसदों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि वे किस तरह की विरासत छोड़ कर जा रहे हैं। क्या वे संसद को इसके पतन के भार के नीचे दबने देंगे? आज जो हो रहा है, वो हम देख ही रहे हैं। उम्मीद है कि देश के सांसदों को, सांसद चलाने वालों को इस बात का भान जल्द हो कि देश का नागरिक उन्हें कितनी उम्मीद के साथ देखता है। साथ ही उन्हें कई मौकों पर उदाहरण की तरह रखता है... पिछले कुछ दिनों से संसद में जो कुछ हो रहा है, उससे देश निराश है। संसद चलाकर ही सरकार विपक्ष के सवालों के जवाब सही ढंग से दे सकती है। हंगामे के माहौल में सांसदों को अपनी बात रखने का मौका ही नहीं मिलता। कोई बच्चा भी समझ सकता है वेल में जाकर नारेबाजी और हंगामा कर सदन की कार्यवाही रोकने से कैसे विरोध जताया जा सकता है। अच्छी बात तो तब कही जाएगी, जब आप अपने सवाल साफ-साफ रखें और सरकार साफ-साफ जवाब दे पाए।

प्रियंका सौरभ
लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

संसद में शोर-शराबा, वेल में जाकर नारेबाजी करना, एक-दूसरे पर निजी कटाक्ष करना यहां तक कि कई बार हाथापाई पर उतारू हो जाना आज संसद की आम तस्वीर है। आखिर सियासी पार्टियों और सांसदों का बर्ताव इतना अराजक क्यों हो गया है? क्या आज पार्टियों के निहित स्वार्थों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया है। अब समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है। अन्यथा जनता ही उसका उपहास करने लगेगी। हमारे सांसदों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि वे किस तरह की विरासत छोड़ कर जा रहे हैं। क्या वे संसद को इसके पतन के भार के नीचे दबने देंगे? आज जो हो रहा है, वो हम देख ही रहे हैं। उम्मीद है कि देश के सांसदों को, सांसद चलाने वालों को इस बात का भान जल्द हो कि देश का नागरिक उन्हें कितनी उम्मीद के साथ देखता है। साथ ही उन्हें कई मौकों पर उदाहरण की तरह रखता है...

पिछले कुछ दिनों से संसद में जो कुछ हो रहा है, उससे देश निराश है। संसद चलाकर ही सरकार विपक्ष के सवालों के जवाब सही ढंग से दे सकती है। हंगामे के माहौल में सांसदों को अपनी बात रखने का मौका ही नहीं मिलता। कोई बच्चा भी समझ सकता है वेल में जाकर नारेबाजी और हंगामा कर सदन की कार्यवाही रोकने से कैसे विरोध जताया जा सकता है। अच्छी बात तो तब कही जाएगी, जब आप अपने सवाल साफ-साफ रखें और सरकार साफ-साफ जवाब दे पाए। लेकिन इससे भी अधिक चिंता का विषय यह है कि संसद की कार्रवाई में बाधा अपवाद की बजाय नियम बन गया है और हमारे राजनेताओं को इस पर कोई पछतावा नहीं होता है। पिछले वर्षों में यह गिरावट बड़ी तेजी से आई है। सांसद एक-दूसरे पर चिल्लाते हैं, विधायी कागजों को छीनकर फाड़ देते हैं, छोटे से मुद्दे पर सदन के बीचों-बीच आ जाते हैं। पिछले वर्षों में ज्यादातर विधेयकों को बिना चर्चा के ही पारित किया गया है। यह संसदीय प्रणाली का दुरुपयोग है। अब विपक्षी पार्टियों और कुछ सांसदों ने संसद की दुर्गति कर रखी है। दोनों सदनों में निजी एजेंडों को लेकर अनुत्पादक हंगामा कर कार्यवाही ठप करा देना आम बात है। संसद में शोर-शराबा, वेल में जाकर नारेबाजी करना, एक-दूसरे पर निजी कटाक्ष करना यहां तक कि कई बार हाथापाई पर उतारू हो जाना आज संसद की आम तस्वीर है। आखिर सियासी पार्टियों और सांसदों का बर्ताव इतना अराजक क्यों हो गया है? क्या आज पार्टियों के निहित स्वार्थों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया है। सांसदों के रवैये को देखते हुए लगता नहीं है कि उसकी मंशा देश के विकास की योजनाएं बनने देने की है। ऐसा लग रहा है कि सांसदों ने पूरे संसदीय लोकतंत्र को बंधक बना लिया है। क्योंकि लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही आजकल टीवी पर लाइव दिखाई जाती है, लिहाजा देश का आम आदमी भी वह सब कुछ देखता है, जो संसद में रोज हो रहा है। आखिर सांसद लोगों के सामने अपनी क्या छवि पेश कर रहे हैं? जरा सोचिए कि देश के लोगों के मन में आपकी क्या छवि बनती जा रही है? यह सच है कि इस गिरावट का कारण यह है कि राजनीति आज संख्या का खेल बन गई है जिसके चलते क्षेत्रीय क्षत्रप अपनी मनमर्जी कराने के लिए दबाव डालते हैं। वे न केवल दादागिरी की राजनीति में विश्वास करते हैं अपितु सफल संसद सत्र के पैमाने को ह्यजिसकी लाठी, उसकी भैंसह्ल भी बनाते हैं। आज विषय-वस्तु की बजाय आकार महत्वपूर्ण बन गया है जिसके चलते संसद में गली-मोहल्लों के झगड़ों जैसे दृश्य देखने को मिलते हैं। इसलिए इस गिरती राजनीतिक संस्कृति और नैतिक मूल्यों में संसदीय कार्रवाई में राजनीति को प्रभावित करने वाली विषय सामग्री नहीं मिलती है। कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि संसद अब महज एक स्कोरिंग क्लब बन कर रह गई है। बहुतों को पता होगा कि संसद की एक मिनट की कार्यवाही पर ढाई लाख रुपए खर्च हो जाते हैं। इस तरह एक दिन की सामान्य कार्यवाही पर औसतन छह करोड़ रुपए का खर्च आता है। जिस दिन कार्यवाही लंबी चलती है, उस दिन खर्च और बढ़ जाता है। जरा सोचिए कि यह पैसा आता कहां से है। जाहिर है कि देश के आम लोगों की जेब से ही आता है। लोकतंत्र में इससे बड़ा और क्या मजाक होगा कि संसद की कार्यवाही लगातार ठप रहे या फिर दिन भर रह-रह कर हंगामा होता रहे, फिर भी एक दिन में छह करोड़ रुपए खर्च हो जाएं। जरा सोचिए कि छह करोड़ रुपए से क्या-क्या हो सकता है? हजारों गांवों की कि स्मत संसद की एक दिन की कार्यवाही पर होने वाले खर्च से बदल सकती है। लाखों गरीब लड़कियों की शादी हो सकती है। लघु और कुटीर उद्योगों से हजारों नौजवानों की कि स्मत संवर सकती है। लेकिन सांसद यह सब नहीं सोचते। विकास की योजनाएं भले न बनें, व्यक्तिगत हित जरूर सुधरने चाहिए। क्या सांसद देश से ऊपर हो गए हैं?

एक बात और सारे सांसद हंगामेबाज हों, ऐसी बात नहीं हैं। जो कामकाज को लेकर गंभीर हैं, वे कुछ नहीं कर पाते। सवाल है कि सांसद हर बार माहौल क्यों नहीं बनाते? क्या सांसद केवल हंगामा करने के लिए ही पहुंचते हैं? सांसदों ने लोकसभा को पंगु बना कर रख दिया है। हक़ीकत यह है कि लोकतंत्र का लोक यानी देश की जनता लोकसभा का चुनाव सीधे तौर पर करती है। ऐसे में अप्रत्यक्ष रूप से चुने गए सदन को लोक के सदन यानी लोकसभा की गरिमा का सम्मान करना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि लोकसभा में हुए हर काम में अड़ंगा डाल दिया जाए। लोकसभा में तय दिनों में सभी सांसदों को तीन-तीन मिनट ही सही, अपने चुनाव क्षेत्र के बारे में बोलने दिया जाए। बार-बार हंगामा करने वाले सांसदों को चिन्हित किया जाए और उनकी सूची प्रचारित कराई जाए। ऐसे नियम बनाए जाएं कि वेल में आने या पर्चा लहराने या दूसरा किसी भी कि स्म का हंगामा करने वाले सांसद के खिलाफ खुद-ब-खुद कोई तय कार्यवाही हो जाए। कुछ सांसद वॉकआउट करने के बाद दोबारा सदन में क्यों आ जाते हैं? केवल दिखावा करने के लिए ऐसा करते हैं, उन्हें देश के विकास से कोई लेना-देना नहीं है।

वे संसद में कुछ कर नहीं पा रहे हैं और उधर उनके लोकसभा क्षेत्र की जनता त्रस्त, क्योंकि वे उनकी समस्याएं सुलझा ही नहीं पा रहे हैं, क्योंकि संसद में केवल हंगामा हो रहा है। इसलिए संसद को अखाड़ा बनने से रोकें। नेतृत्व को भी अपनी बात समझाएं, उनके हर गलत-सही आदेश का आंख मूंदकर पालन न करें। लोकतंत्र के पवित्र मंदिर की गरिमा बचाए रखना सांसदों का प्रथम काम है। संसद को महत्वहीन बनाने के खतरनाक आयामों को शायद ये लोग नहीं समझते हैं। हमारी संसद हमारे राष्ट्र की आधारशिला है जो जनता का प्रतिनिधित्व करती है और जिससे अपेक्षा की जाती है कि वह हमारे राष्ट्रीय हितों पर संप्रभु निगरानी रखे। सरकार संसद के प्रति उत्तरदायी है और सरकार का अस्तित्व उस पर लोकसभा के विश्वास पर निर्भर करता है। अतः समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है।

प्रतिबंधित हो मानव बलि लेने वाली अंधविश्वास पूर्ण तंत्र-मंत्र विद्या

इंसान यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि धर्म–आस्था व अंधविश्वास के इस घालमेल ने मनुष्य को कितना क्रूर, अमानवीय व हिंसक बना दिया है? रोज कहीं न कहीं गांव–मुहल्ले के बलशाली लोग किसी न किसी गरीब परिवार के किसी व्यक्ति को खासकर महिला को चुड़ैल, भूतनी या डायन बता कर उसपर मनमाना अत्याचार करते हैं। किसी की पीट पीटकर हत्या कर दी जाती है तो किसी को रस्सियों या लोहे की जंजीरों से जकड़कर किसी पेड़ से बाँध दिया जाता है। उसे भूखा प्यासा रखकर प्रताड़ित किया जाता है। ऐसी अनेक पीड़िताओं के साथ दुष्कर्म भी किये जाते हैं। ऐसे मामलों में नाममात्र कार्रवाई भी होती है। परन्तु इस देश में जितना न्याय किसी गरीब को मिलता है यहां भी उतना ही न्याय किसी पीड़ित व प्रताड़ित व्यक्ति को भी मिलता है अर्थात नाममात्र या बिल्कुल नहीं। इसी अंधविश्वास की श्रेणी में आती है तांत्रिक विद्या। इस विद्या पर भी धर्म व अन्धविश्वास का जामा चढ़ाकर हमारे देश में जमकर हैवानियत का खेल खेला जा रहा है। इसी की आड़ में बलात्कार, हत्या, धन ऐंठना, ब्लैक मेलिंग आदि न जाने क्या क्या हो रहा है। शत प्रतिशत झूठ व पाखंड पर आधारित तांत्रिक विद्या का इतना बड़ा प्रभाव क्षेत्र है कि प्राय: पढ़े लिखे लोग यहाँ तक कि मंत्री व अधिकारी भी किसी न किसी लालचवश इस जाल में फँस जाते हैं। देश में तमाम ऐसे तांत्रिक हुए हैं जिनकी पहुँच सत्ता के सर्वोच्च शिखर तक भी रही है।

निर्मल रानी
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं

भारतवर्ष एक ऐसा अद्भुत देश है जहां 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क अनाज देकर उसी देश के लोगों को यह भी समझा दिया जाता है कि यदि तीसरी पारी में सत्ता हासिल हुई तो देश को विश्व की तीसरी महाशक्ति बना देंगे। शायद इन्हीं ह्यराशन लाभार्थियों ह्य के बल पर? जहाँ चंद्रयान छोड़े जा रहे हों विकास की नित नई गाथायें लिखने के दावे किये जा रहे हों। उसी देश में आज के आधुनिक व वैज्ञानिक दौर में अंधविश्वास व पाखंड से भरी ऐसे अनेक खबरें आये दिन सुनाई देती हैं जिन्हें देख पढ़ कर रूह काँप जाती है। इंसान यह सोचने के लिए मजबूर हो जाता है कि धर्म-आस्था व अंधविश्वास के इस घालमेल ने मनुष्य को कितना क्रूर, अमानवीय व हिंसक बना दिया है? रोज कहीं न कहीं गांव-मुहल्ले के बलशाली लोग किसी न किसी गरीब परिवार के किसी व्यक्ति को खासकर महिला को चुड़ैल, भूतनी या डायन बता कर उसपर मनमाना अत्याचार करते हैं। किसी की पीट पीटकर हत्या कर दी जाती है तो किसी को रस्सियों या लोहे की जंजीरों से जकड़कर किसी पेड़ से बाँध दिया जाता है। उसे भूखा प्यासा रखकर प्रताड़ित किया जाता है। ऐसी अनेक पीड़िताओं के साथ दुष्कर्म भी किये जाते हैं। ऐसे मामलों में नाममात्र कार्रवाई भी होती है। परन्तु इस देश में जितना न्याय किसी गरीब को मिलता है यहां भी उतना ही न्याय किसी पीड़ित व प्रताड़ित व्यक्ति को भी मिलता है अर्थात नाममात्र या बिल्कुल नहीं।

इसी अंधविश्वास की श्रेणी में आती है तांत्रिक विद्या। इस विद्या पर भी धर्म व अन्धविश्वास का जामा चढ़ाकर हमारे देश में जमकर हैवानियत का खेल खेला जा रहा है। इसी की आड़ में बलात्कार, हत्या, धन ऐंठना, ब्लैक मेलिंग आदि न जाने क्या क्या हो रहा है। शत प्रतिशत झूठ व पाखंड पर आधारित तांत्रिक विद्या का इतना बड़ा प्रभाव क्षेत्र है कि प्रायः पढ़े लिखे लोग यहाँ तक कि मंत्री व अधिकारी भी किसी न किसी लालचवश इस जाल में फँस जाते हैं। देश में तमाम ऐसे तांत्रिक हुए हैं जिनकी पहुँच सत्ता के सर्वोच्च शिखर तक भी रही है। परन्तु चूँकि इस तरह की अंधविश्वास, झूठ व पाखंड पूर्ण विद्याओं को विज्ञान कोई महत्व नहीं देता, इसमें किसी तरह की नाममात्र तार्किकता व तर्कशीलता नहीं होती इसलिये झूठ आधारित इस स्वयंभू विद्या को जड़मूल से समाप्त करने में ही हमारे समाज का भला है। परन्तु बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि चुड़ैल, भूतनी या डायन तथा तांत्रिक विद्या के चक्करों में सदियों से उलझे हमारे देश की सरकारें भी इस ह्यनासूर ह्य रुपी अन्धविश्वास व पाखण्ड से देश को निजात नहीं दिला सकीं। इसका कारण भी बड़ा रोचक है। दरअसल सरकारें व इसमें शामिल तमाम शातिर नेता चाहते भी यही हैं कि देश की भोली भाली जनता इन्हीं बे सिर पैर की बातों में उलझी रहे। अंधविश्वास में डूबी रहे। विज्ञान, तर्क और शिक्षा की बात ही न करे। तंत्र मन्त्र और छू मन्तर के बल पर अपनी समस्याओं का समाधान तलाशे। ऐसा करने से अन्धविश्वास को बढ़ाने व संरक्षण देने वाले तमाम निठल्ले लोगों को रोजगार मिल जाता है। ऐसे लोगों पर धर्म की अफीम का गहरा रंग चढ़ता है। बाद में यही लोग 80 करोड़ लाभार्थियों की श्रेणी में आकर उस सत्ता के एहसानमंद होते हैं जिसने उन्हें मुफ़्त में राशन देने का वादा किया है।

परन्तु सत्ता के इस स्वार्थ और लोगों को अशिक्षित रखने के चलते इस देश में कुछ ऐसी घटनायें भी हो जाती हैं जिससे हमारे देश की न केवल बदनामी होती है बल्कि दुनिया यह भी सोचने के लिये मजबूर हो जाती है कि चंद्रयान छोड़ने वाले देश में आखिर हो क्या रहा है? मिसाल के तौर पर गत दिनों कानपुर देहात के घाटम पुर इलाके के भदरस गांव की एक क्रूरतम घटना को लेकर एक अदालती फैसला आया जिसने तीन वर्ष पूर्व यानी 14 नवंबर 2020 की भयावह घटना की याद फिर ताजा कर दी। दरअसल कानपुर देहात के घाटम पुर इलाके के भदरस गांव में 14 नवंबर 2020 को छः वर्ष की एक मासूम बच्ची का अपहरण कर पहले उसके साथ रेप किया गया फिर उसकी हत्या कर दी गई थी। इतना ही नहीं बल्कि आरोपियों ने वहशीपन की सारी हदें पार करते हुए उसका कलेजा निकालकर रोटी के साथ खाया था। इस वहशीपन का कारण यह था कि किसी तांत्रिक ने एक दम्पति को बेटा पैदा करने के लिये यह उपाय बताया था। इसी मामले में स्थानीय अदालत ने चार दोषियों को सजा सुनाई है। तीन साल तक चली सुनवाई के बाद पिछले दिनों कानपुर देहात के अपर जिला जज शमीम रिजवी की अदालत ने आरोपी दंपती परशुराम व सुनैना को आजीवन कारावास और 20-20 हजार अर्थदंड की सजा सुनाई है। वहीं दंपत्ति के भतीजे अंकुल और उसके साथी वीरेन को पूरे जीवन काल का कारावास और 45-45 हजार अर्थदंड का लगाया है। यह इस देश की पहली घटना नहीं है। ऐसे तांत्रिकों के चक्कर में लाखों लोगों की जानें जा चुकी हैं, सामूहिक आत्म हत्याएं तक देश की राजधानी दिल्ली में हो चुकी हैं। परन्तु इन सबके बावजूद तांत्रिकों का व्यवसाय फल फूल रहा है। तांत्रिक विद्या व व्यवसाय का प्रचार करने वाले तमाम पोस्टर हैंडबिल पम्फलेट सार्वजनिक स्थानों, बसों ट्रेन्स पार्कों में यहाँ वहां चिपके देखे जा सकते हैं। इनमें उनके संपर्क नंबर और पता भी होता है। परन्तु सरकार व प्रशासन आँखें मूँद कर झूठ व मक्कारी आधारित इस व्यवसाय को फलते फूलते देखती रहती है। और देखे भी क्यों न? जब स्वयं सरकार के मंत्री नींबू और हरी मिर्च लटकाकर टोटके करते फिरें, पूजा पाठ दुआ ताबीज का सहारा लेकर अवैज्ञानिकता को बढ़ावा देते दिखाई दें तो इसका मकसद साफ है कि ऐसे सभी अंधविश्वासी व पाखंडपूर्ण गतिविधियों को सरकार का संरक्षण हासिल है। और सरकार स्वयं चाहती है कि लोग आज के आधुनिक व वैज्ञानिक दौर में भी अंधविश्वास व पाखंड में उलझे रहें। अन्यथा एक कुशल, प्रगतिशील व वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने वाली सरकार को तो देशवासियों को अंधविश्वास व पाखण्ड से मुक्ति दिलाने व गरीबों की जान माल सुरक्षित करने हेतु पूरे देश में तंत्र मन्त्र विद्या और दूसरे सभी ढोंग, झाड़ा, तावीज, कण्डा आदि तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित कर देना चाहिए और लोगों को अंधविश्वास से दूर रखना तथा उनमें वैज्ञानिक सोच का संचार करना चाहिये।

अज्ञात बीमारी का शिकार हो रहे पहाड़ी इलाकों के मवेशी

बाबर नफीस

एक ओर जहां इंसान कोरोना जैसी जानलेवा बीमारी से लड़ रहा है तो वहीं दूसरी ओर केंद्रशासित प्रदेश जम्मू के डोडा स्थित पहाड़ी इलाकों में मवेशियों के बीच एक अज्ञात बीमारी ने कोहराम मचा रखा है. जिसने अब तक कई पालतू मवेशियों की जाने ले ली हैं. ये मवेशी गरीबों की आय का प्रमुख स्रोत हैं. ऐसे में इन जानवरों की मौत उन्हें आर्थिक रूप से नुकसान पहुंचा रहा है. क्षेत्र का पशु चिकित्सा विभाग भी अभी तक इस बीमारी के कारणों और इसके समुचित इलाज का पता लगाने में असफल रहा है. ज्ञात हो कि डोडा जिले के ठाठरी उपमंडल में तीन तहसीलें हैं. इन तीनों तहसीलों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र और गांव दूर दराज पहाड़ी इलाकों पर आबाद हैं. इनमें से ज्यादातर पंचायतें सर्दियों के चार महीने बर्फ से ढकी रहती हैं और अन्य क्षेत्रों से पूरी तरह से कट जाती हैं. इस दौरान जहां स्थानीय लोगों को कई प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है वहीं यहां का विकास कार्य भी ठप हो जाता है. जिससे प्रशासनिक स्तर पर ग्रामीणों को कोई मदद नहीं मिल पाती है. वर्तमान में, इन क्षेत्रों के लोगों की आज सबसे बड़ी समस्या मवेशियों में फैल रही यह अज्ञात बीमारी है. इस संबंध में स्थानीय लोगों का कहना है कि एक सप्ताह पहले उनके मवेशियों को बुखार आता है. जिससे धीरे धीरे वह खाना पीना बंद कर देते हैं और फिर कुछ ही दिनों में उनकी मौत हो जाती है. गौरतलब है कि इन दूर दराज ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए मवेशी पालन सबसे बड़ी आजीविका का माध्यम है. यह उनके आर्थिक सशक्तिकरण का भी एक अहम जरिया है. इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस इलाके के कई घर ऐसे हैं जहां सैकड़ों की संख्या में मवेशी पाले जाते हैं. इस संबंध में स्थानीय लोगों ने कई बार प्रशासन से गुहार लगाई कि इस ओर गंभीरता से ध्यान दिया जाए और मवेशियों की जान बचाने के इंतजाम किया जाएं. लेकिन अब तक इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की गई है और न ही प्रशासन द्वारा गांव में कोई पशु चिकित्सक भेजा गया है. जिससे लोगों को काफी परेशानी हो रही है. इस संबंध में एक सामाजिक कार्यकर्ता मुहम्मद इकबाल कहते हैं कि सर्दी के मौसम में इन पहाड़ी इलाकों के निवासियों को कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. यह क्षेत्र तीन महीने तक बर्फ के कारण बंद रहता है. यदि उनकी इन सभी समस्याओं का समाधान सर्दियों से पहले कर लिया जाए तो इस क्षेत्र के लोगों का सामान्य जनजीवन प्रभावित नहीं हो सकता है. वहीं, एक अन्य सामाजिक कार्यकर्ता आदिल हुसैन कहते हैं कि मवेशियों के बीच यह अज्ञात महामारी हर साल इस इलाके में फैलती है, जिसमें सैकड़ों मवेशियों की जान चली जाती है. जबकि यह मवेशी इन पहाड़ी इलाकों के लोगों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है. उन्होंने कहा कि हर घर में कम से कम दो भैंस और एक गाय पाली जाती हैं. जिसका न केवल दूध बेचकर बल्कि उसका गोबर भी बेच कर यह ग्रामीण अपनी आय में वृद्धि करते हैं. ऐसे में इस नामालूम बीमारी ने उनकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं. ये समस्या इसलिए भी गंभीर हो गई है, क्योंकि इन मवेशियों के लिए दवा मिलना भी बहुत मुश्किल हो गया है. ग्रामीण बताते हैं कि जानवरों की मौत से फसलों को भी बहुत नुकसान हो रहा है, क्योंकि स्थानीय किसान खेतों में देसी खाद डालने के लिए इन मवेशियों का गोबर खरीदते हैं और खेतों में रासायनिक खाद की जगह उपयोग करते हैं. एक अन्य स्थानीय महिला सायमा बानो ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहती हैं कि बीमारी से मवेशियों की मौत से होने वाले नुकसान का कोई मुआवजा भी नहीं मिलता है. जबकि प्रशासन को इस ओर ध्यान देना चाहिए ताकि गरीबों के नुकसान की पूर्ति हो सके. उन्होंने बताया कि इस संबंध में हमने डोडा के जिला विकास आयुक्त विश्वपाल महाजन को पहले ही सूचित

संक्षिप्त खबरें

टेंडरिंग को लेकर बिना कोरम पूरा किए कार्यपालक पदाधिकारी ने निकाला निविदा

छपरा कार्यालय। दिघवारा नगर पंचायत में साफ सफाई के टेंडरिंग में बिना कोरम को पूरा किए बगैर कार्यपालक पदाधिकारी द्वारा निविदा निकालने की शिकायत को लेकर नगर मुख्य पार्षद ने सोनपुर एसडीएम को पत्र लिखकर जांचोपरांत निविदा का समय निर्धारित करने की मांग की है ।मुख्य पार्षद नीतू देवी ने कहा है कि बिना सशक्त कमिटी की बैठक कराए व नगर मुख्य पार्षद की सहमति के बगैर कार्यपालक पदाधिकारी ने अपनी मर्जी से एनआईटी के साथ निविदा हेतु प्रकाशन कराया है ।जो कही से भी नियमसंगत नही है ।अतः इसे अपने स्तर से जांचोपरांत सशक्त कमिटी के बैठक उपरांत साफ सफाई हेतु निविदा प्रकाशन की दूसरी तिथि निर्धारित करने की मांग की है ।

पुलिस ने 5 बाइक के साथ एक चोर को किया गिरफ्तार

परसा ।थाना क्षेत्र के मुजौना गांव में पुलिस ने छापेमारी कर एक घर में चोरी कर रखे गए पाच बाइक बरामद किया ।साथ ही चोरी के बाइक के साथ चोर को भी गिरफ्तारी करने में सफलता हासिल किया ।थानाध्यक्ष आशुतोष कुमार सिंह ने बताया कि गुप्त सूचना मिला था कि थाना क्षेत्र के मुजौना गांव निवासी मोहम्मद इन्तेयाज के घर में चोरी के पांच बाइक रखा गया है ।जिसपर पहल करते हुए बुधवार को छापेमारी किया गया ।छापेमारी में एक अपाची,चार सपेलेंडर के साथ मोहम्मद इम्तेयाज का पुत्र 18 बर्षीय पुत्र मोहम्मद मिस्टर को हिरासत में रख पुलिस पूछ ताछ कर रही है ।युवक के निशानदेही पर छापेमारी कर रही है ।थानाध्यक्ष ने बताया कि पाच बाइक में दो बाइक की सत्यापन हुआ ।जिसमें एक सपेलेंडर बाइक दिघवारा तथा एक सपेलेंडर बाइक दरियापुर का शामिल है ।तीन बाइक की सत्यापन किया जा रहा है ।

आठ आश्रितों को मिला जन वितरण प्रणाली दुकान की अनुज्ञप्ति

छपरा कार्यालय ।गुरुवार को जिला पदाधिकारी अमन समीर की अध्यक्षता में जन वितरण प्रणाली विक्रेता अनुकंपा समिति कै बैठक समाहरणालय परिसर अवस्थित कार्यालय कक्ष में आहूत की गई। बैठक में पूरे जिले से प्राप्त कुल 30 मामलों के कागजातों की जांच पड़ताल की गई। इनमें से अंतिम रूप से कुल 8 आश्रितों को नई अनुज्ञप्ति प्रदान करने का निर्णय जिला पदाधिकारी महोदय के द्वारा लिया गया। इनमें सदर अनुमंडल के पांच तथा मढ़ौरा अनुमंडल के कुल तीन आश्रितों के नाम शामिल हैं। सदर अनुमंडल के आश्रितों के नाम इस प्रकार से हैं- दिवाकर कुमार सिंह, पिता- स्वर्गीय रवि शंकर सिंह,ग्राम- आमडाढी,प्रखंड- एकमा ।राजीव कुमार ,पिता- स्वर्गीय भोला सिंह ग्राम-एकडेरवा मसुरिया, प्रखंड- मकेर ।कुमारी पूनम, पति- रंजय कुमार सिंह, ग्राम-कुवांरी आजम, प्रखंड- परसा ।रंजय कुमार सिंह पिता- स्वर्गीय योगेंद्र सिंह, ग्राम- चंदउपुर,प्रखंड- मांझी ।अविनाश कुमार,पिता-स्वर्गीय दिवाकर कुमार दिग्गज, ग्राम- बिशुनपुर प्रखंड- सदर। मढ़ौरा अनुमंडल के अंतर्गत आश्रितों के नाम इस प्रकार से हैं-मुन्ना सिंह, प्रखंड- अमनौर ।इनके अलावा कुल अपूर्ण प्रतिवेदन वाले 15 प्रस्तावों पर पूर्ण प्रतिवेदन के साथ प्रस्ताव अगली बैठक में रखने का निर्देश जिला पदाधिकारी के द्वारा दिया गया।

एक नशेबाज सहित चार भेजे गये जेल

लहलादपुर। जनता बाजार थाना की पुलिस ने एक नशेबाज सहित चार व्यक्तियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. सिवान जिला के भगवानपुर हाट्ट थाना क्षेत्र के माघर गांव निवासी चइत मांझी को शराब के नशे में पुलिस ने गिरफ्तार किया, वहीँ भिन्न-भिन्न कांडो में बहुत दिनों से फरार चल रहे तीन वारंटियों को भी गिरफ्तार कर चारो को जेल भेज दिया गया। वारंटियों में जनता बाजार थाना क्षेत्र के लहलादपुर गांव निवासी राजेश साह, जनता बाजार निवासी राजु गिरि तथा शोभीपुर गांव के संतोष चौधरी शामिल हैं।

अभिभावकों को दिया अल्टीमेटम , बच्चों की अनुपस्थिति का दिया हवाला

इसुआपुर। प्रखंड के उच्च विद्यालय सह इंटर कॉलेज महुली चकहन के प्रधानाध्यापक द्वारिका नाथ गिरी ने विद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं की मनमानी तथा अनुपस्थिति को लेकर उनके अभिभावकों को अल्टीमेटम दिया है। जिसमें कहा गया है कि उनके बच्चे विद्यालय में अक्सर अनुपस्थित रहते हैं। वहीं अपनी मनमानी भी करते हैं। अगर विद्यालय आते भी हैं ,तो हाजिरी बनवाकर किसी बहाने स्कूल से बाहर चले जाते हैं। वहीं स्कूल का गेट बंद होने पर भी छात्र चाहरदीवारी फांदकर चले जाते हैं। खासकर मैट्रिक और इंटर के छात्र काफी शरारती हो गए हैं। शिक्षा विभाग के नियमों का हवाला देते हुए उन्होंने अभिभावकों को अल्टीमेटम देते हुए कहा है कि 75% की उपस्थिति नहीं होने पर बोर्ड परीक्षा के लिए उनका पंजीयन रद्द कर दिया जाएगा।

ट्रक से 6624 लीटर अंग्रेजी शराब बरामद, चालक गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

भेल्दी(सारण) ।छपरा-मुजफ्फरपुर एनएच 722 पर भेल्दी थाने के राजा चौक स्थानीय थाने के समीप बुधवार की रात पुलिस ने छापेमारी कर एक ट्रक पर लदे 748 कार्टन अंग्रेजी शराब को बरामद कर लिया ।पुलिस ने इस मामले में चालक को गिरफ्तार कर लिया ।पकड़ा गया चालक मदन लाल राजस्थान के बाड़मेर जिले के रामसर थाने के रामदेव मंदिर चारा गांव के जेता राम का पुत्र बताया जाता है।

बताते चलें कि मद्य निषेध की टीम द्वारा भेल्दी पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि भेल्दी थाना क्षेत्र में अंग्रेजी शराब की एक बड़ी खेप उतरने वाली है ।बस क्या था ?भेल्दी थाने प्रभारी थानाध्यक्ष निरंजन कुमार व पुलिस बल के साथ छपरा-मुजफ्फरपुर एनएच 722 पर राजा चौक के समीप जैसे ही पहुंचे कि चालक ट्रक को भगाने लगा ।पुलिस ने ट्रक की तलाशी ली सैकड़ो कार्टन अंग्रेजी शराब को देखकर भौचक रह गए ।पुलिस ने ट्रक पर लदे इम्पेरियल ब्लू के 748 कार्टन शराब बरामद करने में सफलता हासिल कर ली ।6624 लीटर उक्त शराब की कीमत लाखों में बताई जा रही है।

ट्रक के अंदर धान के लावा के बोरे के नीचे छुपाकर रखे गए थे अंग्रेजी शराब: शराब के बरामद ट्रक के अंदर धान के लावा के बोरे के नीचे शराब छुपाकर रखे गए थे ।बरामद ट्रक का नंबर यूपी का हैं ।बताया जाता है कि उक्त शराब पंजाब के लुधियाना से मुजफ्फरपुर जा रही थी ।समाचार प्रेषण तक प्राथमिकी दर्ज करने की प्रक्रिया चर रही थी।

भेल्दी में सालों पहले एक करोड़ रूपए के पकड़े गए थे अंग्रेजी शराब: भेल्दी थाना क्षेत्र में अंग्रेजी शराब की बरामदगी कोई पहली घटना नहीं हैं ।यहां अक्सर शराब की बड़ी खेप पुलिस द्वारा पकड़े जाते रहे हैं ।19 जनवरी 22 को छपरा-मुजफ्फरपुर एनएच 722 पर सरायबक्स के समीप मद्य निषेध व भेल्दी पुलिस की संयुक्त छापेमारी में दो ट्रकों पर लोड 10 हजार लीटर अंग्रेजी शराब की बरामदगी की गई थी ।बरामद शराब की कीमत करीब एक करोड़ रुपए थी ।20 फरवरी को भेल्दी गांव में पुलिस ने छापेमारी कर 257 कार्टन अंग्रेजी शराब को बरामद किया था ।इस कांड में पुलिस ने लाखों के शराब के साथ दो पिकअप वैन व एक जायलो गाड़ी को भी बरामद किया था ।इसके बावजूद भी शराब का कारोबार जारी है और धंधेबाजो का मनोबल काफी ऊंचा है।

खेत की पटवनी कर वापस घर लौट रहे दो युवकों को अज्ञात वाहन ने कुचला

प्रात : किरण संवाददाता

माँझी ताजपुर मुख्य मार्ग पर कबाड़ी दुकान के समीप बीती रात्रि खेत की पटवनी कर वापस घर लौट रहे दो युवकों को अज्ञात वाहन ने कुचल डाला। दोनों युवकों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। दोनों मृतक माँझी थाना क्षेत्र के ताजपुर पूरब टोला निवासी क्रमशः वीरेंद्र यादव के 21 वर्षीय पुत्र दीपक यादव एवं रामानंद यादव के 22 वर्षीय पुत्र वीरेंद्र यादव बताए जाते हैं। दोनों का शवों को अपने कब्जे में लेकर माँझी थाना पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया।

परिजनों ने बताया की दोनों युवक खेत का पटवन करके बुधवार की देर रात वापस अपने घर लौट रहे थे तभी पीछे से आ रही एक अज्ञात चारपहिया वाहन उन्हें रौंदते हुए निकल गई। घटना की सूचना मिलने पर पहुँची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए छपरा भेज दिया। गुरुवार को पोस्टमार्टम के बाद शव के पहुँचते ही लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई तथा परिजनों के रुदन क्रन्दन से माहौल गमगीन हो गया। बाद में एक साथ दोनों की शवयात्रा निकली तथा सरयु नदी के किनारे ड्यूमाइगढ घाट पर दाह संस्कार सम्पन्न हो गया। बताते चलें कि सड़क किनारे झोंपड़ी लगाकर चाय पकौड़ी की दुकान चलाने वाले मृतक दीपक यादव की शादी दो वर्ष पहले बलिया जिले के धतूरी टोला निवासी ललन यादव की पुत्री सीता देवी के साथ हुई थी। मृतिका की पत्नी गर्भवती है तथा इसी माह मां बनने वाली है। मृतक दो भाइयों में बड़ा था था पाँच बहनों में से चार की शादी हो चुकी हैं। एक भाई व एक बहन की अभी शादी नही हुई है। उधर दूसरे मृतक बीरेन्द्र कुमार यादव तीन भाइयों व चार बहनों में सबसे छोटा था वह गुजरात में रहकर मजदूरी करता था। वह कुछ ही दिनों पूर्व घर आया था।

प्रशांत किशोर का बेहतर सोच से युवा वर्ग हो रहे हैं प्रभावित: चांदनी प्रकाश

चांदनी प्रकाश ने ली जनसुराज की सदस्यता, अन्य लोगों ने भी थामा दमन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा ।प्रशांत किशोर का सोच बेहतर है, पदयात्रा से जनसुराज को एक नया आयाम मिला है, लगातार प्रशांत किशोर से लोग जुड़ रहे हैं। उक्त बातें भावी मेयर प्रत्याशी चांदनी प्रकाश ने गुरुवार को हथुआ मार्केट स्थित अपने आवास पर जनसुराज द्वारा आयोजित सदस्यता ग्रहण के अवसर पर पत्रकारों से बात करते हुए कही। सदस्यता ग्रहण करने के बाद कार्यकताओं एवं मीडिया को संबोधित करते हुए चांदनी प्रकाश ने कहां कि छपरा वासियों के सहयोग से निरंतर मैं आगे बढ़ रही हूं, मुझे अपने समाज के साथ-साथ अन्य वर्गो का भी पूरा समर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि जनसुराज की सदस्यता से पूर्व मैंने काफी अध्ययन किया तब जाकर मैं जनसुरज में आने का निर्णय लिया है, इसके लिए प्रशांत किशोर के साथ-साथ पूरी टीम को मैं धन्यवाद देती हूं। उन्होंने प्रेस मीडिया को संबोधित करते हुए यह भी कहा अब मैं जनसुरा से जुड़ चुकी हूं, ऐसे में राय- विचार करने के बाद शीघ्र मेयर चुनाव के लिए विधिवत घोषणा की जाएगी। मेयर पद के लिए मैं क्षेत्र में घूम भी रही हूं, और सभी लोगों का मुझे अपार समर्थन भी मिल रहा है। इस अवसर पर विधान पार्षद इंजीनियर सच्चिदानंद राय ने संबोधित करते हुए कहा कि प्रशांत किशोर का 15 महीना से पद यात्रा काफी सफल रहा है, और लगातार खास कर युवा वर्ग का बड़ा योगदान मिल रहा है। उन्होंने कहा कि चांदी प्रकाश एक सक्षम और समाजसेवी महिला है, इनके जुड़ने से पार्टी को काफी मजबूती मिलेगी, क्योंकि समाज के लोगों में चांदनी प्रकाश की पकड़ मजबूत है। चांदनी प्रकाश को मेयर पद का चुनाव लड़ने पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि मेयर पद के लिए चांदनी प्रकाश बेहतर और सक्षम महिला है, राय शुमारी के बाद इस पर निर्णय लिया जाएगा। आने वाले दिनों में प्रशांत किशोर एक बेहतर विकल्प के रूप में बिहार वासियों के लिए उभरेगा। इस अवसर पर चांदनी प्रकाश के साथ-साथ दर्जनों से अधिक लोगों ने जनसूराज का दामन थामा। जनसुराज द्वारा आयोजित समारोह में सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्यों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम में जनसुराज के जिला अध्यक्ष राम पुकार मेहता, ललितेश्वर नाथ तिवारी, अशोक सिंह, खुर्शीद नैयर, प्रवक्ता कुलदीप महासेठ, संपत राम रही, पीसी ज्वेलर्स के मुन्नाजी एवं राकेश सोनी सहित बड़ी संख्या में व्यवसाय वर्ग के लोग और जनसुराज के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

60 व्यक्तियों का दल हुआ रवाना

तिविलगंज ।सारण जिले से दो दिवसीय भ्रमण दर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत 60 मत्स्य जुड़े व्यक्तियों का समूह सिवान एवं गोपालगंज जिलों में भ्रमण दर्शन कार्यक्रम में प्रस्थान किया इस योजना में जिले से बाहर जाकर किसान मत्स्य के क्षेत्र में जो अद्यतन प्रगति की जा रही है उसके बारे में किसान देखेंगे पढ़ेंगे एवं समझेंगे किसानों के द्वारा मत्स्य विकास से संबंधित जैसे उन्नत मत्स्य पालन मछलियों में होने वाले बीमारी एवं निदान। बायोफ्लाक्स, मिश्रित मत्स्य पालन , मत्स्य बीज हैचरी आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा किसानों के द्वारा संबंधित मत्स्य पालक से साक्षरता कर अपने ज्ञान को बढ़ाएंगे मत्स्य पालन से संबंधित जानकारी प्राप्त करेंगे मत्स्य के उत्पादन में कैसे वृद्धि हो इस विषय को भी समझेंगे इस योजना का मुख्य देश किसानों के बीच मत्स्य पालन में हो रहे गतिविधि का अद्यतन दर्शन करना है।

टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी एवं कांग्रेस सांसद राहुल गांधी द्वारा देश के उपराष्ट्रपति का अपमान माफी के लायक नहीं : सिंह

छपरा कार्यालय। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा द्वारा देश के उपराष्ट्रपति को अपमान करने वाले टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी का पुतला फूंक कर प्रदर्शन किया।

पुतला दहन कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष रणजीत कुमार सिंह ने कहा कि टीएमसी सांसद कल्याण बनर्जी एवं राहुल गांधी द्वारा देश के उपराष्ट्रपति का अपमान बर्दाश्त करने एवं माफी लायक नहीं इन लोगों ने देश का माहौल को खराब और देश के सम्मान गरिमा से खिलवाड़ करने का काम किया है बिहार प्रदेश किसान मोर्चा के प्रभारी ब्रजेश कुमार रमण ने कहा कि कांग्रेस हमेशा ही देश के संवैधानिक पदों को अपमान करने का काम करती है ।

आज के प्रदर्शन एवं पुतला दहन कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के शामिल लोकसभा संयोजक डॉ धर्मेन्द्र सिंह,जिला महामंत्री, विवेक सिंह,उपाध्यक्ष रामशंकर शांडिल्य, चेतेंद्र सिंह,मनोज कुशवाहा,अनु सिंह,गायत्री देवी, मंत्री सत्यानंद सिंह, मुख्य प्रवक्ता धर्मेंद्र सिंह चौहान अर्जुन सिंह,रंजन यादव राजेश सिंह,,कार्यालय प्रभारी अर्धेन्दू शेखर, वलबन्त सिंह, , मदन कुमार सिंह गुड्डू चौधरी, अभिषेख बंटी,पूर्व जिला महांमत्री श्रीनिवास सिंह, किसान मोर्चा के जिला महामंत्री राज कुमार मांझी, अशोक सिंह, उपाध्यक्ष ददन सिंह,जितेन्द्र सिंह, हरेश्वर सिंह, राजीव तिवारी, युवा मोर्चा राजीव सिंह,चरण दास,अनूप यादव,शत्रुध्न चौधरी,मनोज उपाध्याय, मनोज पांडेय महिला मोर्चा पूजा शर्मा मीरा देवी , अल्पना सोनी सहित दर्जनों लोग शामिल हुए।

एक साल के अंदर ही वाद का निपटारा, टाटा एआईजी इश्योरेंस को सूद समेत राशि भुगतान का आदेश

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कोर्ट। सारण जिला के सहाजितपुर थाना के शेरपुर ग्राम निवासी आशा देवी पति बिधुत सिंह ने 5 दिसम्बर 2022 को उपभोक्ता आयोग में परिवाद पत्र संख्या 130/22 दाखिल किया था। जिसमें उन्होंने टाटा एआईजी इंश्योरेंस कंपनी के बिहार के ब्रांच हेड को विपक्षी बनाया था। अपने परिवाद पत्र में उन्होंने दशार्या था कि उन्होंने एक हीरो होंडा मोटरसाइकिल 6 फरवरी 2022 को 63 हजार 600 सौ रूपया में खरीदा था एजेंसी द्वारा 60 हजार 420 रूपए का 5 सालों के लिए टाटा एआईजी इंश्योरेंस कंपनी द्वारा इंश्योरेंस कराया गया था। परंतु 15 मार्च 2022 को अज्ञात चोरों द्वारा उनकी मोटरसाइकिल रिवील गंज प्रखंड कार्यालय के पास से चोरी कर ली गई। जिसकी सूचना उनके द्वारा स्थानीय थाना और इंश्योरेंस कंपनी को दी गई। उसके बाद उन्होंने अपने मोटर साइकिल क्लेम हेतु इंश्योरेंस कंपनी को आवेदन दिया परंतु इंश्योरेंस कंपनी द्वारा उनके आवेदन को कुछ त्रुटियां दिखलाते हुए। खारिज कर दिया गया। वे इंश्योरेंस कंपनी के कार्यालय में काफी दौड़ लगाई परंतु कोई सुनवाई नहीं हुई। उसके बाद उन्होंने उपभोक्ता आयोग का दरवाजा खटखटाया। उपभोक्ता आयोग में उनके अधिवक्ता दुर्गेश प्रकाश बिहारी और इंश्योरेंस कंपनी के अधिवक्ता राजेश कुमार पांडे द्वारा अपना अपना पक्ष रखा गया ।दोनों पक्षों की सुनवाई के पश्चात उपभोक्ता आयोग के अध्यक्ष वीरेंद्र प्रताप सिंह एवं सदस्य मनमोहन कुमार एवं श्रीमती मंजू सिंह द्वारा मोटरसाइकिल की बीमित राशि का भुगतान करने का आदेश इंश्योरेंस कंपनी को दिया गया साथ में वाद दाखिल करने की तिथि से 6% सुद भी देने का आदेश दिया गया है। अगर 2 माह के अंदर इंश्योरेंस कंपनी द्वारा आवेदिका को भुगतान नहीं किया जाता है तो शुद्ध की राशि 9% हो जाएगी।

एक और मामला जो 17 जुलाई 2023 को छपरा में मुफसिल थाना के कुलदीप नगर निवासी प्रहलाद शर्मा द्वारा वाद संख्या 69/23 को 17 जुलाई 2023 को आयोग में दाखिल किया था। जिसमें उन्होंने शाने बिहार बस के मालिक अब्दुल गफ्फार दहियावां छपरा को विपक्षी बनाया था। अपने आवेदन में उन्होंने दशार्या था कि उनकी लड़की की शादी 21 मई 2023 को होनी थी जिसके लिए उन्होंने शाने विहार की एक बस 34 हजार रुपए में बुक कराया था। लेकिन समयानुसार बस नहीं आया। जिसके कारण उनके शादी के कार्यक्रम में काफी अवरोध हुई और उनको दूसरा व्यवस्था करके कार्य कराना पड़ा ।आयोग ने दोनों पक्षों को बुलाकर सार्थक प्रयास करते हुए समझौता करा दिया और आवेदक द्वारा दी गई राशि का भी भुगतान विपक्षी द्वारा करा दिया गया।

मुख्य चुनाव आयुक्त की नियुक्ति विधेयक पर हुई चर्चा

2004 में छपरा आम निर्वाचन का पुनर्मतदान निर्वाचन आयोग की स्वायत्त शक्ति का परिचायक

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। । निर्वाचन आयोग से संबंधित चिर प्रतीक्षित विधेयक मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा की शर्तें और कार्यालय की अवधि) पर आज लोकसभा में चर्चा हुई। इसमें निर्वाचन आयोग से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओ पर सदन के सदस्यों ने अपनी अपनी राय रखी। मुख्य बिंदुओं की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री सह सारण लोकसभा क्षेत्र के सांसद राजीव प्रताप रुडी ने कहा कि निर्वाचन आयोग से संबंधित यह विधेयक भारतीय लोकतंत्र की मजबूती में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने संशोधनों पर अपनी राय रखते हुए कहा कि विश्व में लोकतंत्र की जननी के रूप में भारत का नाम लिया जाता है और वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। उन्होंने कहा कि भारत का चुनावी व्यवस्था एक संस्था में केंद्रित है, जो शायद पूरी दुनिया में कहीं नहीं होगा। चुनाव आयोग के प्रेस वार्त्ता करते ही पूरा देश प्रशासनिक व्यवस्था के अंदर आ जाता है। अपने संसदीय क्षेत्र सारण के वर्ष 2004 के आम निर्वाचन का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कतिपय कारणों से सम्पूर्ण लोकसभा क्षेत्र के मतदान को रद्द कर दिया गया था और पुनर्मतदान हुआ जिसमें जनता ने शांतिपूर्ण माहौल में अपना मतदान किया। यह निर्वाचन आयोग की स्वायत्त शक्ति का परिचायक है। उन्होंने इस विधेयक के लिए प्रधानमंत्री और कानून मंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पूर्ण रूप से निष्पक्ष है। मोदी सरकार हमेशा संवैधानिक मूल्यों का पालन करती है। यह विधेयक चुनाव आयोग को और अधिक सशक्त बनाएगा। है और इस विधेयक से उस संस्था को हम मजबूत करे, हमारी ताकत बढ़े और देश में लोकतंत्र प्रणाली स्थापित किया गया है वोव मजबूत हो। मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार को और कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल को इस विधेयक के लिए सदन की तरफ से बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देता हूँ। मालूम हो कि आज लोकसभा में मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त (नियुक्ति, सेवा की शर्तें और कार्यालय की अवधि) विधेयक चर्चा के बाद पास हो गया है। इस विधेयक से मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों का चयन राष्ट्रपति की ओर से एक चयन समिति की सिफारिश पर किया जाएगा। इस समिति में प्रधानमंत्री, एक कैबिनेट मंत्री और विपक्ष की ओर से लोकसभा में सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता शामिल होंगे। विधेयक में मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों को कानूनी कार्यवाही से बचाने के भी प्रावधान हैं।

फाइलेरिया उन्मूलन अभियान: आगामी 26 दिसंबर से जिले में शुरू होगा नाइट ब्लड सर्वे

छपरा कार्यालय। फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के तहत जिले में फाइलेरिया के नए मरीजों की खोज की जाएगी। इसके लिए 26 दिसंबर से जिले में नाइट ब्लड सर्वे की शुरूआत की जानी है। सर्वे में लोगों के रक्त के नमूने लिए जाएंगे और इसमें फाइलेरिया परजीवी की मौजूदगी का पता लगाया जाएगा। राज्यस्तरीय स्वास्थ्य अधिकारियों के निर्देश पर सर्वे से पूर्व जिला के सभी प्राथमिक व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के लैब टेक्नीशियनों के लिए आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाना है। जिसके लिए जिला स्तर पर 23 दिसंबर को मास्टर ट्रेनरों को प्रशिक्षण देने की तैयारी की जा रही है। प्रशिक्षण में मुख्य रूप से सभी प्रखंडों के लैब टेक्नीशियन, सीएचओ और वीबीडीएस के लिए ट्रेनिंग का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न प्रखंडों के लैब टेक्नीशियन को शामिल किया जाना है। जिसमें लैब टेक्नीशियन को बताया जाएगा कि नाइट ब्लड सर्वे के दौरान किस प्रकार खून के सैंपल लेने हैं और किस प्रकार से माइक्रोस्कोप में जांच करनी है।

सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल सिन्हा ने बताया कि जिले से फाइलेरिया को पूरी से मिटाने के लिए आईडीए कार्यक्रम बेहद जरूरी है। लेकिन आईडीए तभी सफल होगा, जब वहां एनबीएस का रिपोर्ट सटीक आएगा। नाइट ब्लड सर्वे के तहत फाइलेरिया प्रभावित क्षेत्रों की पहचान कर वहां रात में लोगों के रक्त के नमूने लिये जाते हैं। इसे प्रयोगशाला भेजा जाता और रक्त में फाइलेरिया के परजीवी की मौजूदगी का पता लगाया जाता है। फाइलेरिया के परजीवी रात में ही सक्रिय होते हैं, इसलिए नाइट ब्लड सर्वे से सही रिपोर्ट पता चल पाता। उन्होंने बताया कि एनबीएस को सफल बनाने के लिए आशा कार्यकताओं का उन्मुखीकरण किया जा रहा है। साथ ही, उन्होंने जिले के चयनित गांव के वासियों से एनबीएस को सफल बनाने के लिए सहयोग की अपील की। जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी (डीवीबीडीसीओ) डॉ दिलीप कुमार सिंह ने बताया कि जिला में 26 दिसंबर से नाइट ब्लड सर्वे होगा। इसके लिए लैब टेक्नीशियन का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा।

जीएसटी इंस्पेक्टर बनें कन्हैया, मुहल्ले में हर्ष का माहौल

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। शहर के चावल बाजार निवासी लालमुनी देवी व बिनोद प्रसाद के पुत्र कन्हैया कुमार सत्यम ने कर्मचारी चयन आयोग के द्वारा आयोजित स्नातक स्तरीय परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के बाद जीएसटी इंस्पेक्टर रूप में चयन हुआ है ।चनपटीया में प्रारंभिक पढ़ाई पूरी करने के बाद कन्हैया ने अपनी आगे की शिक्षा रक्सौल में हासिल की और स्व अध्याय के बल पर सीजीएल 2023 की परीक्षा पास कर जीएसटी इंस्पेक्टर बनें है। कन्हैया के जीएसटी इंस्पेक्टर बनने पर उनके अभिभावक सहित समाजसेवियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए। उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है। हर्ष व्यक्त करते वालो में वार्ड नंबर 21 के पार्षद प्रतिनिधि दीपक कुमार गुप्ता, हरिकिशोर प्रसाद, सुरेश प्रसाद, डॉ. हजारी प्रसाद गुप्ता, डॉ जयनारायण प्रसाद, हरिनारायण प्रसाद, जितेन्द्र सिंह, राकेश रंजन, संजय कुमार शर्मा, संजय कुमार, मीरा देवी, सीता देवी, रीता देवी, अनिकेत गुप्ता, गुलाब कुमार, रौशन कुमार, समर्थ गुप्ता, अमृतांश गुप्ता सहित अन्य शामिल है।

तीन बच्चों की माँ, अपने आशिक के संग हुई फरार, पुलिस ने पकड़ा

रक्सौल। स्थानीय थाना क्षेत्र के तीन बच्चों की मां अपने आशिक के संग फरार हो है, इसकी सूचना परिजनों ने स्थानीय पुलिस को दी। स्थानीय पुलिस ने उक्त मामले को लेकर दिनांक 18/12/2023 को एक प्राथमिकी दर्ज कर त्वरित कार्यवाही करते हुए छापेमारी शुरू की। जिसकी जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष सुनिल कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि वह नेपाल से मेन रोड से होकर रक्सौल मार्केट के तरफ जाने वाली है। तभी एक स्पेशल टीम गठित कर एस.आई. एकता सागर और कुछ पुलिस बल के साथ जांच शुरू कर दी गई, तभी रक्सौल के बट्टा चौक के समीप उक्त महिला को पुलिस अपने गिरफ्त में लेकर पुछताछ शुरू कर दिया।

चोरी की बाईक एवं मास्टर चाभी के साथ 2 स्थानीय युवक गिरफ्तार

रक्सौल। भारत-नेपाल सीमा के रक्सौल से आए दिन बाईक चोरी की घटना सामने आती है और अक्सर चोर नहीं पकड़े जाते हैं, परंतु इस बार चोरों का दांव उल्टा पड़ गया है। स्थानीय स्टेशन पर तैनात आरपीएफ और जीआरपी की संयुक्त टीम ने शहर के दो चोरों को रेलवे परिक्षेत्र से चोरी की एक बाईक एवं मास्टर चाभी के साथ गिरफ्तार किया है। जिसकी जानकारी देते हुए आरपीएफ पोस्ट कमांडर निरीक्षक ऋतुराज कश्यप एवं जीआरपी थानाध्यक्ष श्रीधर मुकुंद ने संयुक्त रूप से बताया कि रेल पुलिस कांड संख्या 51/23 के अभियुक्त मौजे वार्ड-14 निवासी रामनारायण राम के 22 वर्षीय पुत्र राजा राम एवं राजू राम के पुत्र अभिषेक कुमार उर्फ भोलू को गिरफ्तार किया गया है।

राष्ट्र के चहुंमुखी विकास, श्रमिक भाई-बहनों को आने वाला समय खुशियों से भरा होगा : सुरेन्द्र राम

गड़खा ।विकास के असली कर्णधार श्रमिक भाई बहन हीं हैं। राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में अहम भूमिका निभाने वाले, संगठित व असंगठित क्षेत्र के सभी श्रमिक भाई-बहनों को आने वाला समय खुशियों से भरा हो। इसलिए यह कार्यक्रम निरंतर आयोजित किया जाता है। उक्त बातें सूबे के श्रम संसाधन मंत्री सुरेन्द्र राम ने गड़खा प्रखंड के जलाल बसंत पंचायत में श्रम संसाधन विभाग अंर्तगत संचालित बिहार भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के तहत असंगठित क्षेत्र के कामगारों हेतु संचालित योजनाओं के लाभ दिए जाने हेतु "श्रम संसाधन विभाग, श्रमिकों के द्वार" कार्यक्रम में कही। मंत्री जी के द्वारा बोर्ड के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के तहत 19 लाभुकों के बीच अनुदान सांकेतिक चेक वितरण किया गया। ज्ञात हो कि अन्य योजनाओं के लाभुकों के बीच 6, विवाह सहायता योजना के लिए 12 जबकि मातृत्व लाभ के लिए 1 सांकेतिक चेक का वितरण किया। वहीं निबंधित श्रमिकों को श्रमिक कार्ड दिया गया। कार्यक्रम स्थल पर श्रमिकों का ऑन स्पॉट रजिस्ट्रेशन किया गया। साथ ही श्रम मंत्री ने कहा कि प्रदेश के असंगठित क्षेत्र के निर्माण कामगारों को सबल बनाये जाने के लिए राज्य में श्रम संसाधन विभाग के अंतर्गत बिहार भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड कार्यरत है।

बोर्ड के तहत निबंधित कामगारों को लाभ दिए जाने हेतु अनेक योजनाओं का संचालन किया जाता है, यथाः मृत्यु लाभ, दाह संस्कार, ह्यमातृत्व लाभ, निर्माण श्रमिकों के बच्चों के शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता, ह्यविवाह के लिए वित्तीय सहायता, वार्षिक

संक्षिप्त खबरें

बेलगाम ट्रक की चपेट में आने से बाइक सवार शिक्षक की दर्दनाक मौत

आरा। जिले के कोइलवर थाना क्षेत्र के कोइलवर- चांदी मार्ग पर फरहंगपुर गांव के समीप तेज रफ्तार से आ रही बालू लदा ट्रक ने बाइक सवार शिक्षक को कुचल दिया।जिसके बाद स्थानीय लोगों ने घायल शिक्षक को कोईलवर स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिए भर्ती कराया जहां से बेहतर इलाज के लिए डॉक्टर ने उन्हें बिहटा स्थित ईएसआईसी अस्पताल में रेफर कर किया गया।जहां इलाज के दौरान शिक्षक की मौत हो गई। मृतक शिक्षक की पहचान बिहटा थाना क्षेत्र के जिनपुरा गांव निवासी स्व. श्रीमन नारायण शर्मा का 48 वर्षीय पुत्र जितेंद्र नारायण शर्मा के रूप में किया गया। मृतक जितेंद्र कुमार भोजपुर जिले के संदेश प्रखंड के अहपुरा गांव स्थित झुगी झोपड़ी में नियोजित शिक्षक के रूप में कार्यरत थे। रोज की तरह गुरुवार को भी अपने बाइक से सही समय पर स्कूल जा रहे थे।

सरकारी जमीन पर कब्जा को लेकर दो पक्षों में हुई झड़प

करगहर (रोहतास) बुधवार की देर शाम पड़वलिया गांव में सरकारी भूमि पर कब्जा को लेकर दो पक्षों में हुई हिंसक झड़प में दो महिलाओं समेत पांच लोग बुरी तरह जख्मी हो गये। जिसका सदर अस्पताल सासाराम में ईलाज जारी है।बताया जाता है कि सरकारी जमीन पर कब्जा करने के लिए पड़वलिया निवासी अखिलेश कुमार सिंह उर्फ जोखन यादव तथा गांव निवासी संतोष यादव और वशिष्ठ यादव के बीच काफी दिनों से विवाद चल रहा था।इस बीच में संतोष यादव की फूस की झोपड़ी में किसी ने आग लगा दी।जिस झोपड़ी के जलाने की बात को लेकर दोनों पक्षों में बकझक होने लगी। इसी बीच एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप और गाली गलौज के बाद लाठियां चलने लगी। इस मारपीट की घटना में अखिलेश सिंह उर्फ जोखन यादव ,संतोष यादव, वशिष्ठ यादव ,मानती देवी, सरोज देवी आदि बुरी तरह जख्मी हो गए।

अज्ञात वाहन ने ई-रिक्शा में मारी टक्कर, चार जख्मी

करगहर (रोहतास) गुरुवार को वैश्यपूरा गांव के बधार में एक अज्ञात वाहन ने ई-रिक्शा में टक्कर मार दी। जिसमें झारखंड की 3 महिला सहित चार मजदूर बुरी तरह जख्मी हो गए।जिन्हें कैमूर जिला के कुदरा स्थित निजी अस्पताल में भर्ती किया गया है।बताया जाता है कि धान की कटनी करने आए झारखंड के गढ़वा जिला के भूईयां बीघा गांव के मजदूर धान की कटनी करने के लिए आए थे।जो खाली समय में एक ई रिक्शा में सवार होकर से बाजार जा रहे थे। इस बीच वैश्यपूरा गांव के बधार में तेज गति से आ रहे एक अनियंत्रित वाहन ने ई-रिक्शा में टक्कर मार दी। जिसके बाद ई-रिक्शा गहरे खाई में जा गिरी। जिसमें सवार मजदूर ललिता भुईयां, शनिचरी देवी, कलापो देवी और पूजा देवी बुरी तरह जख्मी हो गए।

सरकारी जमीन पर अवैध अतिक्रमण हटाने का सीओ ने दिया निर्देश

राजपुर (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के स्थानीय बाजार के चौक स्थित जानकी मार्केट की अवैध तरीके से किये गए घेराबंदी को हटाने के लिए अंचलाधिकारी ने निर्देश दिया है।जानकारी देते हुए अंचलाधिकारी ने बताया कि घेराबंदी किए पक्ष को समझाते हुए कहा गया है कि रजिस्टर टू में भूमि जिसके नाम दर्ज है।नयायालय का कोई फैसला रैयत के विरुद्ध नहीं आने तक सरकार उक्त भूमि पर रैयत का स्वामित्व मानती है।कागजातों की जांच कर घेराबंदी किए पक्ष के लोगों को समझाते हुए कहा कि न्यायालय के जिस पत्र को आप दिखा रहे को अंतिम आदेश नहीं माना गया है।वही न्यायालय ने स्वीकार किया है कि आपलोग नबालिक थे।न्यायालय में आपके पक्ष को रखने वाला कोई लीगल तरीके से नही मौजूद था।अतः उक्त वाद को पुनर्जीवित किया जाता है।जो विगत 16 दिसंबर को न्यायलय ने बाद पुनर्जीवित करने का फैसला दिया है न की हिस्सेदारी का।

लोगों ने समस्या से जुड़ी 299 आवेदन दिया

काराकाट (रोहतास) रोहतास जिला पदाधिकारी नवीन कुमार के निर्देश पर काराकाट प्रखंड के अमरथा पंचायत के सामुदायिक भवन कंचनपुर में जनकल्याण शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं से जुड़े कुल 299 आवेदन दिये।जिसमें सबसे अधिक 150 आवेदन आवास योजना को लेकर है। इसके अलावा राशनकार्ड के लिए 125, स्वास्थ विभाग से 12, समाजिक सुरक्षा से 01, पंचायती राज्य विभाग से 02, विद्युत विभाग से 3 राजस्व से 6 आवेदन प्राप्त हुए हैं। शिविर में प्रखंड विकास पदाधिकारी काराकाट राहुल कुमार सिंह, प्रभारी अंचलाधिकारी चंदन कुमार, पंचायत राज पदाधिकारी काराकाट रेणुका कुमारी, पशू चिकित्सा से श्यामदेव कुमार, संजीव लाल, आवास सहायक मनीष कुमार सहित ग्रामीण लोग उपस्थित थे।

पटना से पहुंची कायाकल्प की टीम ने सीएचसी की की जांच

प्रात : किरण संवाददाता

कैमुर भगवानपुर। बेहतर अस्पताल व उसके बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के चयन को लेकर गुरुवार को पटना से पहुंची कायाकल्प की दो सदस्यीय टीम ने बाबू शिव गोविंद प्रसाद अग्रवाल मेमोरियल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पहुंचकर उसकी जांच की।

सर्वप्रथम विकास पांडेय व विकास सिंह की संयुक्त नेतृत्व वाली टीम ने सीएचसी परिसर में स्थित हर्बल प्लांट्स व केंद्रीकृत जैव चिकित्सा अपशिष्ट संग्रहण कक्ष का जांच किया। फिर सीएचसी में प्रवेश कर फामेर्सी, डस्टबिन, ओपीडी, डेंटल ओपीडी, एनसीडी क्लिनिक/पीएमडब्ल्यू, लैब रुम, ड्रेसिंग रूम, जेनरल वार्ड, शुद्ध पेय जल के लिए लगाई आरओ मशीन, महिला व पुरुष प्रसाधन कक्ष, फैमिली प्लानिंग रुम, स्टरलाईजेशन कक्ष, प्रसव कक्ष तथा प्रसव कक्ष के साथ-साथ कई अन्य कमरों की साफ-सफाई एवं उनसे संबंधित अन्य व्यवस्थाओं की जांच की। जांच के क्रम में जेनरल वार्ड के मटमैले फर्श को देख टीम ने एनजीओ की ओर से बहाल किए गए सफाईकर्मियों को बुलाकर उनके द्वारा किए जाने वाले साफ-सफाई के प्रक्रिया के बारे में बारिकी से पूछताछ की तथा उचित साफ-सफाई के तरीके को बताते हुए उक्त सफाईकर्मियों को भविष्य में अस्पताल की अच्छी तरह से साफ-सफाई करने का निर्देश दिया। वहीं साफ-सफाई में बाजार में मिलने वाले फिनाइल के जगह स्वास्थ्य विभाग के फिनाइल को उपयोग में लाने की बात कही। इसी क्रम में लैब कक्ष में पहुंची टीम ने एलएफटी, केएफटी, सुगर इत्यादि टेस्ट के प्रक्रिया के बारे में टेक्निशियन से पूछ-ताछ की तथा लैब के तमाम जांचों से संबंधित कई आवश्यक निर्देश भी ड्यूटी में तैनात टेक्निशियन को दिए।

अगले क्रम में स्टरलाईजेशन कक्ष में पहुंची टीम ने मौके पर उपस्थित महिला स्वास्थ्य कर्मियों से ऑपरेशन में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों को मशीन से वाश करने के तरीके की प्रक्रिया के बारे में जानकारी ली, दरअसल टीम द्वारा पूछा गया कि संबंधित उपकरणों की धुलाई कितने तापमान पर व कितने समय तक किया जाना चाहिए ? इस दौरान टीम ने ओपीडी सेवा तथा इमर्जेसी रजिस्टर तथा सर्विस बुक समेत अस्पताल के कई अन्य बिंदुओं की जांच-पड़ताल की । पूछने पर टीम ने बताया कि जांच में फिलहाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की व्यवस्था काफी हद-तक संतोष जनक पायी गई है, विशेष रूप से एक कमी यह है कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का चौतरफा बाउंड्री वॉल नहीं है, कहीं-ना-कहीं सीएचसी के हिस्से में बहने वाली नाली के निकासी की समस्या बाउंड्री वॉल निर्माण में बाधा बन रही है। इसलिए बाउंड्री वॉल निर्माण से पहले नाली को कवर कर उसके पानी को उचित ठिकाने पर पहुंचाने की प्राथमिकता है। बाउंड्री वॉल निर्माण के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रखंड विकास पदाधिकारी को आवेदन दिया जाएगा। जांच के दौरान सीएचसी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ संजीव कुमार, बीएचएम तारकेश्वर उपाध्याय तथा बीसीएम शिवानंद पांडेय के साथ कई अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थें।

नगर पंचायत में आयुष्मान भारत कार्ड शिविर का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के कोइलवर नगर पंचायत में आज शुक्रवार को आयुष्मान भारत कार्ड शिविर लगाया जायेगा। नगर पंचायत स्थित आयुष्मान भारत कार्ड शिविर में हिस्सा लेकर पात्र लोग अपना आयुष्मान कार्ड बनवा सकते हैं।

नगर पंचायत कोइलवर के कार्यपालक पदाधिकारी रामविलास दास ने बताया कि आयुष्मान कार्ड लोगों की बीमारियों में वरदान साबित हो रहा है। इस लाभ को जन-जन तक पहुंचाने का उद्देश्य को लेकर आज शुक्रवार को नगर पंचायत कार्यालय में एक शिविर का आयोजन किया गया है। शुक्रवार को 12 बजे से आप सभी लोग नगर पंचायत कार्यालय में आकर आयुष्मान कार्ड बनवाकर इसका लाभ ले सकते हैं। आयुष्मान कार्ड बनवाने के लिए आपको राशन कार्ड और आधार कार्ड लेकर कार्यालय आना होगा।

जीविका एवं मत्स्यपालन की संयुक्त योजनाओं की समीक्षा बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। उक्त समीक्षा बैठक में मुख्य रूप से मनरेगा के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता, सहायक अभियंता, जीविका के डी पी एम तथा मत्स्य विकास पदाधिकारी के साथ तीनों विभाग से कई वरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। समीक्षा में तीनों विभागो के द्वारा संचालित पूर्व से क्रियाशील योजनाएं की समीक्षा की गई । उसके उपरांत संबंधित पदाधिकारियों /कर्मियों को विभागीय कार्यो को शीघ्र निष्पादित करने का निर्देश दिया गया। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा ,को मनरेगा कार्यो में नए वेंडर के चयन के पश्चात पुराने भेंडर को यथा शीघ्र फ्रिज करना, जिले से प्राप्त सूची के अनुसार बायोगैस प्लांट लगाना। डी पी एम जीविका को 490 जीविका दीदियों से नए उद्योग लगाने हेतु प्राप्त आवेदनों में से योग्य लाभुको का चयन करना ,साथ ही साथ जीविका दीदियों को नया उद्योग लगाने हेतु प्रशिक्षण के द्वारा इंवेस्टमेंट प्लान तैयार कर प्रस्तुत करना। जिला कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा से समन्वय स्थापित करके उदवंत नगर प्रखंड में मनरेगा से नया ग्रामीण हाट बनवाना तथा ग्राम संगठन भवन निर्माण हेतु आरा, बड़हरा ,बिहिया, चरपोखरी , गणहनी एवं शाहपुर प्रखंड के अंचलाधिकारी से समन्वय स्थापित करके एनओसी प्राप्त करने का निर्देश दिया गया । मत्स्य विभाग को निर्देश दिया गया कि जीविका दीदियों का चयन कर फिश प्रोसेसिंग,पर्ल फार्मिंग, क्रेब ,प्रोन्स, उत्पादन हेतु प्रशिक्षण प्रदान करना इत्यादि ।

सुदामा का चरित्र और कृष्ण का मित्र प्रेम अद्वितीय : अजय कृष्ण शास्त्री

आरा। राधा कृष्ण परिवार के तत्वाधान में आयोजित भागवत कथा के छठे दिवस पर आयोजित कथा में व्यासपीठ से आचार्य अजय कृष्ण शास्त्री जी ने आज बड़े ही सुंदर तरीके से कृष्ण सुदामा के मित्रता का वर्णन किया उन्होंने कहा कि भगवान कृष्ण और सुदामा बचपन के मित्र और गुरुकुल में सहपाठी थे और उन्होंने गुरु सांदीपनि के मार्गदर्शन में अध्ययन किया था उनकी शिक्षा पूरी होने पर वह अलग हो गए लेकिन कृष्ण और सुदामा अलग नहीं हुए एवं अपनी दिव्य मित्रता को नही भुल पाए आज के जमाने मे भी कृष्ण और सुदामा की दोस्ती एक मिशाल है जब भगवान कृष्ण बालपन में ऋषि संदीपन औए यहाँ शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तो उनकी मित्रता सुदामा से हुई जहां एक तरफ कृष्ण जी का जन्म एक राजपरिवार में हुआ था वही सुदामा ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए परंतु आज भी दोनों की दोस्ती का गुणगान पूरी दुनिया करती है शिक्षा दीक्षा समाप्त होने के बाद भगवान श्री कृष्ण राजा बन गए वहीं दूसरी तरफ सुदामा के बुरे दिन शुरू हो गए अपनी स्थिति खराब होने के बाद सुदामा की पत्नी ने उन्हें राजा कृष्ण से मिलने जाने ले लिए कहा वही पत्नी का जिद मानकर सुदामा अपने बाल सखा कृष्ण से मिलने उनकी नगरी द्वारका गए जब राजा कृष्ण अपने मित्र सुदामा के आने का संदेश पाकर वह खुद नंगे पैर उन्हें लेने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

भाजपा ओबीसी मोर्चा का बैठक संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर भारतीय जनता पार्टी अतिपिछड़ा मोर्चा का बैठक आज वृहस्पतवार (21/12 /2023) को रॉयल हेरीटेज रिजॉर्ट चंदवा में जिला पदाधिकारी एवं मंडल पदाधिकारियों के साथ एक बैठक किया गया। जिसमें मिशन 2024 चार सौ पार को लेकर एक बार पुनः प्रधानमंत्री को जितने को लेकर कई विभिन्न मुद्दों पर चर्चा किया। वही इस बैठक की अध्यक्षता भारतीय जनता पार्टी के अतिपिछड़ा मोर्चा के जिलाध्यक्ष ऋतुराज जी के अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री आनंद गोपाल पंडित ने किया। जिसमे जिला महामंत्री हरेंद्र सिंह चन्द्रवंशी,जिला उपाध्यक्ष शेखर गुप्ता, रवि गुप्ता, मीडिया प्रभारी सतीश गुप्ता,बच्चन प्रसाद, चंदन कुमार, नरेश प्रसाद,श्रवण कुमार ,आशीष कुमार, जंगबहादुर यादव,भोला चौधरी,विजेंद्र ठाकुर, पिंटु सहनी,मनोज ठाकुर आदि दर्जनो अतिपिछड़ा कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

उप राष्ट्रपति के साथ अपमानजनक और अमर्यादित टिप्पणी करने के विरोध मे किया पुतला दहन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भारतीय जनता पार्टी भोजपुर किसान मोर्चा ने स्थानीय त्रिभुआनी मोड़ स्टेशन रोड आरा मे पिछले दिन तृणमूल कांग्रेस सहित इंडी नेताओं द्वारा देश के माननीय उपराष्ट्रपति सह राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ के प्रति अपमानजनक और अमर्यादित टिप्पणी एवं मिमिक्री बनाने के विरोध मे पुतला दहन किया गया।

पुतला दहन कार्यक्रम की शुरूआत सरकारी बस स्टैंड से तृणमूल कांग्रेस मुदार्बाद, इंडी गठबंधन मुदार्बाद,कल्याण बनर्जी मुदार्बाद, राहुल गांधी हाय-हाय,संवैधानिक पद और संवैधानिक संस्थान का अपमान नही सहेगा हिन्दुस्तान, इंडी गठबंधन के नेता शर्म करो आदि नारे के साथ काफिला आगे बढा और त्रिभुआनी मोड़ पर कल्याण बनर्जी का पुतला दहन किया गया। उक्त अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज ने कहा कि इंडी गठबंधन घमंडिया गठबंधन है।उस गठबंधन के नेताओं को भारत की संस्कृति, संविधान और संवैधानिक संस्थान तथा संवैधानिक पदो का अपमान करने मे मजा आता है। जिस प्रकार तृणमूल पार्टी के सांसद कल्याण बनर्जी ने संवैधानिक पद पर आसीन माननीय उपराष्ट्रपति सह राज्यसभा सांसद जगदीप धनखड़ का मिमिक्री और काँग्रेस के बड़ा नेता राहुल गांधी द्वारा विडियो बनाया गया और उसमे शामिल सभी इंडी नेताओं द्वारा खिल्ली उड़ाया गया,इससे साफ साबित होता है कि इंडी नेताओं को न संविधान की चिन्ता है और न ही संवैधानिक पद की चिन्ता है। उन्होने जाट समुदाय से आने वाला एक पिछड़ा वर्ग का अपमान किया है।उक्त अपमानित कृत्तव को पूरा देश ने देखा। उनके द्वारा किए गए कुरीतियों पर महामहिम राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री द्वारा भी खेद ब्यक्त किया गया है। इंडी गठबंधन द्वारा देश को शर्मसार करने का काम किया गया है।आज पूरे देश मे भारतीय जनता पार्टी द्वारा इसका विरोध किया जा रहा है। भाजपा सड़क से संसद तक विरोध कर रही है। कार्यक्रम मे किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष विद्यासागर पांडेय,ई.धीरेन्द्र सिंह,कौशल यादव,नरेन्द्र तिवारी, राकेश सिंह,अशोक शर्मा, प्रहलाद राय,संजय कुमार सिंह,संतोष चंद्रवंशी,चन्द्रभान सिंह,ममता सिंह,हरेन्द्र चंद्रवंशी, वरूण सिंह,राहुल सिंह,निशांत सिंह सेंगर,आलोक अंजन,आशीष कुमार, अविनाश कुशवाहा, अभिमन्यु सिंह,परमजीत सिंह,मनीष कुमार, गुड्डू सिंह,अजय सिंह,विनोद सिंह,श्रीराम महतो,आरती सिंह,सुगंधा सिंह,अखिलेश पांडेय सहित भाजपा, किसान मोर्चा के सैकडो. कार्यकर्ता और समर्थक थे।

सहार प्रखण्ड के कोरनडिहरी पंचायत में जनसंवाद का कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा । भोजपुर पंचायत कोरनडिहरी में जनसंवाद का कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम का उद्घाटन भोजपुर उप विकास आयुक्त सदर अनुमंडल पदाधिकारी एवं पंचायत के मुखिया रामसुभक सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया गया।

जिला प्रशासन के द्वारा जन संवाद कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को समस्या सुनी गई जिले से आए हुए पदाधिकारी ने उनकी समस्या सुनी और निवारण करने के लिए कर्मचारियों को आदेश दिया गया वहीं पंचायत के मुखिया रामसुभक सिंह ने आए हुए पदाधिकारी को अंग वस्त्र एवं बुके देकर सम्मानित किया वहीं पंचायत के मुखिया रामसुभक सिंह ने उप विकास आयुक्त भोजपुर को अंग वस्त्रबुके से सम्मानित किया वहीं मुखिया ने अपने पंचायत की समस्याओं को वरीय पदाधिकारी के सामने रखा और उप विकास आयुक्त ने सरकार के योजनाओं को बारे में विस्तार से बताया और कहा कि आपकी पंचायत की समस्या को हमने सुना है और कोशिश रहेगी हमारी की जल्द से जल्द इस समस्या को हल करने का प्रयास करेंगे इस कार्यक्रम में भोजपुर के सभी पदाधिकारी प्रखंड विकास अधिकारी जनप्रतिनिधि राम सुभाष सिंह मुखिया के अलावा अन्य कर्मचारी एवं पंचायत के ग्रामीण बढ़ चढ़कर हिस्सा लिए मंच संचालक विजय सिंह ने किया की धन्यवाद ज्ञापन भोला जी ने किया।

मोदी गारंटी योजनाओं से लाभान्वित हो रहें लोग

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) भाजपा कार्यकताओं के बीच मोदी की गारंटी का एलईडी वैन गुरुवार को प्रखंड क्षेत्र के मानपुर पंचायत ग्रामीण जनता के बीच पहुंची। जहां विकसित भारत संकल्प यात्रा को लेकर विशेष आयोजन किया गया। जिस आयोजन में एलइडी वैन माध्यम से पंचायत की जनता को जन कल्याणकारी योजनाओ को स्क्रीन पर दिखा उन्हें जागरूक किया गया। वही जिला उपसचिव पारुल सिंह ने पंचायत कार्यक्रम को संबोधित करते हुए लोगों को बताया कि प्रधानमंत्री मोदी गारंटी वैन पंचायत सहित शहरों में भ्रमण करते कल्याणकारी योजना से सभी लोगों जागरूक कर रहीं है। ताकि कोई भी व्यक्ति योजना लाभ से वंचित नहीं रह सकें। जबकि कार्यक्रम का संचालन कर रहे लोक सेवक नवीन चंद्र शाह ने सरकार के विभिन्न योजनाओं को जनता के समक्ष रखते हुए उपस्थित ग्रामीणों के बीच फोल्डर व कैलेंडर का वितरण भी किया गया। वही भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने हेतु संकल्प को दोहराया गया। इस मौके पर सरकारी कर्मियों ने बातों को रखते हुए कृषि उपकरण ड्रोन का भी प्रयोग किया। इस कार्यक्रम अवसर पर नोडल पदाधिकारी रामप्रवेश,राकेश कुमार पांडे, पंचायत समिति सदस्य धर्मेंद्र सिंह, पीएनबी बैंक कर्मी पंकज कुमार, दीपक कुमार, पंकज सिंह, एनम पूजा कुमारी, सिएचओ निरंजन कुमार, रणजीत सिंह, प्रिंस कुमार सहित ग्रामीण जनता अरविंद राम, सुरेंद्र चौधरी,गोपाल पांडे,अभिकर्मक शर्मा, सतीश कुशवाहा, सुनील सिंह, देवेंद्र पांडे, संजय तिवारी सहित जीविका कर्मी उपस्थित थें।

राग जोग में श्रृंगार प्रधान बंदिशों ने दर्शकों का मन मोहा

प्रात : किरण संवाददाता

आरा :लीजेंड बक्शी कुलदीप नारायण सिन्हा मेमोरियल कल्चरल सोसायटी की ओर से आयोजित साप्ताहिक कार्यक्रम गुरुवासरे संगीत सभा का उद्घाटन संरक्षक सुशील कुमार देहाती ने दीप प्रज्जवलित कर किया। स्थानीय महाजन टोली स्थित ठाकुरबाड़ी प्रांगण में इस सांगीतिक सभा को संबोधित करते हुये सुशील कुमार देहाती ने कहा ने कहा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत एक मात्र ऐसी प्राचीन शैली जो जिसमें नवीनीकरण के कई आयाम जुड़ते गये। आज पूरे विश्व में इस संगीत की लोकप्रियता बढ़ रहीं है। राग संगीत एक ओर हमारा ध्यान केंद्रित करता है तो दूसरी ओर मन मस्तिष्क को नई ऊर्जा से भर देता है। इस अवसर पर प्रमुख कलाकार युवा गायक रौशन किशोर ने राग जोग में झपताल की बंदिश "पिया मोरा मानो बतिया" व तीनताल की बंदिश "प्रीत की डोर में हमतुम साजन " खमाज में ठुमरी " सैयां रूठ गये मै मनाती रहीं" दादरा "रंगी साड़ी गुलाबी चुनरिया रे मोहे मारे नजरिया सांवरिया रे व भजन "पायो जी मैने राम रत्न धन पायो " प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। विभिन्न तालों में लयबद्ध बंदिशों ने दर्शक का मन मोह लिया। वहीं नृत्यांगना रितम दुबे ने कथक नृत्य में गणेश वंदना, तीनताल में उपज, ठाट, आमद, तोड़े ,टुकड़े व तिहाई समेत ठुमरी "काहे रोकत डगर प्यारे नंदलाल मोरे" प्रस्तुत कर तालियां बटोरी। हारमोनियम पर श्रेया पाण्डेय व तबले पर गुरु बक्शी विकास ने संगत किया।

अखिल भारतीयवर्षीय चंद्रवंशी के महासचिव अतिपिछड़ा समाज से मिलें

सासाराम (रोहतास) बिहार अखिल भारतवर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रीय महासभा के जिला महासचिव प्रेम प्रकाश चंद्रवंशी तिलौथू प्रखंड के दुबौली गांव का भ्रमण किया। जहां चंद्रवंशी समाज के लोगों के साथ बैठक करते उनकी समस्याओं को सुना। साथ ही साथ प्रखंड के क्षेत्रीय स्थिति का जायजा लिया। जहां मिट्टी के घरों में निवास कर गरीब लोगों मिलकर उनकी दुख दर्द की आपबीती सुना। जहां उन्होंने सरकार और गरीब समाज के स्थापित संबंध में उजागर करते हुए बताया कि अति पिछड़ा समाज आज देश में सबसे निचले स्तर पर जा चुकी है। जिन्हें राज्य और केंद्र सरकार से किसी भी योजना का लाभ नही मिल रहा है। जिन्हें चुनाव में विभिन्न दलों की पार्टियां केवल वोट के लिए इस्तेमाल कर रही है।

बाइक के टक्कर दो लोग जख्मी, एक स्थित गंभीर

कोचस (रोहतास) नगर पंचायत कोचस के पोस्ट ऑफिस के निकट दो बाइक आपस में भिड़ गई जिसमें दोनों बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बारे में बताया जाता है की दोनों बाइक सवार युवक कोचस के रास्ते कहीं जा रहे थे कि कोचस नगर पंचायत के पोस्ट ऑफिस के समीप तेज रफ्तार की वजह से दोनों बाइक आपस मे टकरा गई जिसमें दोनो बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गये। घटना स्थल पर मौजूद लोगों ने दोनो घायल व्यक्ति को कोचस के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए जहां मौके पर तैनात डॉ० तुषार कुमार ने इलाज के बाद करगहर निवासी अरविंद कुमार का स्थिति खतरे से बाहर बता घर भेजे दिया।

भाजपा ने गड़हनी में विधानसभा स्तरीय कोर कमेटी का किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

गड़हनी। आगामी लोकसभा चुनाव व संगठन मजबूती को ले भाजपा ने गड़हनी में विधानसभा स्तरीय एक बैठक किया। बैठक एम एल सी जीवन कुमार के नेतृत्व में की गई। बैठक में अगियांव विधानसभा के सभी मंडल अध्यक्ष भी मौजूद थे। बैठक में 25 जनवरी को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर सुशासन दिवस धूमधाम से बनाने को ले निर्णय लिया गया। एमएलसी जीवन कुमार ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी एक भाजपा के कदावर नेता और देश के सबसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री में से एक थे। उनके नेतृत्व में देश एक अच्छे मुकाम पर पहुँचा था। इसलिय 25 जनवरी को उनका जन्मदिन सभी पार्टी के नेता व कार्यकर्ता धूमधाम से बनाये। साथ ही कहा कि पार्टी को सभी मंडल में बूथ स्तर तक अपना कार्यकर्ताओ को मजबूत करें। इस मौके पर अगियांव मंडल अध्यक्ष रमाकांत चंद्रवंशी ,चरपोखरी मंडल अध्यक्ष विक्की सिंह, दयाशंकर सिंह, कुमार अरविंद सिंह, बिरबहादुर सिंह, अभिषेक सिंह बिशेन, रामसागर सिंह, बिनय सिंह, चंदन सोनी, बिजय पासवान सहित कई नेता व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

गड़हनी प्रखण्ड दलालों के कब्जे में,कई पदाधिकारी व कर्मचारी रोजाना पहुँचते हैं लेट

प्रात : किरण /मुरली मनोहर जोशी

गड़हनी(भोजपुर) ।जिले के गड़हनी प्रखण्ड में पदाधिकारी से लेकर कर्मचारियों तक बेलगाम हो गए हैं।रोजाना ग्यारह बजे के बाद कार्यालय पहुंचना इनका आदत बन गया हैं।प्रखंड कार्यालय के कई पदाधिकारी हो या अंचल कार्यालय कर्मी सभी का वही हाल हैं।एक दो पदाधिकारी व दो-चार कर्मचारियों को छोड़ अन्य कर्मचारी अधिकारी का हवाला दे मुख्यालय से अक्सर गायब मिलेंगे।कई ऐसे प्रखंडस्तरीय पदाधिकारी जो आज तक मुख्यालय का मुंह तक नही देखे हैं।आपूर्ति पदाधिकारी समेत कई ऐसे अधिकारी हैं कि खोजने के बाद भी नही मिलते। बतादें की गड़हनी प्रखंड में हो रही दलाली व पदाधिकारियों की अनदेखी से प्रखंड क्षेत्र की जनता त्रस्त है।इस प्रखंड में आकर अपना काम करवाने वालो को दलालो, बिचौलियों व नजारानो के दौर से गुजरना होता है।बिना इसके आपका कोई भी काम नही हो सकता। गड़हनी ब्लॉक दलालो के चंगुल में जा चुका है।प्रखंड मुख्यालय पर कोई भी महिला या पुरूष को देख दलाल उसके इर्द गिर्द मंडराने लगता हैं और जल्द काम कराने का नसीहत देने लगते है।जिससे लाभुक उनके झांसा में आकर फंस जाता है। प्रधानमंत्री आवास योजना,बृद्धा पेंशन,जमीन का दाखिल खारिज,शौचालय इत्यादि कोई भी काम कराने को ले पदाधिकारियों द्वारा दलाल लगाए गए हैं। क्योंकि बिना दलालो व बिचौलियों को दिए कोई काम नही होगा।सरकार ने प्रधानमंत्री आवास योजना के लिये आवास सहायक,विकास मित्र जैसे कई लोगो को बहाल किया।लेकिन जितना तंत्र लगा उतना ही पैसा चढ़ावा के रूप में चढ़ाना पड़ता हैं।स्थिति यह है कि पैसा वसूली के लिये सहायक के साथ न जाने कितना दलाल गांव गांव घूम कर पैसा वसूली कर रहे है।लाभुक जिस बैंक में पैसा निकासी करने जाता है दलाल वहाँ पहले से उपस्थित रहता है पैसा निकलते ही काम मैं करवाया हुँ का झांसा देकर उससे 10 से 20 हजार रुपये ले लेता है।इस संबंध में स्थानीय पदाधिकारियों से लगातार शिकायते होती रहती है पर ढाक के तीन पात वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए ये नजराना वसूली वाले लोग और उनको नजराना वसूली के लिए लगाए हुए लोगो के कान में चूँ तक नही रेंगता।बिना डर बेखौफ बेधड़क होकर सभी योजनाओं पर अपनी पैनी नजर लगाए ये दलाल इसी फिराक में पूरे दिन प्रखण्ड परिसर में बने रहते है कि बिना नजराना लिए गलती से भी किसी का काम ना हो जाए।वही पदाधिकारियों के क्या कहने,ये लोग तो साहब है और साहब से मिल कर शिकायत कोई कर भी दे तो क्या फर्क पड़ता।क्योंकि बिना साहब के इशारे के मजाल है कि प्रखंड में एक फाइल इधर से उधर हो जाए।वैसे प्रखंड के साहब लोग जल्दी मिलते ही नही किसी से यदि मिल भी लिए तो दिखवा लेता हूं,अगले सप्ताह आईये,बड़ा बाबू से मिल लीजिए,सब प्रोसेस से होता है,आपका फॉर्म गलत था जैसे अनगिनत बहाने रहते है लाभार्थी के पास। लाभार्थी भी क्या करे थक हार कर साहब के केबिन से निकलने के बाद उसके पास वही दलाल वाला रास्ता बचता है।अंत मे वही दलाल मिनटों में उस काम को कर देता है।

बलिगांव व हरपुर निर्विरोध निर्वाचित

गड़हनी।स्थानीय प्रखण्ड के बलिगांव व हरपुर पंचायत में हुए पंच पद के लिए उपचुनाव में तीन प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित किए गए।वही बलिगांव पंचायत में दो वार्ड 4 व 7 में एक-एक प्रत्याशी व हरपुर के वार्ड 1 के लिए भी एक ही प्रत्याशी ग्राम कचहरी पंच सदस्य के लिए नामांकन किया था जिसमे बीते 20 दिसम्बर को स्कूटनी बीडीओ सह सहायक निवार्ची पदाधिकारी गड़हनी के द्वारा की गई।जिसमें तीनो वार्ड में एक-एक प्रत्याशी ही नामांकन किये थे।जिसे तीनो को निर्विरोध ग्राम कचहरी पंच के लिए घोषित किया गया।बतादें की पंचायत उपचुनाव

संक्षिप्त खबरें

डीएम ने अनुसूचित जाति वं जनजाति अत्याचार निवारण का किया बैठक

अरवल । समाहरणालय सभा कक्ष में वर्षा सिंह की अध्यक्षता में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचर निवारण) अधिनियम तथा मैनुअल स्कैवेंजर रोजगार निषेध एवं पुनर्वास अधिनियम अन्तर्गत जिला स्तरीय सतर्कता व अनुश्रवण समिति की समेकित बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला पदाधिकारी द्वारा अनुसूचित जाति एवं जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम अन्तर्गत दर्ज कांडों में मुआवजा भुगतान एवं लबित कांडों के निष्पादन की समीक्षा की गई। बैठक के दौरान संबंधित पदाधिकारियों को विभिन्न दिशा निर्देश दिये गये। उन्होंने संबंधित पदाधिकारियों को थानों से समन्वय स्थापित कर कार्य को निष्पादन करने के निदेश दिये। मैनुअल स्कैवेंजर रोजगार निषेध एवं पुनर्वास अधिनियम अन्तर्गत जिले के नगरपालिका के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रखण्डवार हाथ से मैला उठाने वाले व्यक्तियों का सर्वे कराने का निदेश दिया गया एवं उन्होंने सभी प्रखण्ड कल्याण पदाधिकारियों को इससे संबधित जरूरी निदेश दिये।

यूबीक फाउंडेशन द्वारा 85 रक्तदान शिविर का आयोजन

गया ।यूबीक फाउंडेशन के द्वारा 85 रक्तदान शिविर का आयोजन यू ब्लड बैंक, यूबीक फाउंडेशन के अंतर्गत सेव सॉल्यूशन एपी कॉलोनी गया के द्वारा आयोजित किया गया था। जिसमें सेव सॉल्यूशन के 30 एम्पलाइज ने रक्तदान किया गया है। यूबिक फाउंडेशन के द्वारा 22 दिसंबर को 55 वा निःशुल्क स्वास्थ्य सेवा रामदयाल चौक हाजीपुर में आयोजन किया जा रहा है। जिसमें निशुल्क मोतियाबिंद का ऑपरेशन कराया जाएगा एवं निःशुल्क कुल्हा का ऑपरेशन कराया जाएगा ।

प्रदेश सचिव ने मुख्यमंत्री का अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर स्वागत किया

गया ।मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का बोधगया आगवन के दौरान बोधगया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा एयरपोर्टपर जदयू कार्यकताओं ने उनका भव्य स्वागत किया है मुख्यमंत्री जदयू कार्यकताओं को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं व्यक्त करते हैं। अरुण कुमार राव प्रदेश सचिव सह जिला कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति सदस्य गया।

मुख्यमंत्री का अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत किए जिलाअध्यक्ष

गया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का गया आगमन पर जिला अध्यक्ष अभय कुशवाहा के नेतृत्व में गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा पर जदयू कार्यकताओं द्वारा जोरदार स्वागत किया गया है। इसके साथ ही देश का पीएम कैसा हो नीतीश कुमार जैसा हो नारा से हवाई अड्डा गूंज उठा। स्वागत में पूर्व विधायक अभिराम शर्मा, विनोद यादव, अजय पासवान, कृष्णनंदन यादव, मनोरमा देवी,नगर अध्यक्ष राजू वर्णवाल, प्रभारी राजीव नयन, जिला प्रवक्ता अवध बिहारी पटेल, अरुण पटेल,कुंडल वर्मा,अलेक्जेंडर खान,विनोद कुमार, आसिफ जफर, ज्योति सिंह,कमलेश चंद्रवंशी, राजेश शर्मा, अरविंद वर्मा, जितेंद्र दास,शंकर चौधरी ,रौशन मांझी ,पुष्पेंदु पुष्प, राजेंद्र सिंह, एवं जदयू के सैकड़ों नेता कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विधुत चोरी के मामले में चार लोगो के खिलाफ मुकदमा दर्ज

शेरघाटी ।विद्युत विभाग की टीम ने प्रखंड के अलग-अलग क्षेत्र में छापेमारी कर चार लोगों के खिलाफ जुमार्ना के साथ प्राथमिक की दर्ज किया है. पुलिस से की गई शिकायत में बिजली विभाग के कनीय अभियंता ने कहा है, कि शहर के गोला बाजार निवासी सफीउल्लाह के खिलाफ 13672, रोशन जहां के खिलाफ 17014, लक्ष्मी देवी के खिलाफ 9840, एवं रीता देवी के खिलाफ 10247 जुमार्ना के साथ मुकदमा दर्ज किया गया है. थानेदार विमल कुमार ने बताया कि विद्युत विभाग के द्वारा की गई शिकायत के आधार पर प्राथमिक की दर्ज कर पुलिस ने छानबीन शुरू कर दिया है।

मारपीट को ले महिला ने भैसुर के खिलाफ कराई मुकदमा दर्ज

शेरघाटी ।मारपीट के आरोप में थाना क्षेत्र के नवादा गांव की रहने वाली महिला ने अपने भैसुर के खिलाफ थाने में मुकदमा दर्ज किया है. पुलिस से की गई शिकायत में पीड़िता बिंदी देवी ने कहा है, कि भैंसूर शेखर राम ने वे वजह मेरे तथा परिवार वालों के साथ गाली गलौज एवं मारपीट किया है. उसने पुलिस को बताया कि शेखर राम के द्वारा हमेशा इस प्रकार का कृत किया जाता है. जिससे हम लोग काफी परेशान व डरे सहमें में रहते हैं. पीड़िता ने मामले को लेकर पुलिस से न्याय का गुहार लगाया है. इधर उप थानाध्यक्ष शंभू कुमार ने बताया कि महिला के शिकायत पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दिया है।

विपक्षी सांसद के निलंबन के खिलाफ 22 दिसंबर को गठबंधन का विशाल प्रदर्शन : कॉग्रेस जिलाअध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 21 को गया जिला कॉंग्रेस कमिटी के नेताओं, कार्यकताओं की बैठक कॉंग्रेस कार्यालय राजेंद्र आश्रम मे सम्पन्न हुई है। इस बैठक की अध्यक्षता गया जिला कॉंग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ गगन कुमार मिश्रा ने किया है ।इस बैठक में सर्वप्रथम आई ए न डी आई ए गठबंधन में शामिल बिहार के सभी राजनीतिक दलों कॉंग्रेस, रा ज द , जद यू, सी पी आई, सी पी आई ए म , सी पी आई ए म एल के गया जिला अध्यक्ष सहित संपूर्ण कमिटी को सूचना देते हुए, चट्टानी एकता बना कर 22 दिसंबर को विपक्षी सांसद के निलंबन के खिलाफ विशाल प्रदर्शन को सफल बनाने की अपील की गई है ।इस बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि प्रदर्शन कार्यक्रम गया समाहरणालय के समक्ष स्थित डॉ भीमराव अम्बेडकर के प्रतिमा स्थल से शुरू होकर,जी बी रोड होते हुए चौक स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के प्रतिमा के समक्ष समाप्त होगी ।इस बैठक में शामिल बिहार प्रदेश कॉंग्रेस कमिटी के प्रदेश प्रतिनिधि सह प्रवक्ता प्रो विजय कुमार मिट्ठू, पूर्व विधायक मोहम्मद खान अली, पूर्व जिला कॉंग्रेस अध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद यादव, जिला उपाध्यक्ष बाबूलाल प्रसाद सिंह, राम प्रमोद सिंह, युगल किशोर सिंह, विद्या शर्मा, दामोदर गोस्वामी, राजीव कुमार सिंह उर्फ लबी सिंह, मोहम्मद खैर उद्दीन, मोहम्मद अजहरुद्दीन, धर्मेंद्र कुमार निराला, शशि कांत सिन्हा, राज कपूर गुप्ता, नवल किशोर शर्मा, राजेश कुमार, बबलू शर्मा, मोहम्मद शमीम, कृष्ण बल्लभ, आदि ने कहा कि संसद में सुरक्षा चूक मामले पर विपक्षी सांसद द्वारा गृह मंत्री के वक्तव्य की मांग को सरकार द्वारा अनसुनी कर विपक्ष की आवाज बंद कराने हेतु संसदीय इतिहास में पहली बार 145 सांसद को निष्कासित किया गया जिससे देश की जनमानस में भयानक आक्रोश है। नेताओं ने कहा कि 22 दिसंबर को सम्पूर्ण देश के जिला मुख्यालयों में विशाल धरना-प्रदर्शन कर मोदी सरकार के विपक्ष विहीन मंशा को देशभर में उजागर किया जाएगा। नेताओं ने आई ए न डी आई ए गठबंधन के सभी नेताओं, कार्यकताओं से कल के आंदोलन कार्यक्रम में ज्यादा से ज्यादा संख्या मे भाग लेने की अपील की गई है।

मुख्यमंत्री ने बोधगया में परम पावन दलाई लामा से की मुलाकात, महाबोधि मंदिर में की पूजा अर्चना

प्रात : किरण संवाददाता

गया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आज बोधगया के तिब्बतियन मोनेस्ट्री पहुंच कर बौद्ध धर्म गुरू परम पावन दलाई लामा जी से मुलाकात की है। मुख्यमंत्री ने परम पावन दलाई लामा को पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र एवं प्रतीक चिह्न भेंटकर उनका स्वागत किया और उन्हें नमन कर उनका आशीर्वाद लिया है। परम पावन दलाई लामा ने मुख्यमंत्री को दीघार्यु एवं स्वस्थ रहने का आशीर्वाद दिया और मुख्यमंत्री ने भी परम पावन दलाई लामा जी के स्वस्थ और सुदीर्घ जीवन की कामना की है। परम पावन दलाई लामा से बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि आप जब भी यहां आते हैं तो हम आपसे मिलने आते हैं और आपका आशीर्वाद लेते हैं। सभी धर्मों के प्रति हमलोगों का सम्मान है। बौद्ध धर्म के प्रति भी हमलोगों का सम्मान है। मुख्यमंत्री ने परम पावन दलाई लामा को वैशाली में बनने वाले बुद्ध सम्यक दर्शन संग्रहालय के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया है।

मुख्यमंत्री के आग्रह को परम पावन दलाई लामा जी ने स्वीकार किया है ।इसके बाद तिब्बतियन मोनेस्ट्री में ही मुख्यमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय संघ मंच के प्रतिनिधियों से मुलाकात की और उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया है। इसके पश्चात महाबोधि मंदिर परिसर में मुख्यमंत्री ने महाबोधि महाविहार एवं बोधगया टेंपल मैनेजमेंट कमिटी कार्यालय में 180 के0 डब्ल्यू०पी० सोलर पावर प्लांट का शिलापट्ट अनावरण कर शिलान्यास किया है। इसके साथ ही महाबोधि मंदिर के उत्तर दिशा में पीतल से निर्मित भव्य द्वार का उद्घाटन किया है। मुख्यमंत्री ने महाबोधि मंदिर के आउटर बाउंड्री रेलिंग का भी शिलान्यास किया है ।इसके बाद महाबोधि मंदिर में मुख्यमंत्री ने भगवान बुद्ध की पूजा-अर्चना की और राज्य की सुख-शांति एवं समृद्धि की कामना की है। मुख्यमंत्री ने बोधि वृक्ष की भी पूजा-अर्चना की है। इस अवसर पर कृषि मंत्री कुमार सर्वजीत, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव दीपक कुमार, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ० एस० सिद्धार्थ, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य पदाधिकारी गोपाल सिंह, मगध प्रमंडल के आयुक्त मयंक वरवड़े, मगध प्रक्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक क्षत्रनील सिंह, गया के जिलाधिकारी डॉ० त्यागराजन एस०एम०, गया के वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती, बोधगया टेंपल मैनेजमेंट कमिटी की सचिव महाश्वेता महारथी, बोधगया टेंपल मैनेजमेंट कमिटी के सदस्य अरविंद सिंह, चीफ मौंक चालीन्दा भंते समेत वरीय पदाधिकारी, भंतेगण और बौद्ध श्रद्धालुगण मौजूद थे।

औरंगाबाद के पत्रकार को मिलेगा प्रतिष्ठित 'कबीर कोहिनूर सम्मान'

औरंगाबाद। बिहार के दो वरिष्ठ पत्रकार समेत देश के पांच पत्रकार प्रतिष्ठित कबीर कोहिनूर सम्मान-2024 से नवाजे जाएंगे। सम्मान के लिए चयनित बिहार के पत्रकारों में दूरदर्शन समाचार पटना के सहायक समाचार संपादक शोभित सुमन और औरंगाबाद के वरिष्ठ पत्रकार गणेश प्रसाद शामिल है। इसके अलावा मध्य प्रदेश के फरकार सैयद खालिद कैस, राजस्थान के इकरामुद्दीन और नई दिल्ली के ओमप्रकाश प्रजापति शामिल है। इन सभी पत्रकारों को यह सम्मान अगले वर्ष 25 फरवरी 2024 को देश की राजधानी नई दिल्ली के जनपथ रोड स्थित डॉ. अम्बेडकर हॉल में सदुरू कबीर आश्रम सेवा संस्थान, बड़ी खाटू, नागौर (राजस्थान) द्वारा आयोजित कबीर कोहिनूर सम्मान समारोह-2024 में प्रदान किया जाएगा। सम्मान समारोह के कार्यक्रम संयोजक और राष्ट्र लेखक सम्मान से सम्मानित साहित्यकार डॉ. अभिषेक कुमार ने बताया कि बिहार के दोनों वरिष्ठ पत्रकारों को यह सम्मान पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया जाएंगा। सम्मान समारोह में पत्रकारिता के क्षेत्र के अलावा भामाशाह(दान), समाजसेवा, पर्यावरण संरक्षण, संगीतकार-गीतकार, नशा मुक्ति, नेतृत्वकर्ता, भारतीय कला-संस्कृति, लोक नाट्य, गौ सेवा, तकनीक नवाचार, वरिष्ठ कवि-कवयित्री, ज्योतिष शास्त्री, चित्रकारिता, बाल साहित्यकार, उत्कृष्ट शिक्षा सेवा, वरिष्ठ साहित्यकार, राष्ट्र हित में अन्य विशिष्ट सेवा, फिल्म अभिनेता, चिकित्सा सेवा एवं आदिवासी-जनजति प्रोत्साहन कार्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले देशभर के असाधारण हस्तियों को भी कबीर कोहिनूर सम्मान प्रदान किया जाएगा।

बहु के हत्यारोपी पति और सास को हुई सजा

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे चार ब्रजेश कुमार सिंह ने ओबरा थाना कांड संख्या -275/21 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए मृतका रिंकी देवी के पति सुमन पटेल भरुब ओबरा और सास लालती कुंवर को रिंकी देवी के हत्या और दहेज हत्या में दोषी करार देते हुए सजा सुनाई है। एपीपी देवेंद्र शर्मा ने बताया कि काराधीन बंदी पति और सास को भादंवि धारा 302 में आजीवन कारावास की सजा और पच्चीस हजार जुमार्ना लगाया है। जुमार्ना न देने पर एक साल अतिरिक्त कारावास होगी, वहीं भादंवि धारा 304 बी में दस साल की सजा होगी। दोनों सजाएं साथ साथ चलेंगी। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि एक अन्य अभियुक्त सुमन पटेल के दोस्त सिकंदर यादव को साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त कर रिहा कर दिया है। प्राथमिकी मृतका के भाई आदित्य राज बड़ोखर हसपुरा ने 03/11/21 को मृतका के पति, सास और पति के दोस्त सिकंदर यादव पर अपनी बहन के हत्या के आरोप लगाते हुए दर्ज कराई थी और कहा था कि 2016 में बहन की शादी हुई थी कुछ माह बाद एक लाख और चार चक्का गाड़ी के मांग पुरी ने होने पर हत्या कर दी गई थी।

उस समय ओबरा थानाध्यक्ष पंकज कुमार सैनी ने अनुसंधान और तत्काल अभियुक्तों को गिरफतारी किये थे मोबाइल सी डी आर के अवलोकन से सुमन पटेल अनुग्रह नारायण रोड़ स्टेशन पर गिरफ्तार किया गया था तब से अभी तक जेल में बंद हैं। थाना प्रभारी ने 09/01/22 को सभी अभियुक्तों पर भादंवि धारा 304 बी और 302 में समर्पित किया था। बचाव पक्ष से अधिवक्ता अवध किशोर पांडे ने लालती कुंवर के अधिक उम्र होने के कारण और सुमन पटेल के पहली अपराध के कारण कम सजा की मांग की थी। अभियोजन कि तरफ से अधिवक्ता नकूल मेहता , मृतका के मां और बुआ उपस्थित थीं जिन्होंने ने कोर्ट के शीघ्र निर्णय पर प्रसन्नता जताई।

विकसित भारत संकल्प यात्रा नगर निगम श्रेत्र में नगर विधायक द्वारा स्टॉलो का किया निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

गया। नगर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत वार्ड नंबर 22 पिता महेश्वर गया वार्ड नंबर 34 केवल बीघा दुर्गा स्थान के निकट विकसित भारत संकल्प यात्रा रथ का आगमन हुआ आगमन के अवसर पर कृषि मंत्री सह नगर विधायक गया डॉक्टर प्रेम कुमार एवं बड़ी संख्या में उपस्थित जनसमूह के द्वारा प्रधानमंत्री जी का नारा लगाकर भव्य स्वागत किया गया, डॉ कुमार के द्वारा सभी स्टॉल आयुष्मान भारत पीएम जन धन योजना डाकघर सस्वास्थ्य शिविर पीएम उज्जवला योजना सहित सभी स्टालों पर जाकर निरीक्षण किया एवं लोगों को संबोधित करते हुए जानकारी दी की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज परिसर में 200 करोड़ की लागत से सुपर स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल का निर्माण कराया जा रहा है, रेलवे जंक्शन गया को 300 करोड़ की लागत से आधुनिकरण किया जा रहा है एयरपोर्ट जैसे सुविधा यात्रियों को दी जाएगी, वर्षो से लंबित उत्तर कोयल सिंचाई परियोजना के लिए भारत सरकार से स्वीकृति मिल गई है जल्द ही गया,औरंगाबाद एवं अरवल के किसानों को सिंचाई की सुविधा प्राप्त होगी, सड़क के क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग 83 डोभी टू पटना का निर्माण अंतिम चरण में है जल्द ही जनता को समर्पित की जाएगी एन एच82 पहाड़पुर से हिसुआ होते हुए राजगीर बिहार शरीफ तक फोरलेन का काम अंतिम चरण में है आमस दरभंगा एक्सप्रेसवे का कार्य शुभारंभ हो रहा है, डाक विभाग के द्वारा विभिन्न योजनाओं लाभार्थियों को म डॉ प्रेम कुमार के द्वारा पासबुक वितरण किया गया है, शिक्षा के क्षेत्र में आई एम एम की पढ़ाई शुरू हो रही है दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है जहां देश के कोने-कोने से के छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, बोधगया मे महाबोधिक संस्कृतिक केंद्र निर्माण में केंद्र सरकार के द्वारा 100 करोड रुपए की राशि उपलब्ध कराई गई थी, वंदे भारत ट्रेन सहित कई ट्रेन ठहराव की सुविधा दी गई, हृदय योजना के तहत हिंदू धर्मावली के तीर्थ यात्रियों को गया जी में सीताकुंड, अक्षय वट, ब्रह्म सरोवर, वेतरणी, पिता महेश्वर सहित अन्य स्थानों पर जीर्णोद्धार एवं सौंदर्यकरण कार्य कराया गया है जिससे यात्रियों को काफी सुविधा प्राप्त हो रही है या नरेंद्र मोदी सरकार की देन है, गया नगर विधानसभा क्षेत्र में दिनांक 22 दिसंबर को वर्ल्ड नंबर 1 खरखुरा अशोक उच्च विद्यालय के निकट एवं आजाद पार्क 23 दिसंबर को संक्रामक अस्पताल चंद चौराहा एवं पहाड़पुर के निकट विकसित भारत संकल्प यात्रा का विभिन्न विभागों के स्टाल लगाकर लाभार्थियों को योजनाओं की जानकारी जान के साथ-साथ निबंध भी कराया जाएगा।

नये भारत का सपना अवश्य पुरी होगी : डां. मनीष

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।पूरे देश में मोदी की गारंटी वाला विकसित भारत संकल्प रथ यात्रा गया जिला के विभिन्न प्रखंडों में जाकर भारत सरकार के लाभार्थियों से रू बरु होने पर खुशी का इजहार करते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉक्टर मनीष पंकज मिश्रा के द्वारा विभिन्न प्रखंडों में जाकर जो लाभ से वंचित लोगो को कैंप के माध्यम से जागरूकता कर भारत सरकार के द्वारा दिए गए लाभ में पंजीकृत प्रत्येक प्रखंड में पंचायत स्तर तक के भाजपा कार्यकर्ता लाभुकों का को छूटे हुए हैं उसे अविलंब नाम जोड़ा जाए एवं भारत सरकार के विभिन्न योजनाओं का लाभ ले सकें देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी के द्वारा आयुष्मान कार्ड के माध्यम से कोई गरीब बिना इलाज के ना रह सके अगर कोई आर्थिक इसे सक्षम व्यक्ति बीमारी का इलाज करवा रहा हैं तो आयुष्मान कार्ड के माध्यम से आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति भी उसी बेड के बगल में इलाज करवा रहा हैं यही है देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री का सोच गरीब आदमी को बिना इलाज के नही रह सकता है वैसे प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में 2024 में 400+ से ज्यादा पुनः भाजपा की सरकार बनेगी।

जिलाधिकारी ने मध्य रात्रि को ठिठुर रहे लोगों को कंबल उढ़ाया

प्रात : किरण संवाददाता

गया। मध्य रात्रि करीब 12 बजे जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने अपने आवास से निकल कर गवालबीघा, गांधी मैदान, खालिस्पार्क इत्यादि स्थानों पर जाकर सड़क के किनारे रिक्सा चालक, ठेला चालक एव अन्य असहाय व्यक्ति को सड़क के किनारे इस कड़ाके के ठंड में ठिठुरे सोये हुए देख कर उनसभी को अपने हाथों से कंबल ओढ़ाया एव उन सभी को रैन बसेरा एव आश्रय स्थल में जाकर आराम करने का अपील किया है। असहाय लोगो ने जिला पदाधिकारी को काफी सराहा है। विदित हो कि पिछले तीन दिनों से ठंड का दस्तक तेजी से आया है। तापमान में भी काफी गिरावट आ रही है। जिला पदाधिकारी ने सभी अनुमंडलों के पदाधिकारियों, नगर निकाय के पदाधिकारियों एव सभी अंचल अधिकारी को अपने अपने क्षेत्र में सार्वजनिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था का निर्देश दिया है। कई स्थानों पर लगातार अलाव की व्यवस्था गई है। डीएम ने सभी अधिकारियों को निर्देश दिया कि अपने क्षेत्र में देर रात्रि घूमे और जरूरतमंद के बीच ठंड से बचाव हेतु कंबल भी वितरण करे।

श्रम विभाग के द्वारा नियोजन सेवा विस्तार योजना से योग्य अभ्यर्थियों का मिलेगी मदद

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। श्रम संसाधन विभाग, बिहार द्वारा नियोजन सेवा का विस्तार योजनान्तर्गत योग्य अभ्यर्थियों को टूल किट एवं स्टडी किट प्रदान किया जायेगा, जिससे कि उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने में एवं स्वरोजगार में मदद मिलेगी। इच्छुक अभ्यर्थी 20 जनवरी 2024 तक जिला नियोजनालय में आवेदन कर सकते है। जिला नियोजन पदाधिकारी, नीतिश कुमार सिन्हा द्वारा बताया गया कि इस योजना के तहत एक ओर जहाँ अभ्यर्थियों को स्वरोजगार हेतु टूल किट प्रदान किया जायेगा। जिसमें इलेक्ट्रीशियन, इलेक्ट्रोनिक्स, मोबाईल रिपेयर, फिटर, ब्यूटीशियन, प्लंबर आदि ट्रेड में ट्रांसजेंडर, दिव्यांगजन, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग, पिछड़ा वर्ग के लाभुक जिनकी उम्र 18-35 वर्ष तथा वार्षिक आय 1,80,000 रुपए से कम हो उनको इसका लाभ मिलेगा। इस हेतु शैक्षणिक योग्यता संबंधित ट्रेड में बीएसडीएम / आइटीआइ समकक्ष परीक्षा में उतीर्ण अथवा एनएसक्यूएफ से मान्यता प्राप्त हो का निर्धारण किया गया है।

इसके साथ ही अभ्यर्थी को आवेदन की तिथि को नियोजनालय अथवा एनसीएस पोर्टल पर न्यूनतम एक वर्ष से निबंधित होना अनिवार्य है। इसी तरह दिव्यांगजन, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग, पिछड़ा वर्ग के 18-35 आयुवर्ग के वैसे अभ्यर्थी जो यूपीएससी, बीपीएससी, एसएससी, रेलवे, बैंकिंग प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करना चाहते हैं, उन्हें स्टडी किट मुहैया कराया जायेगा। इस हेतु शैक्षणिक योग्यता स्नातक / इंटरमीडिएट किसी सरकारी सेवा के रिक्ति में आवेदन जरूरी है। ऐसे अभ्यर्थियों की वार्षिक आय 1,80,000 रुपए से कम होनी चाहिए। इसके साथ ही अभ्यर्थियों को आवेदन की तिथि को जिला नियोजनालय अथवा एनसीएस पोर्टल पर न्यूनतम एक वर्ष से निबंधित होना अनिवार्य है। उन्होंने बताया कि पात्रताधारक योग्य एवं इच्छुक अभ्यर्थी 20 जनवरी 2024 तक संबंधित प्रमाण पत्र की स्वअभिप्रमाणित छायाप्रति के साथ जिला नियोजन पदाधिकारी, जहानाबाद को संबोधित करते हुए अपना आवेदन दे सकते हैं।

निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदनों पर कोई विचार नहीं किया जायेगा। आवेदकों का चयन विभागीय निदेर्शानुसार उप निदेशक (नियोजन) पटना प्रमण्डल, पटना की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा किया जायेगा। उन्होंने बताया कि इस संबंध में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए योग्य एवं इच्छुक अभ्यर्थी जिला नियोजनालय के हेल्पलाईन नंबर-8521985369, 6204887849 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

उपराष्ट्रपति अपमानित करने पर जिला भाजपा द्वारा राहुल गांधी का पुतला दहन कर विरोध दर्ज

गया ।भारत के उप राष्ट्रपति सह सभापति राज्यसभा जगदीप धनखड़ के इंडिया गठबंधन के सांसदों के द्वारा अपमानित करने के खिलाफ गया जिला भाजपा अध्यक्ष प्रेमप्रकाश चिंटू सिंह के नेतृत्व में जिला कार्यालय गया रसलपुर रोड़ पर भाजपा कार्यकताओं के साथ राहुल गांधी एवं कल्याण बैनर्जी का पुतला दहन कर विरोध दर्ज किया इस अवसर पर जिला अध्यक्ष प्रेमप्रकाश चिंटू ने कहा कि इंडिया गठबंधन के नेताओं के द्वारा उप राष्ट्रपति का मिमिक्री कर अपमानित कर रहा था अपमानित करने वाले लोगों को राहुल गांधी प्रोत्साहन कर रहे थे एवं राहुल गांधी इंडिया गठबंधन के लोग के साथ मोबाइल से वीडियो बनाया जा रहा था उप राष्ट्रपति का अपमान नहीं हैं पूरे राष्ट्र का अपमान हैं ऐसे लोगों को सदन के सदस्यता से अयोग्य कर सदस्यता खत्म करे ।इस अवसर पर जिला प्रभारी राजेश कुशवाहा ने कहा कि यह भगवान विष्णु की नगरी हैं इंडिया गठबंधन के नेताओं का 2024 के लोकसभा चुनाव में इसी गयाजी में पिंड कर उनके सपना को चकना चूर करेगें ।आज के पुतला दहन में प्रदेश किसान मोर्चा प्रवक्ता संतोष गुप्ता,,जिला पार्षद ज्योति पासवान,जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता, युगेश कुमार,सम्फुल देवी,, जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुरसुधांशु मिश्रा, कार्यालय मंत्री राजेश सिंह,कुमार सत्यशील,सरयू ठाकुर, ,करुणा सिंह,राजन पांडेय सहित दर्जनों कार्यकर्ता पुतला दहन कर विरोध दर्ज किया है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा की समीक्षात्मक बैठक

औरंगाबाद। विकसित भारत संकल्प यात्रा की समीक्षात्मक बैठक राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण, भारत सरकार की निदेशक श्रीमती लता गणपति द्वारा समाहरणालय के सभाकक्ष में किया गया।

इस समीक्षात्मक बैठक में सभी विभाग के जिला स्तरीय पदाधिकारी उपस्थित थे महोदय के द्वारा विकसित भारत संकल्प यात्रा के वहान परिचालन पर चर्चा की गई ।कार्यक्रम में भारत सरकार के सभी योजनाओं के विषय में चर्चा किया गया आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, प्रधानमंत्री उज्वला योजना, किसान कार्ड, हेल्थ कैंप, स्वंम सहायता समूह, विस्वकर्मा योजना, नाबार्ड से सम्बंधित आदि योजनाओं की समीक्षा की गई ` विशेष का आयुष्मान कार्ड ज्यादा से ज्यादा संख्या में बनाने हेतु निर्देशित किया गया तथा अन्य योजनाओं के लाभ कैंप स्थल पर दिलाने हेतु निर्देशित किया गया जिला पदाधिकारी महोदय के द्वारा बताया गया की वाहन 76 पंचायतों में भ्रमण किया है` जिसमे उपस्थि कम प्रतीत हो रही है महोदय के द्वारा सभी विभागों के पदाधिकारी तथा सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा संख्या में उपस्थिति दर्ज कराने हेतु निर्देशित किया गया` कम से कम 200 की उपस्थिति अनिवार्य की गयी` सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी विडिओ कांफ्रेंसिंग के माध्यम से समीक्षात्मक बैठक से प्रतिभाग किये जिन्हें जिला पदाधिकारी के द्वारा विकसित भारत संकल्प यात्रा को सफल बनाने हेतु निर्देशित किया गया ।

जिले के छह ब्लॉकों में 24 जगहों पर होगा नाइट ब्लड सर्वे, 26 से होगी शुरूआत

जीएनएम ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में मिला एलटी और स्वास्थ्यकर्मियों को प्रशिक्षण

जहानाबाद। जिले में फाइलेरिया उन्मूलन के लिए सर्वजन दवा अभियान कराने और फाइलेरिया प्रसार दर का पता लगाने के लिए छह ब्लॉकों के 24 साइटों पर नाइट ब्लड सर्वे कराया जाएगा। इसकी शुरूआत 26 दिसंबर से दो चरणों में होगी। ये बातें लैब टेक्नीशियन और स्वास्थ्य कर्मियों के जिला स्तरीय प्रशिक्षण के दौरान गुरुवार को जिला भीबीडीसी पदाधिकारी डॉ बिनोद कुमार ने कही। डॉ कुमार ने बताया कि नाइट ब्लड सर्वे के लिए माइक्रो प्लान तैयार कर सत्र स्थल का चुनाव कर लिया गया है। वहां पर रात के 8:30 से ब्लड सैंपल लिया जाएगा। एक सत्र स्थल पर कम से कम 300 सैंपल एकत्र किए जाएगें।

वहीं वेक्टर बॉर्न कंसल्टेंट निशीकांत ने बताया कि नाइट ब्लड सर्वे के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए सामाजिक ढांचे का सहारा लिया जा रहा है। धार्मिक स्थानों पर ऑडियो के माध्यम से तथा आरबीएसके के वाहनों से माइकिंग कराई जा रही है। इसके अलावा स्थानीय जनप्रतिनिधि, आशा और आंगनबाड़ी दीदीयों के माध्यम से जागरूकता फैलाई जा रही है।

लैब टेक्नीशियनों को मिला तकनीकी प्रशिक्षणः गुरुवार को हुए जिला स्तरीय प्रशिक्षण में लैब टेक्निशियन और स्वास्थ्य कर्मियों को तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया। इसके तहत सही तरीके से ब्लड सैंपल लेना, सैंपल को ठीक से स्लाइड पर चढ़ाना, उचित तकनीक का इस्तेमाल करते हुए उसे माइक्रोस्कोपिक जांच के लिए तैयार करना जैसे तकनीकी गुर सिखाए गए। उन्हें यह प्रशिक्षण पीरामल के चंदन ने पीपीटी के माध्यम से दिया। प्रशिक्षण के पश्चात उन्हें लैब ले जाकर माइक्रोफाइलेरिया के पहचान की विधि भी बताई गयी।

दो जिले प्री टास में: भीबीडी कंसल्टेंट निशिकांत ने बताया कि जिले के घोसी और मोदनगंज प्रखंड में अभी प्री टास के तहत नाइट ब्लड सर्वे हो रहा है। इसके पूर्व एमडीए राउंड में इन दोनों प्रखंडों में माइक्रोफाइलेरिया की दर एक से कम आयी थी। किसी भी प्रखंड में माइक्रोफाइलेरिया की दर एक या एक से अधिक आने पर ही सर्वजन दवा अभियान का संचालन किया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान जिला भीबीडीसी पदाधिकारी डॉ

संक्षिप्त खबरें

गलत बिजली बिल से किसान हो रहें हैं परेशानः संजय

मुंगेर। बरियारपुर प्रखंड का धान का कटोरा कहे जाने वाले क्षेत्र खड़िया में किसानों को विद्युत विभाग के द्वारा बिजली कटौती एवं बिजली के गलत बिल से परेशानी हो रही है बिहार मुखिया संघ उपाध्यक्ष सह मुखिया संजय कुमार सिंह ने जिलाधिकारी सहित विद्युत विभाग के वरिय अधिकारियों से मांग किया है कि किसानों को समुचित मात्रा में बिजली नहीं मिल पा रही है जिस कारण किसानों को अपने खेतों में सिंचाई करने में काफी परेशानी होती है मात्र 4 से 5 घंटे ही बिजली किसानों के लिए उपलब्ध होती है जिसमें किसानों का खेत पूरी तरह पटवन नहीं हो पाता है इसलिए किसानों के लिए विद्युत आपूर्ति की घंटा में बढ़ोतरी की जाए जिससे कि किसान अपने खेतों में समुचित सिंचाई करके अपने फसल की उपज की मात्रा बढ़ा सके वहीं दूसरी तरफ किसान पंकज कुमार प्रमोद कुमार सिंह कुंदन कुमार उमेश प्रसाद सिंह और रंजीत कुमार सहित अन्य किसानों ने कहा कि किसानों के लिए अनुदानित दर पर बिजली उपलब्ध कराई जाती है परंतु जब हम लोगों का बिजली बिल आता है तो वह अत्यधिक आता है समझ में नहीं आता है कि अनुदानित स्तर पर मिलने वाली विद्युत बिल की राशि इतनी अधिक कैसे आती है इसकी शिकायत कई बार की गई है परंतु कोई सुनवाई नहीं हुई है इतनी अत्यधिक विद्युत बिल आएगी तो हम लोग विद्युत कनेक्शन कटवाने के लिए मजबूर हो जाएंगे और किसानों को आगे बढ़ाने के लिए सरकार की यह लाभकारी योजना भी असफल साबित हो जाएगी।

संविधान को परिवर्तन करने आ रहे हैं आरएसएस प्रमुखःमंत्री

भागलपुर। आगामी 2024 के लोकसभा चुनाव ज्यों ज्यों नजदीक आते जा रही हैं, त्यों त्यों मंत्रियो का हलचल लगातार बढ़ती जा रही है। इसी बीच जिला परिक्षेत्र इलाके में अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति बिहार सरकार के मंत्री रत्न ेश सदा का दौरा चल रहा है। इस दौरे पर निकले मंत्री रत्नेश सदा के आगमन को लेकर जदयू के कार्यकताओं द्वारा प्रेसवार्ता की इसी क्रम में मंत्री सदा ने कहा कि आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत का जो भागलपुर में दौरा होने वाला है वह धर्म विरोधी दौरा है न तो वह संत है न ही उनसे कोई भी संबंध है। वही प्रमुख मोहन भागवत के दौरे पर भी कटाक्ष करते हुए कहा कि मोहन भागवत अनुसूचित जनजाति के संविधान को बदलने के लिए भागलपुर आ रहे हैं। वही मंत्री ने कहा कि अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति उच्च विद्यालय कंपनी बाग का भी निरीक्षण किया है, निरीक्षण के दौरान कई तरह की कमियों को भी देखा गया है, और उस कर्मियों को दूर करने की बात कही है। मंत्री से जब पत्रकार के द्वारा सवाल किया गया कि विद्यालय में किस तरह की कमियां हैं तो मंत्री सदा द्वारा कुछ भी बताने से इनकार किया है। वहीं आने वाले 2024 की लोकसभा चुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि एक दो हफ्ता में सभी इंडिया गठबंधन में सीट शेयरिंग का कार्य संपन्न हो जाएगा।

संस्था ने जरूरतमंदों के बीच बांटी जरूरत की सामग्री : संस्थापिका

भागलपुर। एक तरफ जहां मां आनंदी संस्थान के नेतृत्व में लाचार बेसहारा को समाज की मुख्य धारा से जोड़ कर कौशल विकास की क्षेत्र में आगे लाने के साथ साथ उन महिलाओं को स्वालंबी व सशक्त बनाने पर जोड़ दिया है। वही संस्थान की संस्थापिका प्रिया सोनी ने अपने सपनो को मानव सेवा हमारी सबसे बड़ी पूंजी के उद्देश्य को लेकर इस कड़ाके की ठंड को देखते हुए माँ आनंदी संस्था व उनकी टीम द्वारा स्थानीय सैंडिस काम्पाउंड के मैदान प्रांगण में एरोबिक्स स्थल पर हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी गर्म कपड़े, के साथ साथ खाने की सामग्री को जरूरतमंदो के बीच वितरण किया गया है। कार्यक्रम की शुरूआत मां आनंदी संस्था की संस्थापिका प्रिया सोनी एवं संस्था के सदस्यों ने संयुक्त रूप से गणेश वंदना के साथ किया गया, तत्पश्चात नीली वर्मा के द्वारा भजन की प्रस्तुति दी गई। वही कार्यक्रम में शामिल हुए सभी लोगों ने तालियां बजाकर उनका हौसला अफजाई के साथ अभिवादन करते हुए भजन का आनंद उठाया है।

महिला के साथ सुरक्षा कर्मी ने किया अभद्र व्यवहार

प्रात : किरण संवाददाता

- मामले को लेकर मरीजों व उनके परिजनों ने जमकर मचाया बबाल
- बदहाल व्यवस्था के बीच मरीज का हाल बेहाल

भागलपुर। इन दिनों ठंड के मौसम में आई अचानक बदलाव के कारण पूरे जिला परिक्षेत्र के अस्पताल में मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही हैं वही अस्पताल की कुव्यवस्था को लेकर मरीजों को बड़े अस्पताल की ओर रवाना कर दिया जाता रहा है। बदहाल व्यवस्था के बीच मरीज का हाल बेहाल को देखने वाला कोई भी नही दिख रहा है जहां सरकार मरीजों के इलाज व्यवस्था के नाम पर कड़ोरो खर्च करने के दाबे की ढोल पीटते नजर आती हैं लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही सामने देखने को मिलती हैं।

इसी कड़ी में पूर्वी बिहार के सबसे बड़ा जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय सह अस्पताल के ओपीडी विभाग में अपना इलाज हेतू रजिस्ट्रेशन काउंटर पर लगातार मरीजों की बढ़ती भीड़ के कारण अपना चिट्ठा कटावाने को लेकर मरीज व महिलाओं के साथ आए दिन अस्पताल के सुरक्षा में लगे सुरक्षा गार्ड के द्वारा लाइन में खड़े लोगों को सीधा रहने की बात करने के साथ मारपीट किये जाने का मामला सामने आने पर भी अस्पताल प्रशासन के द्वारा कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। जिसे अस्पताल के रजिस्ट्रेशन काउंटर पर सुरक्षा कर्मियों ने एक महिला को धक्का देकर सीधा खड़ा रहने के लिए शरीर को छूते दिख जाते हैं, जिसके बाद अस्पताल में मरीज का उपचार करने पहुंची महिलाएं अक्रोशित होकर मामले को लेकर हंगामा शुरू कर दिया। वही महिला मरीज के साथ मारपीट करने वाले सुरक्षा गार्ड को मरीजों की भीड़ ने पकड़ लिया और जमकर हाथापाई शुरू कर दी। वही अस्पताल के अन्य सुरक्षा कर्मियों के द्वारा गार्ड को किसी प्रकार से महिलाओं के चंगुल से छूटकर वहां निकल भाग खड़े हो गये। वहीं लाइन में खड़ी महिलाएं व मरीजों के साथ सुरक्षा गार्ड के इस दुर्व्यवहार को लेकर अन्य मरीज के बीच काफी आक्रोशित दृश्य साफ तौर पर देखा जा रहा है। इस दौरान हुए हंगामे को लेकर घंटे भर तक ओपीडी के रजिस्ट्रेशन काउंटर के कर्मियों को चिट्ठा काटने को रोक दिया गया था। वही दूर दराज से आए मरीजों के परिजनों व महिलाओं का कहना है कि अस्पताल प्रशासन के द्वारा जब ज्ञात है कि काउंटर पर महिलाओं की लाइन लगती है उक्त स्थल पर महिला सुरक्षा कर्मी की तैनाती ना कर पुरुष गार्ड की तैनाती कर दी जाती है जो गलत तरीके से महिलाओं के साथ व्यवहार करते हुए साफ तौर पर देखा जा सकता है, जिससे रोज महिलाओं के बीच गार्ड घुसकर तकरार करने की कोशिश में लगा रहता है। वही इस मामले को लेकर अस्पताल प्रशासन फिलहाल कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है। वहीं कर्मचारियों के द्वारा काफी समझाने बुझाने के बाद मरीज व महिलाएं शांत हुई।

वही दूसरी तरफ जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन अपनी सुरक्षा टीम के साथ अस्पताल के आईसीयू पहुंचे, लेकिन अस्पताल के किसी भी गतिविधियों पर कोई ध्यान नहीं दिया। वही जिलाधिकारी ने अस्पताल अधीक्षक व मौजूद चिकित्सक से जानकारी प्राप्त कर मौके से निकलते दिखे थे। अब सवाल यह है कि अस्पताल की इस कुव्यवस्था का जिम्मवारी कौन ले जहां एक तरफ रोगी कल्याण समिति की आड़ में रोजाना रजिस्ट्रेशन नंबर के नाम पर हजारों रुपये मरीजों से उगाही की जाती हैं तो वही व्यवस्था के नाम पर कभी एक्स-रे मशीन तो कभी सीटी स्कैन मशीन की खराबी तो कभी एक्स-रे प्लेट खत्म होने की जानकारी सामने आती रही हैं। बावजूद इसके जिम्मेदार अधिकारियों के पास गरीब लाचार व बेवस मरीजों के लिए व्यवस्था का हाल जानने का कोई समय नही है।

34 वां श्री श्याम महोत्सव का होगा भव्य आयोजन

नवगछिया (भागलपुर)। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी नववर्ष के अवसर पर श्री श्याम महोत्सव का 34वाँ महोत्सव आगामी 31 दिसंबर 2023 व 1 जनवरी 2024 को बाल भारती पोस्ट ऑफिस रोड स्थित श्याम मंदिर नवगछिया के प्रांगण में भव्य आयोजन किया जाएगा। उक्त आशय की जानकारी साझा करते हुए कार्यक्रम के मिडिया प्रभारी अशोक केडिया ने बताया कि महोत्सव की तैयारी जोरशोर से चल रही है, जिसमें विशेष आकर्षण 56 भोग, अलौकिक श्रंगार, भव्य दरबार, अखंड ज्योति दिव्य दर्शन, भजन-संकीर्तन एवं नृत्य नाटिका व झांकी का भव्य आयोजन के साथ निकाली जाएगी। इस महोत्सव में चार चांद लगाने के लिए भजन गायक एवं नृत्य-नाटिका संजीव शर्मा (सोनभद्र) से तो रोहित शर्मा जिमी (कोलकाता) से, मोंटू चानी एंड पार्टी (झांकी), (दिल्ली), लखन आर्य एवं रोहित बाबाजी (उज्जैन) युवराज भारद्वाज का नवगछिया आगमन होगा। वही महोत्सव को सफल बनाने हेतू मंडल के पूर्व अध्यक्ष अनिल केजरीवाल, अध्यक्ष रवि प्रकाश सरार्फ, सचिव वरुण केजरीवाल, कोषाध्यक्ष राकेश भरतिया, उपाध्यक्ष गोविंद केडिया, रूपेश रुंगटा, उपसचिव संदीप चिरानिया, विनीत चिरानिया, मीडिया प्रभारी अशोक केडिया, शंभू रूंगटा, शिव डोकानिया, नंदलाल तिवारी, हनी केजरीवाल, रोहित चौधरी, मानष चिरानिया, केशव उदयपुरिया, संजय चिरानिया, कानु चिरानियाँ आदि सहयोग में जोड़ सोर से लगे हुए है।

5 वर्षीय लापता बच्ची का मिला तालाब में शव

- बच्ची के शव बरामदगी की सूचना पर फैली सनसनी
- आंगनबाड़ी पढ़ने गई बच्ची वापस नहीं लौटी अपने घर

प्रात : किरण संवाददाता

जगदीशपुर (भागलपुर)। टीओपी बायपास थाना क्षेत्र के खीरीबांध गांव में आंगनबाड़ी पढ़ने गये एक 5 वर्षीय बच्ची के शव मिलने की सूचना मिलते ही आसपास के गांव इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना को लेकर सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक बच्ची नेहरा प्रवीण लापता चल रही थी। अचानक उनका मृत शव गांव के ही तालाब से बरामद किया गया है। जानकारी के अनुसार मृतका आंगनबाड़ी पढ़ने के लिए घर से निकली थी, लेकिन देर शाम के बाद भी वापस नहीं लौटी थी तो बच्ची के परिजनों ने काफी खोजबीन के बाद उक्त बच्ची के संबंध में कहीं से कोई आता-पता नहीं चल पाया जिसके बाद परिजनों ने आशंका जताया कि घर के बगल में बने तालाब के पास देखा जाय तो जिसके बाद मौके पर पहुंचे परिजनों ने मृत बच्ची को तालाब के पानी में डूबा हुआ पाया वही घटना को लेकर स्थानीय थाना पुलिस को जानकारी दी और वही पुलिस ने अंचल अधिकारी को जानकारी हेतू फोन कॉल किया गया लेकिन जगदीशपुर अंचल अधिकारी का मोबाइल बंद पाया गया था।वही घटना से आहत हुए परिजनों ने 10 हजार रुपये की रकम देकर प्राइवेट गोताखोर को बुलाकर तालाब से बच्ची के मृत शव को निकलवाया गया है। वही घटना को लेकर मृत बच्ची के पिता गुलफरान आलम ने बताया कि वह ऑटो चलाकर अपना घर का भरण पोषण करते हैं। मृतिका एक भाई एक बहन है मृतका के मुंह पर जख्म का निशान देखा जा रहा है वही परिजन द्वारा आशंका जताई है कि तालाब की मछली द्वारा नोचकर खाया गया हो लेकिन वही घटना से पीड़ित परिजनों ने बताया कि विगत मंगलवार की दोपहर 3:00 बजे ही बच्ची तालाब में गिरी होगी इसके बाद उसको मछली व अन्य जानवरों ने खा लिया है। सुबह मृत बच्ची के शव को निकाला गया है शव को देखा गया है कि मृत बच्ची के मुंह पर जख्म का निशान है। इसके बाद परिजनों ने शव को बाहर निकाल कर घटना की जानकारी पुलिस को दी इधर घटना की जानकारी मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी। वही मुहावजे की मांग को लेकर भागलपुर जगदीशपुर मुख्य मार्ग को परिजनों व स्थानीय लोगों ने जाम कर मुहवाजे की मांग को लेकर जमकर प्रदर्शन किया। मृतक के पिता का कहना है कि अपने स्वार्थ के लिए लोगों ने मिट्टी निकाल कर तालाब बना दिया है जिससे इलाके में सैकड़ो बच्चे खेलने के लिए जाते हैं और घटना का शिकार बन जाते हैं। इस घनी आबादी वाले जगहों पर तालाब बना दिया गया है, लेकिन उक्त तालाब की घेराबंदी नहीं की गई है, जिससे आए दिन गांव के बच्चे के साथ हादसा होते रहता है। इधर लोगों ने बताया कि स्थानीय जिला प्रशासन की अनदेखी किये जाने का साफ तौर पर लापरवाही सामने आ रही है। वही मौके पर पहुंची पुलिस ने घंटों बाद परिजनों को समझा बूझकर मामला शांत करवाया इधर रोड जाम होने का कारण पांच किलोमीटर तक लंबी जाम लग गई। जिसको छुड़ाने में पुलिस ने काफी मकासत के बाद यातायात को सुचारू रूप से संचालित करने का काम किया है। वही पुलिस ने मृत बच्ची के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

268 बोतल विदेशी शराब के साथ कारोबारी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता।

नवगछिया (भागलपुर)। बिहपुर थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के सोनवर्षा गांव के राजेश कुंवर के बहियार में बने बासा पर दबिश देकर भारी मात्रा में विदेशी शराब को बरामद किया है। मिली जानकारी के मुताबिक विदेशी ब्रांड के इंपेरियल ब्लू व अन्य ब्रांड के 375 एमएल की कुल 268 बोतल की बरामदगी की गई है। वही मौके से एक शराब कारोबारी इंद्रदेव कुंवर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। मामले को लेकर बिहपुर थाना के थानाध्यक्ष राजेश रंजन ने बताया कि मामले को लेकर गिरफ्तार शराब कारोबारी के विरुद्ध मद्ध निषेध उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर गिरफ्तार अभियुक्त को मेडिकल जांच के साथ न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

चोरी मामले में तीन शातिर बदमाश चढ़ा पुलिस के हत्थे

प्रात : किरण ब्यूरो

- लाखों रुपए के गहने की पुलिस ने की बरामदगीः एसपी सिटी

भागलपुर। इन दिनों जिले भर में लंबित मामलों के साथ साथ वर्तमान अपराधिक गतिविधियों पर निगरानी किये जाने व अपराधी की गिरफ्तारी को लेकर जिला नगर पुलिस टीम अलर्ड मोड पर चल रही हैं, वही अपराधियों की गिरफ्तारी को लेकर नगर पुलिसअधीक्षक अमित रंजन ने अपने कार्यालय बेस में प्रेसवार्ता आयोजित कर मामले की जानकारी साझा करने के साथ ही उन्होंने बताया कि विगत 28 नवंबर को बबरगंज थाना अंतर्गत कटधर के रहने वाले विनायक प्रताप द्वारा घर में चोरी होने की जानकारी दी गई थी। वही मामले की गम्भीरता को लेकर उक्त चोरी की घटित घटना के संबंध में एक आवेदन प्राप्त हुआ था. जिसमें पीड़ित वादी द्वारा बताया गया था कि रात्रि में अज्ञात अपराधियों द्वारा उनके घर का ताला तोड़कर नगद रुपए एवं सोने चांदी के आभूषण चोरी कर लिया गया है। जिसकी सूचना मिलने के बाद घटना से संबंधित मामले को लेकर स्थानीय मोजाहिदपुर के बबरगंज थाना में अज्ञात लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज किया गया था।

उक्त घटना को लेकर वरीय पुलिस अधीक्षक के द्वारा जारी आदेश के आलोक में पुलिस उपाधीक्षक नगर के नेतृत्व में एक टीम का गठन कर चोरी मामले के उद्भेदन सह अपराध कर्मियों की गिरफ्तारी किये जाने के निर्देशित किया गया था। वही गठित पुलिस टीम द्वारा चोरी की घटना से संबंधित साक्ष्य जुटाने की दिशा में आसपास के लगे सीसीटीवी कैमरे के फुटेज को खंगालने की कवायद शुरू की। वही टीम ने कैमरे की फुटेज की जांच के क्रम में ब्रह्मदेव शाह उर्फ सूरज की निशादेही प्राप्त की। जिसकी गिरफ्तारी को लेकर पुलिस टीम ने रणनीति तैयार कर तकनीकी अनुसंधान टीम के सहयोग से चोर ब्रह्मदेव उर्फ सूरज को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली है। वही पुलिस टीम के द्वारा कड़ी पूछताछ के बाद गिरफ्तार सूरज के निशानदेही पर गौरव गोस्वामी उर्फ बाबा को भी गिरफ्तार किया गया है, साथ ही इस कांड में चोरी के कई जेवर के खरीददार सह दुकानदार रामविलास साह को धरदबोचा गया है। साथ ही पुलिस टीम के कुशल नेतृत्व में चोरी की हुई जेवरात तथा 80 हजार 5 सौ रुपये नगद बरामदगी कर ली गई हैं।

वही एसपी सिटी ने कहा कि दुसरी ओर औद्योगिक थाना परिक्षेत्र इलाके में शराब के अवैध कारोबार को लेकर शराब तस्करी करने के मामले की गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि नववर्ष और क्रिसमस के अवसर पर शहरी क्षेत्र में शराब की बिक्री हेतु अवैध शराब की बिक्री किये जाने को लेकर कारोबारी द्वारा अवैध रूप शराब की तस्करी कर लाया जा रहा है। वही प्राप्त सूचना पर मिली जानकारी के तहत वरीय पुलिस अधीक्षक को अवगत कराया गया था, जिसके बाद उक्त मामले की गम्भीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक नगर के निदेर्शानुसार पुलिस उपाधीक्षक नगर के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन किया गया।

संत मुक्त स्वरूप देव जन्मोत्सव को मिलेगा राजकीय मेले का दर्जाः मंत्री रत्नेश

प्रात : किरण संवाददाता

उत्साह

- ढोलबज्जा नाम बदलकर मुक्तनगर धाम ढोलबज्जा घोषित कर प्रखंड बनाने की मांगः मंत्री

नवगछिया (भागलपुर)। मुक्ति नगर ढोलबज्जा में संत मुक्त स्वरूप देव साहब के 110वें जन्मोत्सव पर आयोजित चार दिवसीय विश्व कल्याण चेतना लोक कल्याण तपस्वी संत शक्ति आदर्श आचार संहिता संज्ञान महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया है। इस मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर आये बिहार के एससी-एसटी कल्याण मंत्री रत्नेश सदा ने संबोधित करते हुए कहा कि संत मुक्त स्वरूप साहब का जीवन वास्तव में जनकल्याण के लिए समर्पित रहा है, वही उन्होंने कहा कि संत मुक्त स्वरूप देव साहेब के जयंती को प्रत्येक वर्ष महोत्सव के रूप में मनाना वास्तव में संत योगेश ज्ञान स्वरूप तपस्वी व इनके अनुयायियों की संत मुक्त स्वरूप साहेब के प्रति उनकी श्रद्धा, विश्वास और सामाजिक सरोकार व अच्छे कर्मों को दशार्ता है।

साथ ही उन्होंने मंच पर से घोषणा करते हुए कहा कि संत मुक्त स्वरूप देव के जन्मोत्सव को राजकीय मेले का दर्जा दिलाएंगे। बिहार के तीन जिले भागलपुर, पूर्णिया और मधेपुरा की सीमा कोसी क्षेत्र पर अवस्थित ढोलबज्जा का नाम बदल कर मुक्तनगर धाम ढोलबज्जा कर प्रखंड बनाने की मांग संत योगेश ज्ञान स्वरूप तपस्वी के पूर्व मुखिया राजकुमार मुन्ना मंडल, सरपंच सुशांत कुमार, जदयू जिलाध्यक्ष त्रिपुरारी भारती, प्रशांत कन्हैया, विकास भारती एवं सैकड़ों ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त मांगपत्र मंत्री सदा को सौंपा है। वही मंत्री ने कहा है कि इसके लिए भी हम अपने स्तर से प्रयास करेंगे। मंत्री रत्नेश सदा के साथ स्थानीय थाना के थानाध्यक्ष प्रभात कुमार, प्रदेश सचिव प्रशांत कन्हैया, विकास, अचल, शुभम, खंतर, संजीत, बुलेट, मंटू, वकील, विष्णु कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता।

नवगछिया (भागलपुर)। नवगछिया पुलिस जिला परिक्षेत्र स्थित पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय नगरपारा के प्रांगण में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रभारी प्राचार्य मनोज कुमार झा, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्राचार्य दीपक कुमार, नगरपारा मुखिया प्रतिनिधि पवन सिंह एवं प्रसिद्ध कलाकारों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया है। कार्यक्रम को लेकर स्पिक मैके के बैनर तले भारत के प्रख्यात सरोद वादक पंडित पार्थो सारोथी चौधरी एवं तबला वादक पंडित आनंद गोपाल बंदोपाध्याय के पुत्र प्राण गोपाल बंदोपाध्याय के द्वारा भारतीय संगीत के प्रति बच्चों को जागरूक करने का प्रयास किया गया। वही सरोद वादक चौधरी ने कहा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो प्रमुख पद्धतियां हैं, हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत है, जबकि शास्त्रीय गायन सुर-प्रधान होता है, शब्द-प्रधान नहीं है, इसमें महत्व सुर का होता है। हिन्दुस्तानी संगीत के विभिन्न पहलुओं को गणित एवं अन्य विषयों से जोड़ कर बताने की कोशिश की, वही उन्होंने कहा कि संगीत से जुड़ कर ही आत्मीय सुख का अनुभव कर सकते हैं। मनमोहक कार्यक्रम की प्रस्तुति से आगन्तुक पंडित रविशंकर घराने के कलाकारों ने समाँ बाँध लोगों को मनमुग्ध कर दिया। इस मौके पर संस्था के सभी छात्र -छात्राओं एवं शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर कार्यक्रम का लुफ़्त उठाया।

पेंशन एवं अनुदान योजनाओं के संबंध में कार्यशाला का आयोजन

मुंगेर। जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग, मुंगेर द्वारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, आज प्रखंड सभागार, जमालपुर प्रखंड एवं बुनियाद केंद्र, धरहरा प्रखंड में संबंधित मुखिया गण, पंचायत सचिव, विकास मित्र एवं कार्यपालक सहायकों के लिए एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी, जमालपुर नंदकिशोर, टीएमसी धीरज कुमार, कार्यपालक सहायक सुश्री अर्चना कुमारी, सुश्री निधि कुमारी, कुमार गौरव सहित विभिन्न प्रखंडों के मुखिया गण, पंचायत सचिव, विकास मित्र एवं कार्यपालक सहायक आदि उपस्थित थे। जिला समाजिक सुरक्षा कोषांग, मुंगेर के सहायक निदेशक भुवन कुमार ने बताया कि कार्यशाला का आयोजन सकारात्मक परिणाम देने वाला रहा है।

पुलिस की बर्बरता पुनः आई सामने, बेगुनाह ग्रमीणो के साथ की मारपीट, हालत गंभीर

प्रात : किरण संवाददाता।

शाहकुण्ड (भागलपुर)। जिले भर में पुलिस कर्मियों के बर्बरता से बेगुनाहों के साथ मारपीट के मामले सामने आते रहे हैं इस पुलिस के ऐसे रवैये अपनाए जाने पर कई बेगुनाहों की जान जा चुकी हैं। इसी कड़ी में एक और घटना सजौर थाना क्षेत्र अंतर्गत राधानगर गांव इलाके में ग्रामीण के साथ स्थानीय पुलिस द्वारा बर्बरता से मारपीट करने का मामला सामने आया है। इस घटना को लेकर पूरे गांव इलाके में पूलसिंग कार्रवाई पर सवालों के घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है। वही घटना को लेकर सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक स्थानीय इलाके के ग्रामीण विकास कुमार को गलत तरीके से प्रताड़ित करने के साथ थाना के एसआई भगवान चौधरी व सिम्पल कुमारी अपने पुरे टीम के साथ ग्रामीण विकास के घर अचानक दबिश दे ग्रामीण गिरफ्तारी के साथ थाना लेजाया गया। जहां पुलिस ने जमकर उसकी पिटाई कर दी। वही मामले को लेकर ग्रामीण विकास कुमार के परिजनों ने बताया कि स्थानीय सजौर थाना प्रभारी सूरज सिंह के निर्देश पर थाने के एसआई भगवान चौधरी, सिम्पल कुमारी हमारे घर में रात दबिश दी। इस दौरान घर के मुख्य द्वार पर सोये मेरे पिता को जबर्न गाली गलौज करते हुए घर में घुसकर गिरफ्तार किया तो मेरे द्वारा अपराध क्या है कुछ नहीं बताया और विकास को थाना लेजाया गया है जहां पर उक्त दोनों पुलिस कर्मियों व थाना प्रभारी ने एक साथ मिलाकर मारपीट कर कर गम्भीर रूप से जख्मी व घायल कर अद्यरा हालत में छोड़ दिया गया। जबकि हम लोगों के विरुद्ध किसी प्रकार का थाने में मेरे किसी परिवार के लोगों के विरुद्ध कोई भी केस दर्ज है और न ही कोई मुकदमा है, बावजूद इसके पुलिस ने बर्बरता से विकास के साथ मारपीट कर घायल कर दिया है। वही घटना को लेकर घायल विकास ने बताया कि थाने से जब अद्यरी हालत में मुझे छोड़ा तो हमारे घर परिवार के लोगों ने त्वरित इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहकुंड में भर्ती कराया है जहां अस्पताल में मौजूद चिकित्सक द्वारा इलाज किया जा रहा है।

डीएम ने 11 किसान सलाहकारों को दिया चयन प्रमाण पत्र

मुंगेर। जिला पदाधिकारी, मुंगेर अवनीश कुमार सिंह द्वारा कुल 11 किसान सलाहकारों को समाहरणालय, मुंगेर के सभा कक्ष में चयन पत्र दिया गया। जिला कृषि पदाधिकारी, मुंगेर द्वारा बताया गया कि वर्तमान में जिले में कुल 101 पंचायतों हेतु 67 किसान सलाहकार कार्यरत है। उन्होंने कहा कि नये किसान सलाहकार के चयन से जिले में रिक्त पड़े पंचायतों में विभागीय कार्यों में प्रगति आयेगी एवं कार्य सुचारु रूप से संचालित हो सकेगा। नव चयनित किसान सलाहकार को एक सप्ताह के अन्दर जिला कृषि कार्यालय, मुंगेर के कार्यालय में योगदान देने का आदेश निर्गत किया गया है। उन्होंने कहा कि चयन पत्र वितरण के अवसर पर उप विकास आयुक्त, मुंगेर, जिला कृषि पदाधिकारी, परियोजना निदेशक, आत्मा, सहायक निदेशक(शुष्क) प्रक्षेत्र, सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण सहित अन्य लोग उपस्थित हुए।

जिले के प्रत्येक लोगों की समस्या एवं सुरक्षा के लिए सदैव संकल्पित व तत्पर रहती है जिला प्रशासन : डीएम

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। मुंगेर जिले में विगत माह हुए विभिन्न पर्व/त्योहारों को शांतिपूर्ण एवं सद्भाव पूर्वक संपन्न कराने को लेकर सभी समितियों के लिए धन्यवाद सह सम्मान समारोह का आयोजन गुरूवार को संग्रहालय सभाकक्ष में जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में किया गया। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक जगुनाथरेड्डी जलाल रेड्डी, नगर आयुक्त निखिल धनराज निपण्णीकर , अपर समाहर्ता मनोज कुमार, सदर अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार, सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राजेश कुमार, डिप्टी मेयर सहित केंद्रीय विसर्जन पूजा तथा पहलाम विसर्जन समिति के सदस्य एवं अन्य पूजा समितियों के सदस्यगण उपस्थित थे। समारोह का उद्घाटन जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इस मौके पर जिलाधिकारी ने सर्वप्रथम सभी पूजा एवं पहलाम समिति सदस्यों को सभी पर्व व त्योहारों को शांति एवं सद्भावपूर्ण माहौल में संपन्न कराने को लेकर धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन सदैव जिलावासियों की हर समस्याओं के समाधान के लिए सदैव तत्पर है और जिले के प्रत्येक लोगों की सुरक्षा के लिए संकल्पित है। जिला प्रशासन और आमजन एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक पर्व-त्योहारों को शांति एवं सद्भावपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के लिए जिस तरह जिला प्रशासन कटिबद्ध रहती है, उसी प्रकार आम जन और केंद्रीय पूजा विसर्जन एवं पहलाम विसर्जन समिति का भी सहयोग हमेशा चाहती रही है। दोनों पक्षों के बेहतरीन सहयोग एवं आपसी सामंजस्य के आधार पर ही जिले में सभी पर्व-त्योहार शांति एवं सद्भावपूर्ण माहौल में संपन्न हुए हैं। इसी प्रकार सभी पर्व त्योहारों एवं अन्य आयोजनों में भी आप अपना महत्वपूर्ण योगदान दें और जिला प्रशासन भी आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहेगा।

राज्यपाल ने एम यू टॉपर्स के बीच मेडल व प्रमाण पत्र किये वितरित

मुंगेर। मुंगेर विश्वविद्यालय के द्वारा आयोजित प्रथम दीक्षांत समारोह में पहुंचे राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने छात्र-छात्राओं को डिग्री प्रदान किया। राज्यपाल के द्वारा 70 गोल्ड मेडलिस्ट छात्र छात्राओं को डिग्री व मेडल सहित 700 छात्र छात्राओं को प्रमाण पत्र दिया गया। मुंगेर विश्वविद्यालय में पहली बार आरडी एंड डीजे कॉलेज परिसर में प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि कुलाधिपति सह राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर पटना से सड़क मार्ग द्वारा बेगूसराय होते हुए मुंगेर विश्वविद्यालय पहुंचे। राज्यपाल का स्वागत मुंगेर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर डॉ श्यामा राय ,मुंगेर के प्रमंडलीय आयुक्त संजय कुमार सिंह, आरक्षी उपमहानिरीक्षक संजय कुमार ने संयुक्त रूप से बुक्के देकर किया ।

कैरियर को लेकर महिलाओं का रुझान बदल रहा : जिला पदाधिकारी

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। जिला प्रशासन तथा महिला एवं बाल विकास निगम, मुंगेर के संयुक्त तत्वावधान में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के अंतर्गत बैद्यनाथ गर्ल्स+2 हाईस्कूल की छात्राओं को महिला थाना, पीपलपांती, मुंगेर में एक्सपोजर विजिट कराया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अवनीश कुमार सिंह, जिला पदाधिकारी, मुंगेर ने मौके पर मौजूद छात्राओं को अपार संभावनाओं से युक्त बताते हुए कि जीवन में मिलने वाले हर अनुभवों से सीखे। उन्होंने कहा कि महिला थाना में

हिसार की रेसलर अंतिम पंघाल को अर्जुन अवॉर्ड

पिता ने बेटी की पहलवानी के लिए बेच दी जमीन, रोज साढ़े 7 घंटे प्रेक्टिस, ओलिपिंक खेलेंगी

हिसार (एजेंसी)। हिसार के गांव भगाना की पहलवान अंतिम पंघाल का नाम अर्जुन अवॉर्ड के लिए चुना गया है। एशियन गेम्स में ब्रॉन्ज मेडल जीतने के बाद अब वह ओलिंपिक की तैयारी कर रही हैं। उनका सपना है कि वह ओलिंपिक में गोल्ड मेडल जीते। अंतिम पंघाल ने पहली बार एशियन गेम्स खेलते हुए ब्रॉन्ज मेडल हासिल किया। अंतिम पंघाल ने 53 किलोग्राम भारवर्ग में ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई किया है। अंतिम के पिता खेतीबाड़ी करते हैं और मां हाउस वाइफ है। वे 5 बहन-भाई हैं, जिनमें से 4 बहन और एक भाई है। अंतिम पंघाल का कहना है कि वे सुबह करीब साढ़े 5 बजे प्रैक्टिस पर जाती है और करीब साढ़े 9 बजे तक अभ्यास करती है। वहीं शाम को 5 से करीब साढ़े 8 बजे तक अभ्यास करती है।

पहलवानी के लिए पिता ने बेची डेढ़ एकड़ जमीन

अंतिम के पिता रामनिवास ने अपनी बेटी को पहलवान बनाने के लिए जमीन तक बेची दी थी। अंतिम करीब साढ़े 6-7 साल से अभ्यास कर रही है। उनकी बेटी के अभ्यास करवाने के लिए जब आर्थिक तंगी आई तो उन्होंने अपनी डेढ़ एकड़ जमीन बेच डाली। रामनिवास की नजर में बेटी की कामयाबी की राह में आर्थिक परेशानी बाधा न बने, इसलिए जमीन बेचनी पड़ी। शुरुआती दौर में जो परेशानियां हुईं, अब अंतिम के कामयाब आने के बाद उन्हें भूलकर सब खुश हैं।

हरियाणा के ओलिंपियन बॉक्सर छोड़ेंगे पॉलिटिक्स

विजेंदर सिंह ने सोशल मीडिया पर लिखा- राजनीति को राम-राम भाई, कांग्रेस से चुनाव लड़ चुके

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा के ओलिंपियन बॉक्सर विजेंदर सिंह ने राजनीति को राम-राम कर दिया है। विजेंदर ने गुरूवार सुबह 6 बजे सोशल मीडिया (एक्स) पर इस बारे में बयान दिया। जिसमें उन्होंने लिखा- 'राजनीति को राम-राम भाई'। उनके इस बयान से कयास लगाए जा रहे हैं कि उन्होंने पॉलिटिक्स से तौबा कर ली है। इससे पहले 2024 में उनके कांग्रेस की टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ने के कयास लगाए जा रहे थे। 2019 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ली थी। हरियाणा में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा में भी विजेंदर सिंह शामिल हुए थे। इसके साथ ही वह लगातार अपने बयानों में केंद्र सरकार को निशाने पर लेते रहे हैं।

2024 में भिवानी से चुनाव लड़ने का किया था ऐलान – इससे पहले विजेंदर सिंह ने हरियाणा के भिवानी से कांग्रेस की टिकट पर लोकसभा चुनाव 2024 लड़ने का ऐलान किया था। हालांकि,

उन्होंने कहा था कि यह फैसला पार्टी करेगी। इसके बाद उनकी आम आदमी पार्टी में शामिल होने की भी चर्चाएं शुरू हो गई थीं। विजेंदर सिंह ने किसान आंदोलन का भी समर्थन किया था।

कांग्रेस छोड़ने की चल रही थी चर्चा – अपने मुक्के के दम पर दुनियाभर में नाम कमाने वाले और देश को ओलिंपिक मेडल दिलाने वाले बॉक्सर विजेंदर सिंह जल्द ही कांग्रेस का हाथ छोड़ने की चर्चा के बीच यह ऐलान किया है। चर्चा यह भी चल रही थी कि वह बहुत जल्द आम आदमी पार्टी में शामिल होंगे। हालांकि विजेंदर सिंह दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी कब जॉइन करेंगे, इसकी कोई आधिकारिक सूचना सामने नहीं थी।

2019 में लड़ा था लोकसभा चुनाव –साल 2019 में लोकसभा चुनाव से ठीक पहले विजेंदर सिंह ने राजनीति में कदम रखा था। कांग्रेस ने साउथ दिल्ली सीट से विजेंदर सिंह को मैदान में उतारा था, मगर यहां उन्हें करारी हार का सामना करना पड़ा था। विजेंदर सिंह जाट समुदाय से आते हैं। उन्होंने 2008 बीजिंग ओलिंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। इतना ही नहीं, एशियन गेम्स में उन्होंने गोल्ड मेडल अपने नाम किया था।

बॉलीवुड में भी रहे एक्टिव – विजेंदर सिंह ने एक्टर के रूप में बॉलीवुड में अपनी शुरुआत 13 जून 2014 को रिलीज हुई फिल्म फगली से किया था। फिल्म का निर्माण ग्रेजिंग गोट प्रोडक्शंस द्वारा किया गया है, जिसके मालिक अक्षय कुमार और अश्विनी यार्डी हैं। हालांकि उनकी इस फिल्म को औसत से ऊपर रिव्यू मिले थे। इससे पहले 2011 में दक्षिण भारतीय डायरेक्टर आनंद द्वारा बनाई जाने वाली एक फिल्म को लेकर भी चर्चा शुरू हुई थी, लेकिन बाद में विजेंदर सिंह ने ही इसकी पुष्टि नहीं की।

130 करोड़ हेरोइन में आया था नाम

पंजाब पुलिस ने अर्जुन पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ी जगदीश सिंह उर्फ भोला के घर से 130 करोड़ रुपए की 26 किलो हेरोइन बरामद किया था। तस्कर अनूप सिंह ने दावा किया था कि विजेंदर सिंह और उनके दोस्त राम सिंह ने कई मर्तबा हेरोइन खरीदी थी। पुलिस की कड़ी पूछताछ में विजेंदर के दोस्त राम सिंह ने ड्रग्स लेने की बात स्वीकार भी की थी। तस्कर के घर में बॉक्सर विजेंदर सिंह की तस्वीर मिली तो घर के बाहर उनकी पत्नी के नाम रजिस्टर्ड कार भी बरामद की गई थी। हालांकि इस पूरे मामले में विजेंदर और उनकी पत्नी अर्चना ने पुलिस से पूछताछ में खुद को निर्दोष बताया था।

दक्षिण अफ्रीका टी20 लीग 10 जनवरी से होगी शुरू, शास्त्री करेंगे कमेंट्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व मुख्य कोच और मशहूर कमेंटेटर रवि शास्त्री को 10 जनवरी से शुरू होने वाले दक्षिण अफ्रीका टी20 लीग (एसए20) के लिए कमेंट्री पैनल में शामिल किया गया है। आयोजकों की

विज्ञप्ति के अनुसार शास्त्री के अलावा इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर स्टुअर्ट ब्रॉड, केविन पीटरसन और मार्क बूचर, दक्षिण अफ्रीका के एबी डी विलियर्स, शॉन पोलाक और क्रिस मॉरिस भी कमेंट्री पैनल का हिस्सा हैं। एसए20 लीग के आयुक्त ग्रीम स्मिथ ने कहा, ''हम एसए20 के दूसरे सत्र के लिए मौजूद कमेंटेटरों और प्रस्तोताओं की क्षमता से रोमांचित है। लीग हमारी कहानी बयां करने के लिए माइक्रोफोन के पीछे विश्वसनीय आवाजों के महत्व को समझती है। एसए20 लीग का आयोजन 10 जनवरी से 10 फरवरी के बीच किया जाएगा तथा भारत में इसका प्रसारण जिओ सिनेमा और स्पोर्ट्स18 पर होगा। म्युमेलेलो 'पॉमी' मबांगवा, माइक हेज़मैन, मार्क निकोलस और मोत्शिदिसी मोहोनो भी कमेंट्री पैनल में शामिल हैं।

संजय सिंह रेसलिंग फेडरेशन के अध्यक्ष बने

पिछली बॉडी में जॉइंट सेक्रेटरी थे ; कॉमनवेल्थ चैंपियन अनीता को हराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले 11 महीनों से विवादित रेसलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया को आज नया अध्यक्ष मिल गया है। पिछली बॉडी में जॉइंट सेक्रेटरी रहे संजय सिंह नए अध्यक्ष बन गए हैं। उन्होंने कॉमनवेल्थ चैंपियन अनीता सिंह श्योराण को हराया। संजय सिंह को 40 वोट मिले, जबकि अनीता श्योराण को 7 वोट ही मिले। गुरुवार सुबह 11 बजे हुई मीटिंग में बॉडी के पदाधिकारियों के लिए वोटिंग हुई। वोटों की गिनती दोपहर 1.30 बजे शुरू हुई। अध्यक्ष पद की दूसरी कैंडिडेट अनीता सिंह महिला पहलवानों के यौन शोषण के मामले में बृजभूषण के खिलाफ गवाह भी हैं। उन्हें बृजभूषण के खिलाफ धरना देने वाले पहलवानों का समर्थन था। फेडरेशन के पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण सिंह इस बार चुनाव नहीं लड़े। वे 12 साल से इस पद पर रहे।

प्रेम लोछब जनरल सेक्रेटरी बने – जनरल सेक्रेटरी के पद पर प्रेम लोछब जीते। उन्होंने पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण सिंह के समर्थक दर्शन लाल को हराया।

राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के पदाधिकारी चुनते हैं अध्यक्ष – डब्ल्यूएफआई के पदाधिकारियों का चुनाव जनरल काउंसिल की बैठक में होता है। चुनाव में फेडरेशन से एफिलिएडेट एसोसिएशन के पदाधिकारी वोट डालते हैं। हर स्टेट फेडरेशन से प्रेसिडेंट और सेक्रेटरी यानी दो वोट होते हैं। दिल्ली से दो और बाकी केंद्रशासित प्रदेश के एक-एक वोट होते हैं। अगर एक पद के लिए एक से ज्यादा दावेदार हैं, तो ही वोटिंग होती है। ऐसा न हो, तो पदाधिकारी निर्विरोध चुन लिए जाते हैं। 2019 में बृजभूषण शरण सिंह निर्विरोध ही अध्यक्ष बने थे।

पिछले साल तक थे माली, अब गुजरात टाइटन्स ने 10 करोड़ में खरीदा

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के स्पेंसर जॉनसन पिछले साल तक 'लैंडस्केप' माली का काम कर रहे थे लेकिन दुबई में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) नीलामी में गुजरात टाइटन्स द्वारा 10 करोड़ रुपए की बड़ी राशि में खरीदे जाने के बाद उनकी मां के चेहरे पर मुस्कान आ गई है। ऐसा भी समय था जब लग रहा था कि जॉनसन का क्रिकेट करियर खत्म हो जाएगा।

जॉनसन ने कहा, 'आठ महीने पहले मेरे पास राज्य क्रिकेट का कोई करार या बिग बैश का अनुबंध भी नहीं था। मैं 'लैंडस्केप' पर पौधे लगाने का काम कर रहा था। इसलिए 18 महीने बाद निश्चित रूप से हालात बदल गए हैं। दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के लिए 2017 में पेशेवर पदार्पण के दौरान उनके पैर में स्ट्रेस फ्रेक्चर हो गया था जिसके कारण वह तीन साल तक क्रिकेट से बाहर रहे और फिर अनुबंध भी उनके हाथों से चला गया।

सर्जरी और 'रिहैबिलिटेशन' के बाद 2022 में इस बाएं हाथ के तेज गेंदबाज ने

दक्षिण ऑस्ट्रेलिया से फिर अनुबंध किया और इस साल जनवरी में ब्रिसबेन हीट के लिए बिग बैश लीग में पदार्पण किया। पिछले बिग बैश लीग सत्र में इस 28 साल के तेज गेंदबाज ने 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी कर सभी को आकर्षित किया।

पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज आशीष नेहरा की कोचिंग वाली आईपीएल फ्रेंचाइजी ने ही उन्हें खरीदा जिससे वह गुजरात टाइटन्स के राशिद खान के बाद दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। 'द हंड्रेड' में खेलने के बाद जॉनसन पर राष्ट्रीय चयनकर्ताओं का ध्यान गया और उन्हें ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने के लिए चुना गया। उन्होंने इंदौर में अगस्त में भारत के खिलाफ अपना एकमात्र वनडे खेला जिसमें उन्होंने आठ ओवर में 61 रन दिए लेकिन विकेट नहीं ले सके। उन्होंने अपने दोनों टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेले। जॉनसन ने कहा कि आईपीएल का लुभावना अनुबंध मिलना विशेष पल है लेकिन इससे ज्यादा संतोषजनक उनकी मां के चेहरे पर मुस्कान देखना था। बिग बैश लीग मैच से पहले जॉनसन ने कहा, 'एडीलेड में अपनी मां के चेहरे पर 'फेसटाइम' पर मुस्कान देखना अच्छा था। यह मेरे लिए ही खुशी का पल नहीं है बल्कि मेरे पूरे परिवार के लिए खुशी का पल है। यह काफी विशेष है।

इंटर मियामी की तरफ से कम से कम छह मैचों में नहीं खेल पाएंगे लियोनेल मेसी

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉलर लियोनेल मेसी अपनी राष्ट्रीय टीम के साथ व्यस्त होने के कारण मेजर लीग सॉकर की टीम इंटर मियामी की तरफ से कम से कम छह मैचों में नहीं खेल पाएंगे। मेसी का यह इंटर मियामी में पहला पूर्ण सत्र होगा। मियामी अमेरिका की शीर्ष फुटबॉल प्रतियोगिता मेजर लीग सॉकर में अपने

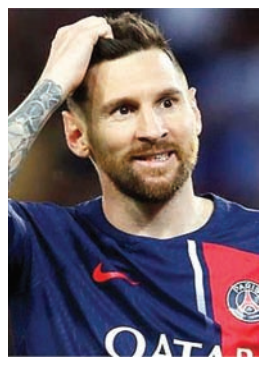

अभियान की शुरुआत 21 फरवरी को रियल साल्ट लेक के खिलाफ अपने घरेलू मैदान पर करेगा। मेजर लीग सॉकर ने बुधवार को अगले सत्र के लिए कार्यक्रम घोषित किया। इसके अनुसार प्रत्येक टीम 34 मैच खेलेगी। विश्व की अधिकतर फुटबॉल लीग फीफा के कार्यक्रम के दौरान अपने मैचों का आयोजन नहीं करती हैं लेकिन मेजर लीग सॉकर ने अंतरराष्ट्रीय मैचों के दौरान भी लीग को जारी रखने का फैसला किया है। इससे कई शीर्ष खिलाड़ी अपनी राष्ट्रीय टीम के साथ व्यस्त होने के कारण इस प्रतियोगिता में नहीं खेल पाएंगे। इन खिलाड़ियों में मेसी भी शामिल हैं। मेसी मियामी के रियल बुल्स के खिलाफ 23 मार्च को होने वाले मैच के दौरान अर्जेंटीना की टीम के साथ हो सकते हैं। इसके अलावा वह फिलाडेल्फिया (15 जून), कोलंबस (19 जून), नैशविले (29 जून), चार्लोट (3 जुलाई) और सिनसिनाटी में (6 जुलाई) के खिलाफ भी मैच नहीं खेल पाएंगे।

पाकिस्तान को लगा करारा झटका, तेज गेंदबाज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से बाहर

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मंगलवार से मेलबर्न में होने वाले दूसरे टेस्ट क्रिकेट मैच से पहले तब करारा झटका लगा जब उसके तेज गेंदबाज खुर्रम शहजाद पसली में फ्रैक्चर और पेट की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण टेस्ट श्रृंखला से बाहर हो गए। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने पुष्टि की खुर्रम शहजाद की बाईं पसली में फ्रैक्चर है तथा विशेषज्ञों से सलाह मशविरा करने के बाद यह फैसला किया गया कि वह मेलबर्न में 26 दिसंबर से और सिडनी में 3 जनवरी से शुरू होने वाले दूसरे और तीसरे टेस्ट मैच में खेलने के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे। पीसीबी ने बयान में कहा, 'खुर्रम शहजाद चोटिल होने के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के बाकी मैचों से बाहर हो गए हैं। पहले टेस्ट मैच के दौरान उन्होंने अपनी बायीं तरफ की पसली में दर्द की शिकायत की थी।% खुर्रम शहजाद ने पर्थ में खेले गए पहले मैच में टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करते हुए 5 विकेट हासिल किए थे। ऑस्ट्रेलिया ने यह मैच 360 रन के बड़े अंतर से जीता था।

स्टोक्स-आर्चर को टी20 विश्व कप टीम में जगह मिलेगी या नहीं, इंग्लैंड के कोच ने खोल दिया राज

तारोबा (एजेंसी)। इंग्लैंड की सफेद गेंद की प्रारूप की टीम के कोच मैथ्यू मोट ने कहा कि स्टार आलराउंडर बेन स्टोक्स और तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की मैच जिताने की काबिलियत को देखते हुए उनका 2024 टी20 विश्व कप के लिए टीम में होना निहायत जरूरी है इसलिये चोट से जूझ रहे इन दोनों खिलाड़ियों के लिए टीम में जगह बनी रहेगी।

स्टोक्स के घुटने का नवंबर में ऑपरेशन हुआ था और उनके अगले साल जनवरी से मार्च तक भारत में होने वाली टेस्ट श्रृंखला के लिए इंग्लैंड की कप्तानी के लिए फिट होने की उम्मीद है। वहीं आर्चर कोहनी की चोट के कारण मार्च से इंग्लैंड के लिए नहीं खेले हैं। इन दोनों के फिटनेस हासिल करने के बाद टी20 विश्व कप टीम में जगह बनाने की उम्मीद है जो जून में शुरू होगा।

मोट से जब पूछा गया कि क्या स्टोक्स और आर्चर विश्व कप चयन के लिए उपलब्ध होंगे तो उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि यह लाजमी है। उन्होंने यहां वेस्टइंडीज के खिलाफ पांचवें और अंतिम टी20 अंतरराष्ट्रीय से पहले कहा, 'बेन प्रत्येक विभाग में मैच जिताने की काबिलियत मुहैया कराने के अलावा हमें शीर्ष छह में एक तेज गेंदबाज रखने का विकल्प देते हैं जिससे आपको टीम का संतुलन बनाने के लिए कई विकल्प मिल जाते हैं, इससे चयन काफी आसान बन जाता है। इसलिये यह लाजमी ही है।

उन्होंने कहा, 'जहां तक जोफ्रा की बात है तो वह अपनी तेज रफ्तार से पारी में कोई भी ओवर डाल सकता है। आपके लिए सुपर ओवर डाल सकता है, जब जरूरत हो अंतिम ओवर डाल सकता है। आर्चर लगातार चोटों से जूझते रहे हैं जिससे वह 2021 के बाद से टेस्ट क्रिकेट से बाहर हैं। उन्होंने 2023 में सफेद गेंद के महज सात मैच खेले हैं। उन्हें अगले साल जनवरी-मार्च में भारत का दौरा करने वाली टेस्ट टीम में नहीं चुना गया है।

टी20 विश्व कप अगले साल वेस्टइंडीज और अमेरिका में जून में खेला जायेगा। मोट ने संकेत दिया कि जोस बटलर और फिल साल्ट की सलामी जोड़ी के टी20 विश्व कप टीम में बने रहने की उम्मीद है। इन दोनों ने पिछली दो पारियों में लगातार शतकीय साझेदारी बनायी है। मोट ने कहा, 'यह जोड़ी शानदार खेल दिखा रही है।

धोनी का उत्तराधिकार कौन ?

सवाल पर कोच स्टीफन फ्लेमिंग बोले- हमारे पास 10 साल से योजना है

दुबई (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने मंगलवार को 5 बार के आईपीएल चैंपियन एमएस धोनी के कप्तान के रूप में उत्तराधिकार की योजना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए

कहा कि उनके पास लगभग 10 वर्षों से पूर्व भारतीय कप्तान के लिए उत्तराधिकार की योजना थी। आईपीएल 2024 की नीलामी में अब तक सीएसके ने रचिन रवींद्र, डेरिल मिशेल और शार्दुल ठाकुर को खरीदा है।

कोका-कोला एरेना में मीडिया से बात करते हुए, फ्लेमिंग ने सीएसके के कप्तान के रूप में धोनी की जगह लेने की योजना के बारे में बात की और कहा कि जब तक टीम और फ्रेंचाइजी के लिए जुनून है, वे आगे बढ़ते रहेंगे। फ्लेमिंग ने कहा कि हमारे पास लगभग 10 वर्षों से एमएस के लिए उत्तराधिकार की योजना है। यह एक चर्चा का विषय होने वाला है, लेकिन वह उतना ही व्यस्त और उत्साही है जितना मैंने उसे कुछ समय से देखा है। जब तक उनमें टीम और फ्रेंचाइजी के लिए वह जुनून रहेगा, हम आगे बढ़ते जाएंगे।

2022 में आईपीएल में अपने पहले गेम से ठीक पहले, चेन्नई ने एमएस धोनी की जगह रवींद्र जडेजा को कप्तान चुनकर एक प्रयास किया। 5 बार के चैंपियन इस बदलाव के बावजूद लड़खड़ा गए और अपने शुरुआती सात मैचों में सिर्फ एक जीतकर स्टैंडिंग में आखिरी स्थान पर रहे। आखिरकार धोनी को दोबारा कप्तानी संभालनी पड़ी। लेकिन 2023 में, इस दिग्गज ने चेन्नई को गौरव दिलाया, जब उन्होंने अहमदाबाद में खेले गए बारिश से प्रभावित फाइनल में गुजरात टाइटंस को हराकर चैंपियनशिप जीती।

पाकिस्तान के पूर्व कप्तान अजहर अली ने एनसीए निदेशक पद के लिए किया आवेदन

कराची (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व टेस्ट और एकदिवसीय कप्तान अजहर अली ने लाहौर स्थित राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के निदेशक पद के लिए आवेदन किया है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने एनसीए के निदेशक पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए थे और विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार अजहर ने न सिर्फ आवेदन किया है बल्कि उन्होंने इस पद में गहरी

दिलचस्पी भी दिखाई है। सूत्रों ने कहा, 'पीसीबी भी इससे खुश है कि अजहर ने इस पद में दिलचस्पी दिखाई है क्योंकि उनकी क्रिकेट और शैक्षिक पृष्ठभूमि अच्छी है। अजहर ने पिछले साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। उन्होंने पाकिस्तान की तरफ से 97 टेस्ट और 53 वनडे मैच खेले हैं। इसके अलावा उन्हें 263 प्रथम श्रेणी क्रिकेट मैच खेलने का भी अनुभव है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वेस्टइंडीज ने टेस्ट टीम की घोषणा की, 7 अनकैप्ड खिलाड़ियों को दी जगह

सेंट जॉन्स (एंटीगुआ) (एजेंसी)। वेस्टइंडीज ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अगले महीने होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है जिसमें सात अनकैप्ड खिलाड़ी शामिल हैं। क्रैग ब्रैथवेट टीम की कप्तानी करेंगे जबकि अल्जारी जोसेफ को उप-कप्तान बनाया गया है। टीम में सात अनकैप्ड खिलाड़ियों में बल्लेबाज जाचरी मैकास्की, विकेटकीपर टेविन इमलाच, ऑलराउंडर जस्टिन ग्रीव्स, केवम हॉज, केविन सिंक्लेयर, तेज गेंदबाज अकीम जॉर्डन और शमर जोसेफ हैं। वेस्टइंडीज टीम 30 दिसंबर को ऑस्ट्रेलिया पहुंचेगी और 2 से 9 जनवरी तक एडिलेड में तैयारी शिविर आयोजित करेगी, जिसके बाद करेन रोल्टन ओवल (केआरओ) में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया इलेवन के खिलाफ चार दिवसीय प्रथम श्रेणी अभ्यास मैच 10 से 13 जनवरी तक एडिलेड में होगा।

दोनों टीमें फ्रैंक वॉरेल ट्रॉफी के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी जिसका नाम वेस्टइंडीज के महान ऑलराउंडर और कप्तान के सम्मान में रखा गया है। पहला टेस्ट 17 से 21 जनवरी तक एडिलेड ओवल में लाल गेंद से होगा और दूसरा गुलाबी गेंद

से डे/नाइट मैच 25 से 29 जनवरी तक ब्रिस्बेन के गाबा में होगा।वेस्टइंडीज के प्रमुख चयनकर्ता डेसमंड हेन्स ने कहा, कुछ प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपलब्धता से टीम प्रभावित हुई है। हालांकि हमने पिछले साल से एक बहुत मजबूत रेड-बॉल कार्यक्रम चलाया है जिसने पूरे क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रतिभाओं को उजागर किया है। उन्होंने कहा, चयनित खिलाड़ियों ने उन्हें दिए गए प्रत्येक टेस्ट को पास कर लिया है और अब उन्हें टेस्ट क्षेत्र में अपने कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर दिया जाना चाहिए। ऑस्ट्रेलिया से बाहर हमेशा एक चुनौती होती है, लेकिन हमें अपनी टीम पर भरोसा है।

ऑस्ट्रेलियाई दौरे के लिए वेस्टइंडीज की टेस्ट टीम – क्रैग ब्रैथवेट (कप्तान), अल्जारी जोसेफ (उप-कप्तान), टेगेनरीन चंद्रपॉल, किर्क मैकेंजी। एलिक अथानाज़े, केवम हॉज, जस्टिन ग्रीव्स, जोशुआ डासिल्वा, अकीम जॉर्डन, गुडाकेश मोती, केमर रोच, केविन सिंक्लेयर, टेविन इमलाच, शमर जोसेफ, ज़ाचरी मैकास्की

गुरुग्राम नई रफ्तार को तैयार, 16 एकड़ जमीन पर बसेगा सेक्टर-13, ड्रीम सिटी योजना में बदलाव

नईदिल्ली, एजेंसी। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण (एचएसवीपी) द्वारा अब गुरुग्राम में ओल्ड दिल्ली रोड पर 16 एकड़ जमीन में सेक्टर-13 को विकसित किया जाएगा। इसको लेकर एचएसवीपी ने योजना तैयार कर ली है। एचएसवीपी सेक्टर में अतिक्रमण हटाकर रिहायशी प्लॉट काटेगा। इससे पहले यहां पर ड्रीम सिटी बनाने की योजना थी।

एचएसवीपी ने 2003 में ओल्ड दिल्ली रोड पर ड्रीम सिटी विकसित करने के लिए 16 एकड़ जमीन का अधिग्रहण किया था। लोगों ने इसका विरोध किया था। जमीन मालिकों ने अधिग्रहण के खिलाफ कोर्ट की ओर रुख करते हुए याचिका दायर की थी। अब मामले में 20 वर्ष के बाद प्राधिकरण की मामले में जीत हुई है। बुधवार को एचएसवीपी की भूमि अधिग्रहण अधिकारी सुमन भाकर ने जमीन का अवॉर्ड सुनाया। इसमें संबंधित जमीन के मालिकों को चार लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा दिया जाएगा।

फरीदाबाद : मंझावली पुल ओपनिंग को लेकर नया अपडेट; ग्रेटर नोएडा समेत इन 5 कारोबारी शहरों को होगा फायदा: कब्जे हटाने का अभियान चलेगा : जानकारी के अनुसार सेक्टर-13 की इस 16 एकड़ जमीन पर लोगों ने कहीं पर स्थायी और अस्थायी रूप से अवैध कब्जा किया हुआ है। ऐसे में प्राधिकरण सभी औपचारिकताएं पूरा करने के बाद अतिक्रमण हटाकर जमीन को कब्जे में लिया जाएगा। इसके बाद सेक्टर को

विकसित करने की योजना पर काम शुरू किया जाएगा।

वहीं, अब शहर के बीचों-बीच लोगों को सपनों का घर बनाने के लिए रिहायशी प्लॉट मिल सकेंगे। ओल्ड डीएलएफ के सामने यह सेक्टर की जमीन को अधिग्रहण एचएसवीपी ने किया था। सेक्टर-14 के सामने ही सेक्टर-13 को विकसित किया जाएगा। सेक्टर विकसित होने के बाद यहां पर लोगों को भविष्य में काफी सुविधाएं मिलेंगी। साथ ही दूसरे सेक्टरों में भी व्यवस्थाएं बेहतर होंगी।

जमीन मालिकों को मुआवजा मिलेगा: जमीन अधिग्रहण को लेकर जमीन मालिकों ने पहले हाई कोर्ट में फिर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। अब प्राधिकरण इस मामले में जीत हासिल कर ली है। अब विभाग ने प्रक्रिया को पूरी करते हुए बुधवार को जमीन मालिकों को भूमि अधिग्रहण अधिकारी ने आवॉर्ड सुनवाया है। चार लाख रुपये प्रति एकड़ के हिसाब से जमीन मालिकों को मुआवजा दिया जाएगा, जो कि आज के समय में कुछ भी नहीं है। ओल्ड दिल्ली रोड पर सेक्टर-14 के सामने की जमीन की कीमत करोड़ों में है, लेकिन 20 साल पहले के हिसाब अब जमीन मालिकों को मुआवजा मिलेगा। कम मुआवजा मिलने से अब जमीन मालिकों में मायूसी छाई हुई है।

देरी के कारण ड्रीम सिटी की योजना रद्द: एचएसवीपी ने जिस समय सेक्टर-13 की जमीन का अधिग्रहण किया था, उस समय एचएसवीपी द्वारा यहां ड्रीम सिटी विकसित करने की योजना तैयार की थी। ड्रीम सिटी विकसित करने के लिए ही जमीन का अधिग्रहण किया गया था, लेकिन बाद में अब 20 साल तक लंबा मामला चलने के कारण विभाग ने योजना में बदलाव कर दिया है। अब यहां 16 एकड़ जमीन में 100 गज, 200 गज, 300 गज, 500 गज के प्लॉट काटे जाएंगे। इसके अलावा यहां लोगों को पार्क, ग्रीन बेल्ट, सामुदायिक भवन समेत कई प्रकार की सुविधाएं लोगों को इस सेक्टर में मिलेगी।

-विकास ढांडा, संपदा अधिकारी-1, एचएसवीपी, जमीन पर ड्रीम सिटी विकसित करने के लिए अधिग्रहण किया था, लंबा समय बीतने के बाद सेक्टर-13 को विकसित किया जाएगा।

आईजीआई पर बनेगा देश का पहला मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब, यात्रियों को मिलेंगी हाईटेक सुविधाएं

नईदिल्ली, एजेंसी। इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट (आईजीआई) पर जल्द ही देश का पहला मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब बनेगा। इसे एयरोसिटी के पास एयरपोर्ट संचालन कंपनी जीएमआर बनाएगी। इसके बनने से यात्रियों के लिए एयरपोर्ट से हवाई जहाज और मेट्रो के अलावा बस की सुविधा भी उपलब्ध होगी। इसके अलावा यहां पर ऑटोमेटेड पैसेंजर मूवर, आरआरटीएस और पैसेंजर ट्रांसपोर्ट सेंटर बनाने का भी प्रस्ताव है।

डायल के अनुसार, आईजीआई एयरपोर्ट से विदेश सफर करने के लिए दिल्ली के अलावा उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश से यात्री आते हैं। इनमें से बड़ी संख्या में यात्री बस से अलग-अलग बस अड्डों पर आते हैं।

फिर वहां से बस-मेट्रो में सवार होकर एयरपोर्ट पहुंचते हैं। इसकी प्रमुख वजह दिल्ली एयरपोर्ट पर बसों के खड़े होने की सुविधा न होना है। ऐसे यात्रियों की सुविधा के लिए एयरपोर्ट पर ही बस अड्डा तैयार किया जा रहा है। इसमें 50 बसें एक साथ खड़ी हो सकेंगी। दिल्ली परिवहन विभाग के परामर्श से इसे विकसित किया जाएगा।

दूसरी मेट्रो लाइन भी जल्द पहुंचेगी: डायल के अनुसार, अभी एयरोसिटी में मेट्रो एक्सप्रेस लाइन का स्टेशन है। डीएमआरसी द्वारा चौथे फेज में सिल्वर लाइन मेट्रो बनाई जा रही है। यह लाइन तुगलकाबाद से एयरोसिटी जाएगी। इस लाइन के एयरोसिटी पहुंचने से नई दिल्ली के साथ दक्षिण दिल्ली भी एयरोपोर्ट से मेट्रो के जरिये जुड़ जाएगी।

यात्रियों को अत्याधुनिक सुविधाएं दी जाएंगी: प्रस्तावित बस अड्डे में एयरपोर्ट के मानक अनुसार, यात्रियों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं होंगी। इसमें एफ एंड बी आउटलेट, ईवी चार्जिंग स्टेशन, वेटिंग हॉल, इंटरनेट सेवा, बेहतर माहौल, व्यवसाय केंद्र आदि उपलब्ध होंगे। विभिन्न राज्यों से आने वाले यात्री बस अड्डे पर उतरकर ऑटोमेटेड पैसैंजर मूवर या मेट्रो में बैठकर एयरपोर्ट पहुंच सकेंगे।

एसआईटी ने बस से भेजी मुआवजे की एक हजार फाइलें, अब मेरठ में होगी जांच ; सुको में सुनवाई से पहले सरकार को देनी है रिपोर्ट

नईदिल्ली, एजेंसी। एसआईटी ने मुआवजे से जुड़ी जांच तेज कर दी है। इसी कड़ी में प्राधिकरण ने बुधवार को करीब एक हजार फाइलों को बस के जरिए मेरठ भेजा। अब एसआईटी के सदस्य मेरठ में बैठकर फाइलों की और गहनता से जांच करेंगे। उच्चतम न्यायालय के आदेश पर एसआईटी बीते 10-15 सालों में बांटे गए मुआवजा प्रकरणों की जांच कर रही है। करीब 20 दिन पहले एसआईटी के चेयरमैन की अध्यक्षता में समिति ने नोएडा प्राधिकरण आकर जांच की थी। बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के चेयरमैन हेमंत राव को एसआईटी का हेड बनाया गया है। उनके साथ सदस्य के रूप में एडीजी मेरठ राजीव सभरवाल एवं मेरठ मंडल की आयुक्त सेल्वा कुमारी जे शामिल हैं। इस महीने के शुरुआत में करीब तीन दिन तक प्राधिकरण दफ्तर में रहकर फाइलों को खंगाला गया। अब एक बार फिर टीम ने प्राधिकरण आकर जांच की। सोमवार और मंगलवार को प्राधिकरण में ही रहकर टीम ने जांच की। एसआईटी की टीम बुधवार को प्राधिकरण दफ्तर नहीं आई, लेकिन फाइलों को मेरठ मंगाया। दोपहर करीब साढ़े बारह बजे मिनी बस के जरिए पुलिस सुरक्षा में अलग-अलग बक्सों में करीब एक हजार फाइलें मेरठ भेजी गईं। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इन फाइलों की गहनता से जांच करने के बाद एसआईटी इनको लौटा देगी। न्यायालय के आदेश पर या जिन किसानों के मामले न्यायालय में चल रहे हैं, ऐसे करीब 1500 मामलों की फाइलें भेजी गई हैं। इन फाइलों की जांच एसआईटी प्राथमिकता पर कर रही है। मुआवजा प्रकरण से जुड़े मामले में अब 18 जनवरी को उच्चतम न्यायालय में सुनवाई होनी है। इससे पहले एसआईटी शासन को रिपोर्ट सौंप देगी। शासन न्यायालय में रिपोर्ट जमा करेगा। सूत्रों ने बताया कि मुआवजा वितरण में वर्ष 2015-16 के दौरान सबसे ज्यादा गड़बड़ी हुई। ऐसे में एसआईटी ने भी इसी साल की फाइलों की गहनता से जांच कर रही है। गेझा तिलताबाद में इसी दौरान गलत तरीके से 89 करोड़ रुपये का मुआवजा बांटने में गड़बड़ी का खुलासा हो चुका है। अब तक गेझा गांव से ही जुड़े हुए 11 प्रकरण सामने सामने आ चुके हैं। इन मामलों में प्राधिकरण केस दर्ज करा चुका है। नोएडा के गांवों में मुआवजा बांटने में गड़बड़ी का सबसे पहले खुलासा वर्ष 2021 में गेझा तिलपताबाद गांव में हुआ था। इसके बाद प्राधिकरण ने अपने दो अधिकारियों और किसान के खिलाफ कोतवाली सेक्टर-20 में मामला दर्ज कराया था।

विपश्यना के लिए होशियारपुर पहुंचे केजरीवाल; टीवी, मोबाइल से रहेंगे दूर

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा 21 दिसंबर को पूछताछ के लिए तलब किए जाने के बीच बुधवार को 10 दिनों के लिए विपश्यना करने के लिए होशियारपुर पहुंचे। केजरीवाल होशियारपुर से करीब 11 किलोमीटर दूर आनंदगढ़ में धम्म धजा विपश्यना केंद्र पहुंचे। ऐसे में जब ईडी ने कथित शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में पूछताछ के लिए उनको नया समन जारी किया है, वह बुधवार को पूर्व निर्धारित ध्यान पाठ्यक्रम के लिए करीब डेढ़ बजे रवाना हो गये।

पहली बार पंजाब में पड़ाव: यह पहली बार है कि आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक केजरीवाल पंजाब में विपश्यना करेंगे। नियमित रूप से विपश्यना करने वाले केजरीवाल पहले जयपुर, नागपुर, बेंगलुरु में विपश्यना का अभ्यास कर चुके हैं।

सुबह 4 बजे से रात 9:30 बजे तक सख्त दिनचर्या : केजरीवाल सुबह 4 बजे से शुरू होकर रात 9:30 बजे तक सख्त दैनिक दिनचर्या का पालन करेंगे। वह साधारण भोजन लेंगे। उनको दोपहर के बाद भोजन की अनुमति नहीं होगी। उनके कमरे में एक साधारण बिस्तर होगा।

सरकारी काम-काज से रहेंगे दूर: इस विपश्यना अभ्यास के दौरान केजरीवाल किसी भी सरकारी दायित्व से दूर रहेंगे तथा वह केंद्र के नियमों का पालन करेंगे जिनमें मोबाइल , इंटरनेट, टेलीविजन और अखबारों से दूर रहना भी शामिल है।

एक दूसरे से भी बातचीत नहीं करेंगे: प्रवक्ता ने बताया कि प्रतिभागियों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने से प्रतिबंधित किया गया है। संचार को उनके प्रशिक्षकों के साथ विशिष्ट अंतराल तक ही सीमित रखा गया है।

क्या है विपश्यना?: विपश्यना एक प्राचीन भारतीय ध्यान विधि है जिसमें साधक अपनी मानसिक स्वास्थ्य के लिए लंबे समय तक हर तरह के संचार से दूर रहते हैं। केजरीवाल रात 8 बजे शुरू होने वाले 10 दिवसीय माइंडफुलनेस मेडिटेशन रिट्रीट की शुरुआत करेंगे। धम्म धजा विपश्यना ध्यान केंद्र के एक प्रवक्ता ने कहा कि विपश्यना सदियों पुरानी ??गैर-सांप्रदायिक ध्यान विधि है जिसका उद्देश्य मानसिक अशुद्धियों को दूर करना और मानसिक स्वास्थ्य लाभ करना है।

ऐसे होती है मन की शुद्धि: विपश्यना पाठ्यक्रम की अनुशासन संहिता की आधारशिला में नैतिक आचरण (सिला) शामिल है, जिससे मन की एकाग्रता का विकास होता है और अंतर्दृष्टि के ज्ञान से मन की शुद्धि होती है।

ईडी के समन पर क्या रहेगा रुख?: आम आदमी पार्टी ने मंगलवार को ईडी के समन के समय पर यह कहते हुए प्रश्न उठाया था कि पार्टी के वकील नोटिस का अध्ययन कर रहे हैं तथा कानून सम्मत कदम उठाये जाएंगे। केजरीवाल का विपश्यना पूर्व निर्धारित है और इसके बारे में सभी को पता है। इससे पहले केजरीवाल को दो नवंबर को ईडी ने तलब किया था लेकिन वह नोटिस को गैर कानूनी और राजनीति से प्रेरित बताकर ईडी के सामने पूछताछ के लिए नहीं पेश हुए थे।

अब स्पा सेंटर और देह व्यापार में लिप्त लोगों पर लगेगा गैंगस्टर एक्ट

नईदिल्ली, एजेंसी। स्पा सेंटर संचालकों और देह व्यापार में लिप्त लोगों पर शिकंजा कसने के लिए गाजियाबाद पुलिस ने उनके खिलाफ निरोधात्मक कार्रवाई का फैसला लिया है। कानून के जानकारों से रायशुमारी के बाद इस तरह के अपराध में लिप्त लोगों पर गैंगस्टर ऐक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने गैंगस्टर ऐक्ट लगाने के लिए इस साल के 14 मामलों में शामिल मिले 123 लोगों को चिह्नित किया है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि दिल्ली से नजदीकी और आर्थिक संपन्नता के चलते गाजियाबाद में स्पा सेंटर और देह व्यापार के अड्डे बड़े पैमाने पर संचालित हैं। आमतौर पर पुलिस की मिलीभगत से इन गोरखधंधों के फलने-फूलने का आरोप लगता है। अधिकारियों के संज्ञान में आने पर पुलिस कार्रवाई भी करती है तो सात साल से कम सजा होने के कारण आरोपी या तो जेल जाने से बच जाते हैं या फिर चंद दिनों में उन्हें जमानत मिल जाती है। इससे स्पा सेंटर संचालक और देह व्यापार में लिप्त आरोपी फिर से काम में जुट जाते हैं।

अधिकारियों के मुताबिक, आदतन देह व्यापार तथा स्पा सेंटर संचालित करने के चलते पुलिस ने अब ऐसे लोगों पर सख्ती बरतते हुए गैंगस्टर एक्ट लगाने का फैसला लिया है। अधिकारियों का कहना है कि गाजियाबाद में इस तरह के अपराध में लिप्त लोगों पर पूर्व में कभी भी गैंगस्टर की कार्रवाई नहीं हुई है।

लंबे समय तक जेल में रहेंगे, संपत्ति जब्त होगी: इस साल स्पा सेंटर तथा देह व्यापार के भंडाफोड़ के 14 मामले सामने आए हैं। सर्वाधिक नौ मामले ट्रांस हिंडन जोन में सामने आए, जबकि सिटी जोन में तीन तथा ग्रामीण जोन में दो मामले सामने आए। इनमें 123 आरोपी शामिल मिले। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक स्पा सेंटर तथा देह व्यापार में लिप्त लोगों पर गैंगस्टर लगाकर उन्हें लंबे समय तक जेल में रखा जाएगा तथा आरोपियों की संपत्ति कुर्क की जाएगी।

90 सेकंड पहले एग्जाम खत्म करने पर केस

साउथ कोरिया में कॉलेज एडमिशन के लिए हुई थी परीक्षा, मुकदमा हारी तो भारी जुर्माना चुकाएगी

सियोल , एजेंसी। साउथ कोरिया में कॉलेज एडमिशन के लिए एंट्रेंस एग्जाम देने वाले स्टूडेंट्स ने सरकार पर केस कर दिया है। इन स्टूडेंट्स का आरोप है कि उनका एग्जाम तय वक्त से 90 सेकंड पहले ही खत्म कर दिया गया और इसकी जिम्मेदार सरकार है। बहरहाल, अगर कोर्ट में छात्रों के आरोप साबित होते हैं और वो इस गलती की जिम्मेदार साबित होती है तो उसे हर छात्र को 20 लाख वॉन (15 हजार 400 डॉलर या 12 लाख 77 हजार रुपए) देने होंगे। यह एक स्टूडेंट की एक साल की ट्यूशन फीस के बराबर है। 'द टेलिग्राफ' की रिपोर्ट के मुताबिक- स्टूडेंट्स इसे सरकार की बड़ी लापरवाही बता रहे हैं, क्योंकि इसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। छात्रों के वकील ने कहा- इस गलती का एक नुकसान ये भी है कि इसका नुकसान बाकी छात्रों को भी उठाना पड़ेगा।

साउथ कोरिया में कॉलेज एडमिशन आसान नहीं है। इसके लिए मुश्किल एंट्रेंस एग्जाम होता है। इसे लोकल लैंग्वेज में 'सुनेउंग' कहा जाता है। इस एग्जाम के लिए कुल 8 घंटे दिए जाते हैं। इस दौरान उन्हें कई एग्जाम पेपर्स सॉल्व करने होते हैं। ये एग्जाम पेपर्स अलग-अलग सब्जेक्ट के होते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक- सुनेउंग, दरहकीकत दुनिया की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक है और इसके लिए स्टूडेंट्स को लंबे वक्त तक तैयारी करनी पड़ती है। लिहाजा, उनके लिए हर मिनट बेहद कीमती होता है।

हमास ने की बंधकों की रिहाई से पहले युद्ध पर पूरी तरह रोक लगाने की मांग

तेल अवीव, एजेंसी। इजराइल के साथ युद्धरत आतंकी समूह हमास कथित तौर पर अपने बंधकों की रिहाई के लिए आंशिक युद्धविराम से पीछे हट गया है। इज़राइल के प्रधान मंत्री कार्यालय (पीएमओ) के सूत्रों के अनुसार, काहिरा में वरिष्ठ हमास नेताओं की एक प्रतिनिधित्वि कर रहे हमास के राजनीतिक प्रमुख, इस्माइल हानियेह ने मिस्र के वार्ताकारों को सूचित किया है कि उनका संगठन गाजा पट्टी में केवल युद्ध के पूर्ण अंत के लिए ही सहमत होगा। इजराइल युद्ध को पूरी तरह से बंद करने पर असहमत है और इसके कारण हमास द्वारा बंधक बनाए गए लगभग 120 बंधकों का भविष्य अधर में है। इस्माइल हानियेह ने वार्ताकारों से कहा है कि वह युद्ध रोकने के लिए काहिरा में हैं और अंशकालिक युद्धविराम और बंधकों की रिहाई संभव नहीं है।

गौरतलब है कि इज़राइल ने हमास की हिरासत में 40 बंधकों की रिहाई के लिए लड़ाई में एक सप्ताह के संघर्ष विराम पर सहमति व्यक्त की थी, इसमें महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग शामिल थे, जो बीमार हैं और उन्हें दवा की जरूरत है। इज़रायल ने इज़रायल की जेलों में बंद फ़िलिस्तीनी कैदियों को रिहा करने पर भी सहमति व्यक्त की है और यहां कहा था कि जो फ़िलिस्तीनी अधिक गंभीर अपराधों के लिए सलाखों के पीछे हैं, उन्हें बंधकों की अदला-बदली के लिए छोड़ा जा सकता है। इज़राइल व हमास के बीच 7 अक्टूबर को शुरू हुए युद्ध के दौरान 24 नवंबर से 1 दिसंबर तक एक सप्ताह के युद्धविराम में 105 बंधकों को रिहा किया गया, जिन्हें 7 अक्टूबर को दक्षिण इज़राइल में तबाही और नरसंहार के बाद हमास ने पकड़ लिया था।

हम रिश्ते बेहतर बनाना चाहते लेकिन , जस्टिन ट्रूडो बोले- अमेरिका की वजह से भारत के रिश्तों में आया बदलाव

ओटावा , एजेंसी। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने कहा है कि भारत और कनाडा के रिश्तों में अचानक बदलाव देखा जा रहा है। यह बदलाव तब आया जब अमेरिका ने भारत पर आरोप लगाए कि अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या करने के लिए भारत सरकार के कर्मचारी ने एक व्यक्ति से संपर्क किया था।

भारत में सहयोग करने की भावना आ चुकी है: ट्रूडो: जस्टिन ट्रूडो कनाडा के न्यूज चैनल सीबीसी न्यूज को साक्षात्कार देते हुए कहा कि शायद भारत को यह अहसास हो चुका है कि वो हमेशा आक्रमक रुख अख्तियार नहीं कर सकते। इसलिए भारत में सहयोग करने की भावना आ चुकी है। ट्रूडो का मानना है कि अमेरिका के कड़े रुख की वजह से भारत में यह बदलाव आया है।

ट्रूडो ने आगे कहा कि हम भारत के साथ टकराव नहीं चाहते और रिश्ते बेहतर बनाना चाहते हैं। हम इंडो-पैसिफिक रणनीति को आगे बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन कनाडा के लिए लोगों के अधिकारों, लोगों की सुरक्षा और कानून के शासन के लिए खड़ा होना हमारा कर्तव्य है।

कनाडा ने भारत पर लगाया हरदीप सिंह निज्जर की हत्या का आरोप: दरअसल, पिछले कुछ महीनों से कनाडा और भारत के रिश्तों में खटास बनी हुई है। कनाडा ने भारत पर आरोप लगाया है कि खालिस्तान समर्थक नेता हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के पीछे भारत के एजेंसियों का हाथ है। हालांकि, कनाडा के पास इस आरोप को लेकर कोई ठोस साक्ष्य मौजूद नहीं है।

वहीं, भारत का कहना है कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने हमेशा खालिस्तानी नेताओं को कनाडा में पनाह दी है और खालिस्तानी विचारधाराओं को फैलाने में कनाडा मदद भी कर रहा है। वहीं, कुछ दिनों पहले अमेरिका ने भारत पर यह आरोप लगाया कि अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या करने के लिए भारत सरकार के कर्मचारी ने एक व्यक्ति से संपर्क किया था।

ट्रूडो ने निज्जर हत्याकांड के सिलसिले

में साक्ष्य देने की कोई बात नहीं कही: कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को उम्मीद है कि अमेरिका में अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश का पता चलने के बाद कनाडाई नागरिक हरदीप सिंह निज्जर की हत्या की जांच को गति मिलेगी। निज्जर की हत्या के मामले की जांच में भारत सहयोग करेगा। साक्षात्कार में उन्होंने भारत को निज्जर हत्याकांड के सिलसिले में साक्ष्य देने की कोई बात नहीं कही है।

ट्रूडो ने कहा, पन्नू मामले में अमेरिका के कड़े रुख से भारतीय एजेंसियां जांच में सहयोग देने को तैयार हुई हैं। उन्हें उम्मीद है कि अब निज्जर हत्याकांड की जांच में कनाडा को भी वैसा ही सहयोग मिलेगा। इससे मामले के असली अपराधी दंडित किए जा सकेंगे।

भारत-कनाडा के रिश्ते कब बिगड़े: ट्रूडो ने 18 सितंबर को कहा था कि कनाडा की खुफिया एजेंसियों को विश्वसनीय साक्ष्य मिले हैं कि निज्जर हत्याकांड में भारत सरकार के एजेंट शामिल थे। भारत में हुई कई आपराधिक घटनाओं में शामिल निज्जर की कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया शहर में जून में गोली मारकर हत्या हुई थी। भारत को हत्याकांड से संबंधित साक्ष्य दिए बगैर ट्रूडो के इस सार्वजनिक बयान से भारत और कनाडा के संबंधों में तनाव आ गया था। भारत ने ट्रूडो के बयान पर कड़ा विरोध जताते हुए कनाडा के नई दिल्ली स्थित दूतावास में तैनात अतिरिक्त राजनयिकों को निष्कासित कर दिया था।

इजरायल-हमास युद्ध: गाजा में फिलीस्तीनियों की मौत का आंकड़ा 20 हजार पहुंचा

गाजा, एजेंसी। हमास द्वारा संचालित सरकारी मीडिया कार्यालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार, 7 अक्टूबर से गाजा पट्टी में इजरायली हमलों में मरने वाले फिलिस्तीनियों की संख्या 20 हजार तक पहुंच गई है। समाचार एजेंसी शन्हिुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को बयान में कहा गया कि मृतकों में 8,000 से अधिक बच्चे और 6,200 महिलाएं शामिल हैं, जबकि 52,000 से अधिक लोग घायल हुए हैं और 6,700 अन्य लापता हैं। इसमें कहा गया है कि इजरायली हमलों में कुल 310 चिकित्सा कर्मी, 35 नागरिक सुरक्षा कर्मी और 97 पत्रकार मारे गए। इस बीच, फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय ने बुधवार को कहा कि वेस्ट बैंक के हेब्रोन और बेथलहम शहरों में इजरायली सैनिकों के साथ झड़प में दो फिलिस्तीनी मारे गए। आधिकारिक फ़िलिस्तीनी समाचार एजेंसी डब्ल्यूएएफए के अनुसार, 7 अक्टूबर को इज़रायली-फ़िलिस्तीनी संघर्ष का यह नया दौर शुरू होने के बाद से कब्जे वाले क्षेत्र में इज़रायली गोलीबारी से मरने वाले फ़िलिस्तीनियों की संख्या बढ़कर 303 हो गई है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129